खुशी, निर्विघ्न स्थिति और निर्दोष दृष्टि

द्वारा

सम्पूर्णता एवं प्रसन्नता

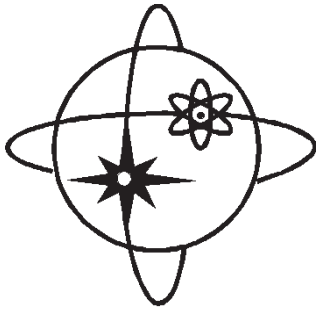

शिव भगवानुवाच

खुशी परमात्म-वर्सा है

शरीर चला जाये परन्तु खुशी न जाये

निर्विघ्न स्थिति खुशी का मूलाधार है

अटल सत्य

सतयुग में आत्मा सतोप्रधान स्थिति में सतोप्रधान प्रकृति के सतोप्रधान सुख भोगती है, उससे भी आत्मिक शक्ति और आत्मा का संगम पर जमा किया हुआ पुण्य का खाता घटता है, फिर द्वापर से जब आत्मा देहाभिमान के वश रजो-तमो स्थिति में आती है तो रजो-तमो प्रकृति का रजो-तमो सुख भोगती है और विषय-सुख में प्रवृत्त होती है तो आत्मिक शक्ति और जमा का खाता तीव्रता से घटता है। फिर जब आत्मा विकारों के वशीभूत प्रकृति के साधन-सम्पत्ति का दुरुपयोग करता है या अनावश्यक और अनाधिकृत रूप से उपभोग करता है, विकारों के वशीभूत आत्माओं से साथ दुर्व्यवहार करता है तो आत्मा पर पाप का बोझ चढ़ता है, जो आत्मा को दुखी-अशान्त बना देता है।

फिर जब कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग पर आत्मा को परमपिता परमात्मा से यथार्थ ज्ञान मिलता है और आत्मा परमात्मा के साथ योगयुक्त होकर संगमयुगी ईश्वरीय प्राप्तियों और अनुभूतियों में रमण करते हुए अतीन्द्रिय सुख अर्थात् परमानन्द के अनुभव में रहती है तो पापों का बोझ कम होता जाता है और उस स्थिति में आत्मा जो ईश्वरीय सेवा करती है, उससे पुण्य का खाता जमा होता जाता है, जिससे आत्मा सम्पन्नता और सम्पूर्णता को प्राप्त करती है। अतीन्द्रिय सुख अर्थात् परमानन्द के अनुभव की स्थिति में आत्मा से जो वृत्ति और वायब्रेशन पैदा होता है, उससे जड़-जंगम-चेतन प्रकृति पावन बनकर अपने सतोप्रधान सम्पन्न स्वरूप को प्राप्त करती है, जिससे आत्मा का पुण्य का खाता जमा होता है, जिसके आधार पर ही सतयुग-त्रेता में आत्मा को जड़-जंगम-चेतन प्रकृति से सुख प्राप्त होता है।

अभी हमारा परम कर्तव्य है कि हम प्रकृति प्रदत्त साधन-सम्पत्ति का कम से कम उपभोग करें अर्थात् उतना ही उपभोग करें, जिससे हमारी उपयोगिता या कार्य-क्षमता बढ़ती रहे अथवा स्थिर रहे और संगम पर परमात्मा से प्राप्त साधनों अर्थात् ज्ञान-गुण-शक्तियों और अनुभूतियों के द्वारा परम-शक्ति, परम-शान्ति, परमानन्द अनुभव करते रहें और सर्वात्माओं को कराते रहें।

परम गौरवमय

''अनादि स्वरूप में परमधाम में बाप के साथ-साथ चमकती हुई आत्मा हैं। बाप के साथ के कारण विशेष चमकती हुई दिखाई दे रही हैं।... सृष्टि-चक्र के आदि अर्थात् सतयुग आदि में अपना स्वरूप देखो, कितना श्रेष्ठ सुख स्वरूप है, कितना सर्व प्राप्ति स्वरूप है।... फिर नीचे आओ तो द्वापर में भी आपका स्वमान पूज्य का है अर्थात् पूज्य स्वरूप है। ... सभी कितनी भावना से कायदे प्रमाण पूजा करते हैं। ऐसे कायदे प्रमाण पूजा और किसी की भी नहीं होती है।... संगम पर स्वयं भगवान आपकी जीवन में पवित्रता की विशेषता भरता है, जो पवित्रता आपके सर्व अविनाशी सुखों की खान है। (फिर रिटर्न जर्नी अर्थात् फरिश्ता स्वरूप)''

अ.बापदादा 2.02.12

वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुगी जीवन परम गौरवमय (Graceful) है। अभी बाबा ने हमको हमारे तीनों कालों और तीनों लोकों के गौरवमय स्वरूपों की स्मृति दिलाई है। उन तीनों लोकों और तीनों कालों की यथार्थ अनुभूति अभी ही आत्मा को होती है और उन तीनों लोकों और तीनों कालों की गौरवमय स्थिति का आधार अभी संगमयुग के गौरवमय कर्तव्य ही हैं। जो आत्मा उन गौरवमय कर्तव्यों में तन-मन-धन, मन्सा-वाचा-कर्मणा तत्पर रहती है, उसको उन गौरवमय स्थितियों का अनुभव अवश्य होता है।

खुशी, निर्विघ्न स्थिति और निर्दोष दृष्टि

प्रस्तावना

खुशी संगमयुग पर परमात्मा से प्राप्त विशेष खज़ाना है। परमपिता परमात्मा से मिलने से ही आत्मा को खुशी होती है परन्तु वह खुशी स्थाई रहे, उसके लिए बाबा ने हमको ज्ञान का खज़ाना दिया है और अनेक प्रकार के विधि-विधान बताये हैं, जिनको अपनाने से हम सदा खुश रह सकते हैं। बाबा ने हमको खुशी गायब होने के कारणों और उनका निवारण भी बताया है। ये सब बातें हमारी बुद्धि में जागृत रहें तो हम सहज खुश रह सकते हैं, इसके लिए बाबा ने हमको जो विधि-विधान बताये हैं, उनको चिन्तन कर, उनकी धारणा करना हर आत्मा का अपना कर्तव्य है और जो जितनी धारणा करता है, वह उतना खुश रह सकता है और दूसरों को भी खुशी बाँट सकता है। खुश रहना और अन्य आत्माओं को खुशी बाँटना ब्राह्मण जीवन का परम कर्तव्य है।

खुशी, निर्विघ्न स्थिति और निर्दोष दृष्टि

विषय सूची

विषय सूची पेज नम्बर

खुशी 9

Q. संगमयुग पर सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा के बनने के बाद भी खुशी न होने या कम होने के कारण क्या हैं?

निवारण अर्थात् सदा खुश रहने के लिए धारणा

खुशी-ग़म, सुख-दुख और मुदिता

खुशी-ग़म, सुख-दुख और परमात्मा 17

Q. क्या परमात्मा को खुशी होती है, यदि होती है तो उसका आधार क्या है?

सतयुग, कलियुग और संगमयुग की खुशी

Q. सतयुग-त्रेता में आत्मा को खुशी होती है और यदि होती है तो उसका आधार क्या होता है?

निर्विघ्न स्थिति

निर्विघ्न स्थिति और परमात्मा

विघ्नों का कारण और निवारण 20

विघ्नों का कारण

विघ्नरूप स्थिति और विघ्न

विघ्नों का निवारण

Q. विघ्न, कर्मभोग, कर्म-बन्धन और आपदा में क्या अन्तर है? बाबा का निर्विघ्न बनने का भाव क्या है? निर्विघ्न बनने का यथार्थ पुरुषार्थ क्या है?

विघ्नों के निवारण का विवेकात्मक और भावात्मक दृष्टिकोण

खुशी, निर्विघ्न स्थिति और निर्दोष दृष्टि 27

निर्विघ्न स्थिति और निर्दोष दृष्टि का सम्बन्ध

Q. बाबा ने कहा - ज्ञान, योग, धारणा को विशेष खज़ाना और संगम के समय को सबसे श्रेष्ठ खज़ाना कहा है, तो इनके गुण-धर्म और विशेषतायें क्या-क्या हैं, जिससे ये विशेष और सर्वश्रेष्ठ खज़ाने हैं? संगमयुग और अविनाशी खुशी

सदा खुशी, आदर्श और यथार्थ, भावना और विवेक का सम्बन्ध

Q. अब प्रश्न है - खुश कौन रह सकता है और खुशी कौन बाँट सकता है?

खुशी और विनाश 34

Q. क्या खुशी और आनन्द विनाश के बाद सूक्ष्मवतन में अनुभव होगी और जो वर्तमान में खुशी का अनुभव नहीं कर रहा है, वह विनाश के बाद खुशी का अनुभव करेगा?

Q. क्या कोई आत्मा अपने पिछले जन्मों के विकर्मों के हिसाब-किताब को चुक्ता किये बिना सतयुग में जा सकेगा?

Q. आत्मिक स्वरूप परम-शान्त, परम-शक्ति, सम्पन्न है, अव्यक्त स्वरूप परमात्मा का साथ परमानन्दमय है, विश्व-नाटक परम सुखमय है, फिर भी जीवन में खुशी क्यों गायब हो जाती है। खुशी गायब न हो, उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है?

निर्दोष-दृष्टि और निर्संकल्प, निर्भय, निर्वैर, निर्विघ्न स्थिति का सम्बन्ध

पुरुषार्थ, प्राप्तियाँ और अनुभूतियाँ 37

ड्रामा के राज़ 46

खुशी, निर्विघ्न स्थिति और निर्दोष दृष्टि

शिव भगवानुवाच -

खुशी परमात्म-वर्सा है, शरीर चला जाये परन्तु खुशी न जाये।

''तुम मेरे बने गोया विश्व के मालिक बनें। तुम जानते हो शिवबाबा स्वर्ग का रचयिता है। अभी हम शिवबाबा के बच्चे बने हैं, भविष्य में स्वर्ग के मालिक बनेंगे। तो कितना खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। ... तुम यह भी जानते हो कि यह पुराना शरीर है, कर्मभोग भोगना पड़ता है। मम्मा-बाबा भी खुशी से कर्मभोग भोगते हैं, फिर भविष्य 21 जन्म कितना सुख मिलेगा।''

सा.बाबा 4.07.13 रिवा.

''टीचर अर्थात् फुल स्टॉप की स्थिति में स्थित। क्वेश्चन वाले प्रजा में आ जाते हैं। फुल-स्टॉप अर्थात् राजा। क्वेश्चन वाले को कब अतीन्द्रिय सुख नहीं हो सकता है। टीचर्स अर्थात् इन्वेन्टरबुद्धि, सिर्फ प्रोग्राम प्रमाण चलने वाले नहीं, इन्वेन्शन करने वाली। क्या ऐसी नई बात निकालें, जो सहज और ज्यादा से ज्यादा को सन्देश पहुँच जाये। यह इन्वेन्शन हर एक को निकालनी है।''

अ.बापदादा 28.7.13 रिवा.

''आज बापदादा अपने खज़ानों से सम्पन्न बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। आदि से लेकर कितने खज़ाने मिले हैं। पहला खज़ाना ज्ञान का मिला, जिससे सभी बच्चे स्वयं भरपूर हो औरों को भी खज़ाने से भरपूर कर रहे हैं।... दूसरा खज़ाना है योग का खज़ाना, जिससे बहुत शक्तियाँ प्राप्त हुई हैं और तीसरा है धारणा का खज़ाना, जिससे बहुत-बहुत गुणों की प्राप्ति हुई है। लेकिन सबसे बड़े ते बड़ा खज़ाना है इस संगम के समय का खजाना। इसका महत्व बहुत बड़ा है।... तो सर्व खज़ानों से भरपूर हुए हो ना!''

अ.बापदादा 20.2.13

''हर एक बच्चे की सूरत में, मस्तक में खज़ानों के मालिकपन की झलक दिखाई देनी चाहिए। ... अभी जैसे समय आगे बढ़ेगा, वैसे हालतों के प्रमाण टेन्शन भी बढ़ेगा। तो आपके चेहरे उन्होंको खुश करेंगे। ऐसी सेवा करने के लिए हर एक बच्चे को अभी से तैयारी करनी है। खज़ाने कौन-कौन से हैं, जानते हो ना! विशेष खज़ाना है ज्ञान, योग, धारणा। ... वैसे सबसे श्रेष्ठ खज़ाना है आजकल का संगम

का समय। क्योंकि इस समय स्वयं बाप, बाप-टीचर-गुरु के सम्बन्ध में आये हुए हैं।''

अ.बापदादा 5.04.13

''आज सर्व प्राप्ति दाता, बापदादा अपने सर्व प्राप्ति स्वरूप बच्चों को देख रहे हैं। बापदादा द्वारा प्राप्तियाँ तो बहुत हुई हैं। ... वर्णन करते हो कि 'अप्राप्त नहीं कोई वस्तु इस ब्राह्मण जीवन में'। जिसको सर्व प्राप्तियाँ हैं, उसकी निशानी प्रत्यक्ष जीवन में क्या दिखाई देगी, वह जानते हो ना! सर्व प्राप्तियों की निशानी है - सदा उसके चेहरे और चलन में प्रसन्नता की पर्सनॉलिटी दिखाई देगी।''

अ.बापदादा 22.03.96

''सर्व प्राप्तियों की निशानी है प्रसन्नता की पर्सनॉलिटी, जिसको सन्तुष्टता भी कहते हैं। लेकिन आजकल चेहरे पर जो सदा प्रसन्नता की झलक देखने में आये, वह नहीं दिखाई देती है। ... प्राप्ति स्वरूप सदा प्रसन्नचित्त होंगे, उनको कभी भी किसी भी बात में क्वेश्चन नहीं होगा क्योंकि सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न हैं। क्यों-क्या, यह हलचल है। जो सम्पन्न होता है, उसमें हलचल नहीं होती है, जो खाली होता है, उसमें हलचल होती है।''

अ.बापदादा 22.03.96

''जो सम्पन्न होता है, उसमें हलचल नहीं होती है, जो खाली होता है, उसमें हलचल होती है। तो अपने आपसे पूछो कि सदा प्रसन्नचित्त रहती हूँ वा रहता हूँ? ... प्रसन्नता अगर कम होती है तो उसका कारण प्राप्ति कम और प्राप्ति कम का कारण, कोई न कोई इच्छा है। इच्छा का फाउण्डेशन ईष्या और अप्राप्ति है। बहुत सूक्ष्म इच्छायें अप्राप्ति के तरफ खींच लेती हैं।... प्रसन्नचित्त रहने से बहुत अच्छे अनुभव करेंगे।''

अ.बापदादा 22.03.96

''ये कोई दुनियावी बातें नहीं हैं। ये हैं ईश्वरीय बातें, जो खुद ईश्वर सुनाते हैं। जो खुद ही पुण्यात्मा नहीं बनेंगे, वे औरों को कैसे बनायेंगे। जो जितना साहूकार होता है, उतना उसको खुशी का पारा चढ़ता है। यह है ज्ञान धन जो बाप हमको देते हैं। ... यहाँ विनाशी धन की बात नहीं है। यहाँ है अविनाशी ज्ञान रत्नों की कमाई करना और कराना। इसमें पूछने की बात नहीं रहती है। पूछकर दान नहीं किया जाता है, करके दिखाना है।''

सा.बाबा 20.4.13 रिवा.

खुशी

खुशी ब्राह्मण जीवन की सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति है, इसलिए बाबा ने कहा है शरीर चला जाये परन्तु खुशी न जाये। अब इस ब्राह्मण जीवन की खुशी का आधार क्या है? खुशी का आधार है प्राप्तियाँ, अनुभूतियाँ, दुआयें और कमाई। संगमयुग पर जो ईश्वरीय प्राप्तियाँ हुई हैं या होती है, वे हमारी बुद्धि में सदा इमर्ज रहनी चाहिए क्योंकि यह संगमयुग ही सारे कल्प की प्राप्तियों का आधार है। बाबा से हमको क्या-क्या प्राप्तियाँ हुई हैं, उस पर विचार करें तो वे सतयुग की प्राप्तियों से भी महान और अधिक हैं। बाबा ने कहा है - सतयुग की प्राप्तियों की लिस्ट निकालो और संगमयुग की प्राप्तियों की लिस्ट निकालों तो संगमयुग की लिस्ट सतयुग की लिस्ट से कई गुणा लम्बी होगी।

''यहाँ तुम्हारा चेहरा हर्षितमुख होगा, तब वहाँ भी तुम सदा हर्षितमुख रहेंगे। बिरला मन्दिर में लक्ष्मी-नारायण को कितना हर्षितमुख दिखाते हैं। परन्तु वे उनको जानते नहीं कि वे कब आये थे। ... तुम जाकर उनको भी समझा सकते हो। भक्ति भी पहले सतोप्रधान, अव्यभिचारी थी, बाद में रजो, तमो और तमोप्रधान बनी है। अभी तो कितनों की भक्ति करते रहते हैं।'' सा.बाबा 1.07.13 रिवा.

बाबा ने कहा है - तुमको अनुभव की अथॉरिटी बनना है अर्थात् बाबा से जो प्राप्तियाँ हुई हैं, उनके अनुभवी स्वरूप बनना है। अनुभव की अथॉरिटी सबसे श्रेष्ठ अथॉरिटी है, जिसके आधार पर ही हम उन प्राप्तियों का सुख, खुशी और नशा स्वयं अनुभव करेंगे और किसको भी उन प्राप्तियों की अनुभूति करा सकते हैं। लौकिक दुनिया में भी अथॉरिटी से खुशी और नशा रहता है।

''उनके आगे आप सभी की ऑलमाइटी अथॉरिटी बेहद की और अविनाशी है। ऐसी अथॉरिटी में सदा रहते हुए हर कर्म करते हो? बापदादा हर बच्चे को बेहद का मालिक बनाते हैं। बेहद के मालिकपन में बेहद की खुशी रहती है। अपने खुशी के खज़ाने को जानते हो ना! बाप बच्चों के भाग्य की रेखायें देखते हुए हर्षित होते हैं कि ऐसा श्रेष्ठ भाग्य बनाने वाले कोटों में कोई, कोई में भी कोई आत्मायें हैं। बच्चे भी अपने भाग्य को देख हर्षित होते हैं!'' अ.बापदादा 31.01.77

आत्म को जितनी प्राप्तियाँ और अनुभूतियाँ अभी संगमयुग पर हैं, उतनी

प्राप्तियाँ और अनुभूतियाँ सतयुग में भी नहीं होंगी। सतयुग-त्रेता में भल स्थूल साधनों और सुविधाओं की भरमार होगी, परन्तु आत्मा की और विश्व की उतरती कला होगी, जिसका भी उनको ज्ञान या आभास नहीं होगा। इसलिए ही बाबा हमको अपने पाँच गौरवमय (Graceful) स्वरूपों अर्थात् परमधाम में चमकते हुए सितारे, सतयुग-त्रेता में देवता स्वरूप, भक्ति मार्ग के पूज्य स्वरूप, संगम के ब्राह्मण स्वरूप और सूक्ष्मवतन के फरिश्ता स्वरूप की याद दिलाते हैं। इन पाँचों स्वरूपों के विषय में विचार करें तो उनकी यथार्थ अनुभूति अभी संगम पर इस ब्राह्मण स्वरूप में ही होती है। अभी ही हमको ईश्वरीय गोद का सुख मिलता है, ज्ञान सागर बाप से ज्ञान का खज़ाना मिलता है, ईश्वरीय परिवार में एक-दूसरे से अनादि-आदि परिचय के साथ मिलते हैं।

''ऑलमाइटी अथॉरिटी के बच्चे बनने से अर्थात् अलौकिक जन्म होते ही ताज, तख्त, तिलक जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में प्राप्त होता है। ऐसे अपने भाग्य के चमकते हुए सितारे को देखते हो? अगर सदा अपने भाग्य और भाग्य विधाता के गुण गाते रहो तो सदा गुण सम्पन्न बन ही जायेंगे। जब तक खुद के प्रति कोई न कोई प्रश्न है, तब तक दूसरों को प्रसन्न नहीं कर सकेंगे। अपने प्रति कोई इच्छा न रख अन्य आत्माओं की इच्छायें पूर्ण करने का सोचो तो स्वयं स्वत: ही सम्पन्न बन जायेंगे।'' अ.बापदादा 31.01.77

संगमयुगी कर्तव्य करने से भी आत्मा को खुशी होती है। संगमयुग पर ही आत्मा पुण्य कर्म करती है, और तो सारे कल्प में पुण्य कर्म होता ही नहीं है। सतयुग-त्रेता भल पुण्यात्माओं की दुनिया है परन्तु वहाँ कोई आत्मा पुण्य कर्म नहीं करती है।

पुण्य कर्म संगम पर ही होता है, जब आत्मा इस ईश्वरीय ज्ञान को धारण कर अन्य आत्माओं को भी रास्ता दिखाती है, पुण्य कर्म करना सिखाती है। द्वापर से भल जो आत्मायें ऊपर से आती हैं, वे पावन होती हैं परन्तु पुण्यात्मा नहीं क्योंकि उनके किसी कर्म से आत्माओं की या विश्व की चढ़ती कला नहीं होती है। भक्ति मार्ग में जो दान-पुण्य करते हैं, उसका अल्पकाल का फल खुशी के रूप में मिलता है।

''मन में दुख की लहर आना भी रोना हुआ। जब बाप से सम्बन्ध टूट जाता है, तब दुख की लहर आती है। ... मन के रोने से भी बाप से विमुख स्वत: ही हो जाते हैं। ... अथक का अर्थ ही है, जिसमें आलस्य नहीं हो। तो सदा अथक हो रहना अर्थात् सदा बाप के सम्मुख रहना तो सदा खुश रहेंगे। ... शक्ति और खुशी प्राप्त करने का आधार है श्रेष्ठ कर्म। श्रेष्ठ कर्म तभी होते हैं जब कर्म और योग साथ-साथ हो।'' अ.बापदादा 6.02.77 पार्टी

''अभी भल किसके पास कितनी भी धन-सम्पत्ति हो, फिर भी पाप जरूर होंगे क्योंकि अभी माया का राज्य है। यह है पापात्माओं की दुनिया, इसमें कोई पुण्यात्मा होती नहीं है। पुण्यात्माओं की दुनिया में फिर कोई पापात्मा नहीं होता है। ... पावन देवी-देवताओं को पतित दुनिया के राजा लोग भी पूजते हैं क्योंकि समझते हैं, वे सर्वगुण सम्पन्न पावन थे।'' सा.बाबा 1.08.13 रिवा.

अब प्रश्न है कि जो आत्मायें ऊपर से नई आती हैं, वे पापात्मा हैं या पुण्यात्मा? अभी उन्होंने कोई पाप कर्म नहीं किया, इसलिए वे पापात्मा नहीं कहे जा सकते परन्तु उन्होंने कोई पुण्य कर्म भी नहीं किया क्योंकि यह उतरती कला का समय है और उन्होंने संगम पर भी कोई पुण्य कर्म भी नहीं किया क्योंकि संगम पर पुण्य कर्म करने वाले स्वर्ग में अवश्य आते हैं, इसलिए वे पुण्यात्मा भी नहीं है। वे आत्मायें पावन आत्मायें हैं। पुण्य का काम परमात्मा की श्रीमत द्वारा ब्राह्मण ही करते हैं, जिससे वे पुण्यात्माओं की दुनिया स्वर्ग में जरूर आते हैं।

यह संगमयुग ही सारे कल्प की कमाई का समय है और तो सारे कल्प आत्मा की उतरती कला ही होती है अर्थात् अभी जो कमाया, वह खाते रहते हैं। द्वापर से भल कर्म और फल का विधि-विधान चलता है परन्तु वहाँ भी आत्मा की उतरती कला ही होती है और विश्व में सुख-साधनों की भी गिरती कला होती है अर्थात् तमोप्रधानता बढ़ने के साथ साधन भी दुखदाई बनते जाते हैं। आत्मा और प्रकृति की चढ़ती कला अभी ही होती है।

''अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो तो खुशी का पारा चढ़ा रहेगा। बाप को याद करने से बड़ी भारी कमाई है। सारी रात बाप को याद करो, नींद को जीतने वाले बनो। कमाई होती है तो नींद भी नहीं आती है। ... तुमको नष्टोमोहा

बनकर एक बाप के साथ बुद्धि लगानी है तो तुम पक्के हो जायेंगे। बुद्धि में रखना है - हमको तो नये घर में जाना है, इस पुराने घर से क्या ममत्व रखें!''

सा.बाबा 1.07.13 रिवा.

''सवेरे तुम याद करेंगे तो वह याद पक्की हो जायेगी, उसका असर अच्छा रहेगा। बाबा बहुत करके रात को जागते रहते हैं। स्थूल काम में आने से माथा भारी हो जाता है, सूक्ष्म सर्विस में थकावट नहीं होती है। कमाई थोड़ेही थकायेगी, कमाई में तो और ही खुशी होगी। सवेरे-सवेरे उठकर याद करने से बहुत कमाई होती है।''

सा.बाबा 18.04.13 रिवा.

वर्तमान इस ईश्वरीय जीवन में सूक्ष्म ईश्वरीय प्राप्तियों का ही महत्व है। जो उनके आधार पर अपने को गौरवान्वित अनुभव करता है, वही सच्ची खुशी और अतीन्द्रिय सुख अनुभव करता है और उसका ही वह सुख दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहता है। जो भौतिक प्राप्तियों के आधार पर अपने को गौरवान्वित अनुभव करता है, वह अपने को धोखा देता है क्योंकि वे एक न एक दिन अवश्य ही हमको छोड़ देंगी या हमें उनको छोड़ देना होगा। स्थूल प्राप्तियों के आधार पर अपने को गौरवान्वित अनुभव करने वाले में अहंकार-हीनता की भावना अवश्य होती है। जब वह अपने से अधिक प्राप्तियों वाले को देखता है तो हीनता अनुभव करता है और जब अपने से कम प्राप्तियों वाले को देखता है तो अहंकार की भावना जागृत होती है।

खुश रहना भी एक श्रेष्ठ कर्म है, जिसके कारण जो वृत्ति और वायब्रेशन पैदा होता है, वह अन्य आत्माओं को भी खुशी में लाता है अर्थात् खुश रहने से भी सेवा होती है। खुश रहना भी कमाई का साधन है। ईश्वरीय प्राप्तियों के आधार पर खुश रहने वाला अन्य आत्माओं को भी ईश्वर की तरफ आकर्षित करता है अर्थात् वह भाग्यशाली बनकर अन्य आत्माओं को भी भाग्य बनाने की प्रेरणा देता है।

पुण्य का खाता जमा होने से खुशी होती है। संगमयुग पर जो आत्मा तन-मन-धन से ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनती है, उनको खुशी अवश्य होती है। जो जितना अधिक खाता जमा करता है, उसको उतनी अधिक खुशी होती है। ईश्वरीय सेवा से भी आत्माओं की दुआयें मिलती हैं, जो आत्मा को खुशी देती है। इसलिए

ही बाबा ने हमको सेवा का पाठ पढ़ाया है।

बापदादा की आज्ञा पालन करने से आत्मा की खुशी बढ़ती है क्योंकि जिसकी आज्ञा पालन करते हैं, उनकी दुआयें आत्मा को मिलती है, जो उसको खुशी प्रदान करती हैं और श्रीमत पर चलने से श्रेष्ठ कर्म होते हैं, जिससे आत्मा का श्रेष्ठ कर्मों का खाता जमा होता है, जिस जमा के खाते से आत्मा को खुशी होती है। दुनिया में भी बड़ों की आज्ञा पालन करने से उनकी दुआयें मिलती हैं, जो आत्मा को खुशी देती हैं परन्तु वह अल्पकाल की खुशी होती है। ऐसे ही किसको किसी बात में सहयोग करते हैं तो भी उसकी दुआयें मिलती हैं, जो अल्पकाल की खुशी देती हैं।

''जो सर्व खज़ानों से सम्पन्न होगा, वह सदा अतीन्द्रिय सुख में मगन रहेगा। उसे बाप और सेवा के सिवाए कुछ भी याद नहीं रहेगा। ... अगर श्रीमत में मनमत या परमत मिक्स है तो जैसे शुद्ध चीज में कोई अशुद्ध चीज मिक्स हो जाती है तो कोई न कोई नुकसान हो जाता है। ... मिक्स होने से खुशी, सफलता, शक्ति का अनुभव भी नहीं होगा।'' अ.बापदादा 6.02.77 पार्टी

Student life is the best कहा जाता है, इसलिए स्टूडेण्ट जो अच्छी रीति पढ़ते हैं, उनको खुशी रहती है और हमारी तो अभी यह गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ है। जो आत्मायें अच्छी रीति से नियमित पढ़ाई करती हैं, उनको अवश्य ही खुशी होती है क्योंकि उनको जाने-अन्जाने में अपना भविष्य उज्ज्वल दिखाई देता है।

सदा खुश रहने की अभिलाषा रखने वाली आत्मा को किसी शत्रु के पतन में भी खुश नहीं होना चाहिए क्योंकि किसी के पतन में खुश होना सिद्ध करता है कि हमारी उससे शत्रुता है, जबकि इस विश्व-नाटक में सभी आत्मायें निर्दोष हैं, हमारा कोई भी शत्रु-मित्र नहीं है अर्थात् हमारी सभी के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना होनी चाहिए। यदि हम किसी के पतन में खुश होते हैं तो हम अपना भविष्य के लिए दुख का खाता जमा करते हैं, इसलिए वह सदा खुश नहीं रह सकेगा।

Q. संगमयुग पर सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा के बनने के बाद भी खुशी न होने या कम होने के कारण क्या हैं?

वास्तव में यह संगमयुग ही परमानन्द के अनुभव करने का समय है क्योंकि अभी

ही परमपिता परमात्मा से आत्माओं का मिलन होता है, उनसे ज्ञान-धन मिलता है, परमात्म-प्यार मिलता है, जो आत्मा के चढ़ती कला का एकमात्र आधार है। परन्तु इस समय अर्थात् परमपिता परमात्मा का बनने के बाद भी आत्मा को खुशी नहीं रहती है या कम रहती है, उसके कारण क्या हैं, उन पर विचार करना अति आवश्यक है। यदि हम इस विषय में विचार करेंगे तो देखेंगे -

1. परमपिता परमात्मा के गुण-धर्मों और कर्तव्य की यथार्थ रीति पहचान नहीं है अर्थात् पूरा निश्चय नहीं है कि हम परमपिता परमात्मा के साथ हैं, जो हमको विश्व का मालिक बनने के लिए पढ़ा रहा है, उनका कल्याणकारी हाथ हमारे सिर पर है।

2. ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको जो आत्मा-परमात्मा और विश्व-नाटक का ज्ञान दिया है, उसका यथार्थ रीति ज्ञान नहीं है अर्थात् उनके गुण-धर्मों की यथार्थ रीति समझ, उनकी अनुभूति नहीं है। बाबा ने हमको इस विश्व-नाटक के अनेक गुह्य राज़ बताये हैं, उनकी समझ हो, अनुभूति हो तो कोई भी आत्मा दुखी नहीं हो सकती है अर्थात् उसकी खुशी गायब नहीं हो सकती है।

3. अति महत्वाकाँक्षा का होना। यद्यपि महत्वाकांक्षा जीवात्मा के आगे बढ़ने का आधार है परन्तु अति महत्वाकांक्षा जीवात्मा के दुख का कारण बन जाती है।

4. हम अपनी प्राप्तियों को न देखकर, अन्य आत्माओं की प्राप्तियों को देखते हैं, उनका चिन्तन करते हैं, जिससे हम अपनी प्राप्तियों का सुख अनुभव नहीं कर पाते और दुखी हो जाते हैं। इसलिए बाबा ने हमको पर-चिन्तन, पर-दर्शन के लिए मना की है।

5. बाबा ने हमको जो आत्मिक स्वरूप में स्थित होने के लिए पुरुषार्थ बताया है, वह यथार्थ रीति नहीं किया है या नहीं करते हैं, जिससे सदा खुशी में नहीं रह पाते हैं क्योंकि आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा का ही परमात्मा के साथ योग होगा और आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, इसलिए आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा स्वत: खुशी में होगी।

6. आत्मिक स्वरूप का यथार्थ रीति अभ्यास न करने और विश्व-नाटक के ज्ञान की धारणा न होने से आत्मा में सहन शक्ति न होने के कारण कर्मभोग या कर्म-बन्धन हमारी खुशी को गायब कर देता है। यह भी विचारणीय है कि ये अभ्यास

कर्मभोग या कर्म-बन्धन आने के समय सम्भव नहीं है, उसका पहले से ही सफल अभ्यास करना होगा।

7. जो पर-चिन्तन, पर-दर्शन में अपने समय-शक्ति को गँवा देगा, वह कमजोर हो जाता है, इसलिए वह भी सदा खुशी में नहीं रह सकता है और ये आदत बहुत खराब है, हमको इसका पता भी नहीं पड़ पाता है। जो इसके दुष्प्रभाव को समझकर अपना समय और शक्ति आत्म-चिन्तन, प्रभु-चिन्तन, ज्ञान के चिन्तन और ईश्वरीय सेवा में लगाता है, वह सदा खुशी में रहता है।

8. हमारा आधे कल्प से पापों का खाता तो है ही, वह बाबा की याद से उतार रहे हैं या कर्मभोग आदि के रूप में चुक्ता कर रहे हैं परन्तु जो आत्मायें अभी भी मन्सा-वाचा-कर्मणा कोई पाप कर्म करती हैं तो उसका सौगुणा दण्ड उनके ऊपर हो जाता है, जिससे उनकी खुशी गायब हो जाती है।

9.बाबा की श्रीमत पालन न करने या अवज्ञा करने से भी खुशी गायब हो जाती है।

10. हमारे किसी कर्म से कोई आत्मा को दुख होता है या उसको ज्ञान में संशय आ जाता है तो वह हमारी खुशी को गायब कर देता है।

11. देहाभिमान के कारण आत्मा अहंकार या हीनता की फीलिंग में आ जाती है, जिससे अनेक प्रकार के विघ्न आते हैं, जो आत्मा की खुशी को खत्म कर देते हैं। अहंकार-हीनता स्वत: में एक विघ्न है, जो आत्मा को सच्ची खुशी को अनुभव करने नहीं देता है।

निवारण अर्थात् सदा खुश रहने के लिए धारणा

1. बाबा ने जो आत्मा-परमात्मा-सृष्टि-चक्र का ज्ञान दिया है, उसके जो गुण-धर्म बताये हैं, उन पर गहन चिन्तन करके उनको यथार्थ रीति समझना और उनकी अनुभूति करके अनुभूति की अथॉरिटी बनना, जिससे वह अनुभूति सदा हमारी बुद्धि में जागृत रहे। इसलिए ही बाबा ने हमको यह ज्ञान दिया है और उनके अनुभव की अथॉरिटी बनने के लिए आज्ञा दी है या शुभ प्रेरणा दी है।

2. आत्मिक स्वरूप में स्थित रहने के लिए बाबा ने जो विधि-विधान बताये हैं, नियम-संयम बताये हैं, जो एक्सरसाइज़ बताई है, वह यथार्थ रीति करना, दिखावे

के लिए या नियम निभाने के लिए नहीं, उसकी अनुभूति करना क्योंकि आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है।

3. व्यर्थ से बचकर रहना क्योंकि व्यर्थ से आत्मिक शक्ति नष्ट होती है, जो आत्मा की खुशी को गायब कर देती है। इसके लिए व्यर्थ और समर्थ की यथार्थ रीति जानकारी रखना क्योंकि व्यर्थ और समर्थ को परखना उसका निर्णय करना भी विशाल बुद्धि का काम है, जो बुद्धि परमात्मा ने हमको दी है परन्तु श्रीमत प्रमाण उसका उपयोग करना।

4. पढ़ाई रोज़ पढ़ना और उस पर चिन्तन कर उसकी धारणा करना। अमृतवेले का महत्व समझकर अमृतवेले अपनी बैटरी को चार्ज करना।

5. अपना तन-मन-धन, समय-संकल्प ईश्वरीय सेवा में सफल करना।

6. विश्व-नाटक के ज्ञान की यथार्थ रीति धारणा कर अहंकार-हीनता की फीलिंग से मुक्त होना क्योंकि इस विश्व-नाटक में अहंकार-हीनता का कोई स्थान नहीं है। अहंकार-हीनता का कारण अज्ञानता है।

7. विश्व-नाटक की विविधता और अनादि-अविनाश्यता को जानकर अति महत्वाकाँक्षा से मुक्त रहना।

8. दूसरों की प्राप्तियों का चिन्तन न कर अपनी प्राप्तियों का चिन्तन करना, उनको सेवा में लगाकर, उनका सुख अनुभव करना।

9. कर्म करते बीच-बीच में अशरीरीपन का सतत् अभ्यास करना अर्थात् यथार्थ रीति ट्रैफिक कन्ट्रोल का अभ्यास करना।

10. पाप-पुण्य के राज़ को समझकर पुण्य का खाता जमा करना। पुण्य का खाता जमा होने से आत्मा को खुशी रहती है।

11. विश्व-नाटक के हिसाब-किताब के राज़ को जानकर सर्वात्माओं के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना रख पुराना दुखदाई हिसाब-किताब खत्म कर, भविष्य के लिए सुखदाई हिसाब-किताब बनाना।

12. योगबल से जड़-जंगम प्रकृति को भी पावन बनाने का पुरुषार्थ करना।

इस प्रकार ज्ञान के यथार्थ रहस्य को समझकर पुरुषार्थ करने से हमारी खुशी स्थाई रह सकेगी। जब हम खुशी में होंगे तो दूसरों को भी खुशी बाँट सकेंगे।

खुशी-ग़म, सुख-दुख और मुदिता

खुशी-ग़म, सुख-दुख और परमात्मा

Q. क्या परमात्मा को खुशी होती है, यदि होती है तो उसका आधार क्या है?

वास्तव में देह से रहित आत्मिक स्वरूप में खुशी-ग़म, सुख-दुख का प्रश्न नहीं उठता है। इसलिए परमात्मा के लिए खुशी-ग़म, दुख-सुख की बात नहीं है। खुशी-ग़म, सुख-दुख की बात देहधारियों के लिए होती है, परमात्मा के लिए नहीं। परन्तु निराकार परमपिता परमात्मा जब ब्रह्मा तन में आता है तो इस विश्व-नाटक की दिव्यता, अद्भूतता, इसके अटल विधि-विधानों को देखकर उनको भी अवश्य ही आश्चर्य लगता होगा कि यह विश्व-नाटक कैसा वण्डरफुल बना हुआ है और बच्चों से मिलता है तो उनकी मुदित की स्थिति होती होगी, जो खुशी-ग़म दोनों से परे है, इसलिए उनको सच्चिदानन्द स्वरूप कहा जाता है। सृष्टि का नियम है कि खुशी वाले को ग़म भी अवश्य होगा, सुख वाले को दुख भी अवश्य होगा क्योंकि ये दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं अर्थात् एक के आधार पर दूसरे का अस्तित्व है। इन सब बातों पर विचार करने पर विवेक कहता है कि परमात्मा को खुशी-ग़म, सुख-दुख दोनों ही नहीं होते हैं। खुशी-ग़म का सुख-दुख से गहरा सम्बन्ध है और परमात्मा तो सुख-दुख दोनों से न्यारा है।

ऐसे ही जब आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है तो मुदित स्थिति का अनुभव करती है क्योंकि आत्मा भी सच्चिदानन्द स्वरूप है परन्तु जब वह साकार देह में आती है तो उसकी यह स्थिति बदल जाती है परन्तु जब परमात्मा ब्रह्मा तन में आकर ज्ञान देते हैं और आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का विधि-विधान बताते हैं तो वह इसका अनुभव करती है। परमात्मा ब्रह्मा तन में आकर कर्तव्य करते भी अपने निराकारी स्वरूप में रहते हैं क्योंकि ब्रह्मा तन उनका अपना नहीं है, इसलिए उसका उनको बन्धन नहीं है। दुनिया में मनुष्यों को खुशी भौतिक प्राप्तियों की तुलना में होती है, इसलिए कभी खुशी और कभी ग़म होता है परन्तु ईश्वरीय प्राप्तियों में तुलना की बात नहीं क्योंकि वे अथाह हैं, जो जितना चाहे, उतना ले और खुशी का अनुभव करे। इसलिए ईश्वरीय प्राप्तियों की अनुभूति से ही आत्मा को स्थाई खुशी हो सकती है।

''बाप समझाते हैं - मैं परमपिता परमात्मा निर्लेप हूँ अर्थात् दुख-सुख से न्यारा, अभोक्ता हूँ।... मेरे में सारे सृष्टि-चक्र का ज्ञान है, जो मैं आकर आत्माओं को देता हूँ। तुमको समझना है - अभी हम आत्मा परमपिता परमात्मा से सुन रहे हैं। ... भारत को अविनाशी खण्ड कहा जाता है, इसका कभी विनाश नहीं होता है। यह भारत है पतित-पावन परमपिता परमात्मा का बर्थ-प्लेस।''

सा.बाबा 5.08.13 रिवा.

सतयुग, कलियुग और संगमयुग की खुशी

Q. सतयुग-त्रेता में आत्मा को खुशी होती है और यदि होती है तो उसका आधार क्या होता है?

वास्तव में खुशी की अनुभूति गम की भेंट में ही होती है। अभी आत्माओं में खुशी-ग़म, सुख-दुख दोनों की स्मृतियाँ संचित हैं, इसलिए जब कोई सफलता मिलती है, कोई प्राप्ति होती है तो खुशी होती है, असफलता में ग़म होता है परन्तु सतयुग में सफलता-असफलता की बात नहीं क्योंकि वहाँ आत्मायें कोई पुरुषार्थ तो करती नहीं हैं, संगम पर किये पुरुषार्थ से अथाह सुख-साधन वहाँ उपलब्ध हैं। इस सत्य पर विचार करें तो वहाँ आत्माओं को वहाँ इन्द्रिय सुख तो होते हैं परन्तु खुशी-ग़म की बात नहीं होती है। इसलिए बाबा ने हमको हमारे 5 गौरवमय (Graceful) स्वरूपों की अभी स्मृति दिलाई है, जो स्मृति और अनुभूति अभी हमको खुशी प्रदान करती है। यह संगमयुग ही खुशी की अनुभूति का सर्वश्रेष्ठ समय है। फिर द्वापर से पुरुषार्थ और प्राप्ति के आधार पर कब खुशी और कभी ग़म की अनुभूति होती है क्योंकि त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि के संगम पर पुरुषोत्तम संगमयुग पर संचित किया शुभ कर्मों का खाता खत्म हो जाता है। द्वापर से कर्म और फल का नया विधि-विधान चलता है। कल्पान्त और कल्प के मध्य के दोनों संगमों का विशेष महत्व है परन्तु कल्पान्त के संगम को पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है, मध्य के संगम को पुरुषोत्तम नहीं कहा जायेगा क्योंकि वहाँ तो आत्मा की उतरती कला होती है। जड़-जंगम-चेतन प्रकृति की चढ़ती कला कल्पान्त के संगम पर ही होती है।

''सतयुग-त्रेता में अटल-अखण्ड, सुख-शान्तिमय, देवी-देवताओं की राजधानी थी, कोई विघ्न नहीं था। ... अभी दुखी हैं तो बुलाते हैं - आकर रहम करो। बाप कहते हैं - मैं रहम तो सब पर करता हूँ, सब आत्माओं को पापों से मुक्त कर इस पतित दुनिया से लिबरेट करता हूँ। सभी आत्माओं को निराकारी दुनिया में ले जाता हूँ। मैं आकर ज्ञान रतनों से मनुष्य को देवता बनाता हूँ।''

सा.बाबा 9.08.13 रिवा.

निर्विघ्न स्थिति

वर्तमान समय परमात्मा ने हमको परमानन्द की अनुभूति करने के विधि-विधान बताये हैं परन्तु उसमें अनेक प्रकार के विघ्न आते हैं, जो हमको उस परमानन्द में रहने नहीं देते, उस अनुभूति से वंचित कर देते हैं। इसलिए बाबा ने हमको निर्विघ्न रहने के लिए ज्ञान भी दिया है और श्रीमत भी दी है। आये हुए विघ्नों को पार करने के लिए भी बाबा ने जो विधि-विधान बताये हैं, जिनका ज्ञान परमानन्द की अनुभूति के लिए अति आवश्यक है। वे विधि-विधान क्या हैं, उनके विषय में यहाँ कुछ विचार करते हैं।

निर्विघ्न स्थिति और परमात्मा

परमपिता परमात्मा ज्ञान का सागर, सर्वशक्तिवान, सच्चिदानन्द स्वरूप है, वह नये विश्व का रचता है, जहाँ सर्वात्मायें जीवनमुक्त होती हैं अर्थात् उनके जीवन में किसी प्रकार का कोई विघ्न नहीं होता है। बाबा ने यह भी कहा है कि वह जीवनमुक्त स्थिति तुमको यहाँ ही बनानी है। इसलिए बाबा ने हमको निर्विघ्न स्थिति में रहने के लिए विधि-विधान बताया है, उसके लिए ज्ञान दिया है। परमात्मा तो सदा मुक्त है, इसलिए उनके लिए किसी प्रकार के विघ्न का प्रश्न नहीं उठता है। वह हमको भी विघ्नों से मुक्त जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव कराता है और उसको स्थाई बनाने का विधि-विधान बताता है। जो उन विधि-विधानों का पालन करती हैं, वे ही निविघ्न स्थिति का अनुभव करती हैं।

''जब तीनों कालों के राज़ को जान गये तो राज़ी हो गये हो ना! कभी भी कोई नाराज़ होता है अर्थात् ड्रामा के राज़ को भूल जाता है। जो सदा ड्रामा के राज़ को

और तीनों कालों के राज़ को जानता है, वह सदा राज़ी रहेगा। ... तीनों कालों को जानने वाला सदा राज़ी और खुश रहता है। मधुवन निवासी अर्थात् सदा खुश और राज़ी रहने वाले।'' अ.बापदादा 29.01.77 मधुबन निवासियों से

''दूसरे से नाराज़ होना अर्थात् अपने को राज़ जानने की स्टेज से नीचे ले आना। तख्त छोड़कर नीचे आते हो, तब नाराज़ होते हो। त्रिकालदर्शी अर्थात् नॉलेजफुल की स्टेज एक तख्त है, ऊंचाई है। ... जैसा स्थान वैसी स्थिति होनी चाहिए। मधुवन को स्वर्ग भूमि कहते हो ना! यह तो मानते हो कि मधुवन स्वर्ग का मॉडल है, तो स्वर्ग में माया आती है क्या? तो माया की अविद्या होनी चाहिए।''

अ.बापदादा 29.01.77 मधुबन निवासियों से

विघ्नों का कारण और निवारण

विघ्नों का कारण

बाबा ने कहा है सदा सन्तुष्ट रह सदा सम्पन्नता और खुशी का अनुभव करो तथा निर्विघ्न बनो और बनाओ। परन्तु जब हमको विघ्नों के कारणों का पता होगा तब ही हम उनका निवारण कर स्वयं भी निर्विघ्न बनेंगे और दूसरों को भी बना सकेंगे। जब हम निर्विघ्न बनेंगे तो सेन्टर और जोन भी निर्विघ्न बनेंगा क्योंकि व्यष्टि से समष्टि का गहरा सम्बन्ध है। जो स्वयं निर्विघ्न होगा, वही दूसरों को निर्विघ्न बनने में सहयोग कर सकेगा। व्यक्ति से ही संगठन बनता है।

ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ने हमको इस विश्व-नाटक का सारा ज्ञान दिया है और सदा निर्विघ्न रहने का विधि-विधान भी बताया है। फिर भी हम अपने को विघ्नों में महसूस करते हैं तो उन विघ्नों का मूल कारण है परमात्मा के द्वारा दिये ज्ञान की यथार्थ समझ की कमी अर्थात् आत्मा-परमात्मा और विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की कमी क्योंकि यह अनादि-अविनाशी बना-बनाया नाटक है, जो पूर्ण न्यायपूर्ण, सत्य और कल्याणकारी है। इसमें हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है। किसको विघ्नरूप समझना विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की कमी है।

कर्मों के ज्ञान की कमी क्योंकि यह विश्व-नाटक कर्म और फल पर

आधारित है अर्थात् कोई भी आत्मा को अच्छा या बुरा फल बिना कर्म के नहीं मिलता है। हर आत्मा अपने कर्मों अनुसार ही अच्छा या बुरा फल पाती है। अपने दुख-दर्द के लिए किसी दूसरी आत्मा को दोष देना या विघ्नरूप समझना कर्मों के यथार्थ ज्ञान की कमी है।

यह सृष्टि-चक्र आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का खेल है, जो आदि से अन्त तक आत्माओं के परस्पर हिसाब किताब के आधार पर चलता है। कल्पान्त में आधे कल्प के हिसाब-किताब का खाता पूरा करके और नये कल्प में आधे कल्प के लिए हिसाब-किताब खाता जमा करना होता है। हिसाब-किताब को पूरा करने के लिए भी आत्माओं के सम्बन्ध बिगड़ते हैं, जिनको अज्ञानतावश आत्मायें विघ्नरूप समझ लेती है और दुखी होती हैं।

हमारा आत्मिक स्वरूप परम-शान्त, परम-शक्ति सम्पन्न, परमानन्दमय है। जो आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित है या आत्मिक स्वरूप में स्थित हो पार्ट बजा रही है, उसके लिए इस विश्व-नाटक में किसी प्रकार कोई विघ्न हो नहीं सकता। यदि कोई विघ्न है तो वह हमारी आत्मिक स्वरूप की कमी के कारण है। इसलिए बाबा ने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने के लिए श्रीमत दी है, उसके लिए ड्रिल सिखाई है। जो आत्मा इस अनुभूति में होगा, उसके लिए विघ्न नाम की कोई बात हो नहीं सकती।

इस विश्व की सारी साधन-सामग्री एक संगठित सम्पत्ति (Joint Property) है अर्थात् किसी वस्तु पर किसी का व्यक्तिगत अधिकार नहीं है। हर आत्मा को साधन-सम्पत्ति की प्राप्ति और व्यक्तियों का साथ पार्ट बजाने के लिए मिलता है और पार्ट के साथ ही उनसे हमारा सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है। इस सत्य को समझकर जो ट्रस्टी बनकर साधन-सम्पत्ति को सम्भालता है, उसका उपभोग करता है, आत्माओं के साथ व्यवहार में आता है, उसके लिए यहाँ कोई विघ्न हो नहीं सकता है। यह है ट्रस्टीपन का विवेकात्मक पक्ष और ट्रस्टीपन का भावनात्मक पक्ष है कि हम बाबा के बनें हैं, हमने अपना सबकुछ बाबा को समर्पित किया है, फिर बाबा ने हमको वह सब ट्रस्टी बनकर सम्भालने के लिए दिया है, इसलिए हम उस सबके ट्रस्टी हैं, मालिक नहीं। यथार्थ ज्ञानी आत्मा भावना और विवेक दोनों

का सन्तुलन रखकर चलते हैं।

अधिकार और कर्तव्य के सन्तुलन की कमी भी विघ्न का कारण है। बहुधा आत्मायें कर्तव्य के बिना ही अधिकार की इच्छा रखती है, जिसके कारण अनेक प्रकार के विघ्न व्यक्तिगत जीवन में और संगठन में आते हैं। ड्रामा के नियमानुसार कर्तव्य करने वाले को अधिकार अवश्य मिलता है।

बहुधा यज्ञ में हम विकार में जाना, ज्ञान की और बाप की निन्दा करने को ही बाप का नाम बदनाम करना समझते हैं, इसलिए उनको यज्ञ के लिए विघ्नरूप समझते हैं परन्तु जो विवेकशील हैं, वे ज्ञान की सब बातों को समझते हैं, यदि वे ज्ञान की यथार्थ समझ को धारण कर कर्म नहीं करते तो यह भी बाप की और बाप के द्वारा दिये गये ज्ञान की बदनामी कराते हैं, इसलिए वे भी विघ्नरूप ही हैं। उस विघ्नरूप बनने का फल भी उनको भोगना पड़ता है, जो असन्तुष्टता, अप्रसन्नता के रूप में सदा हमारे ऊपर हावी रहता है और हमको ज्ञान का यथार्थ सुख अनुभव करने में विघ्नरूप बनता है।

महत्वाकाँक्षा आत्मा को आगे बढ़ने का आधार है परन्तु अति महत्वाकाँक्षा विघ्नरूप बन जाती है क्योंकि यह विश्व-नाटक विविधतापूर्ण नाटक है, इसलिए सबको एक समान साधन-सम्पत्ति मिल नहीं सकती और यदि मिल भी जाये तो नाटक का मज़ा ही खत्म हो जायेगा। इसलिए बाबा कई बार याद दिलाया है कि किसी भी नाटक में दो आत्माओं का पार्ट एक समान नहीं होता है या दो दृश्य एक समान नहीं होते हैं।

विघ्नरूप स्थिति और विघ्न

जो स्थिति या परिस्थिति हमको या अन्य आत्माओं को संगमयुग के परम सुख, परमानन्द को अनुभव करने में बाधक बनती है, वह विघ्न है।

हमारे सामने अनेक प्रकार के विघ्न आते हैं, जो हमारी स्थिति को गिराते हैं। ऐसे ही हमारे अनेक प्रकार के कर्म अन्य आत्माओं और यज्ञ के लिए विघ्नरूप बनते हैं। हमारे कोई कर्म प्रत्यक्ष रूप से विघ्नरूप बनते हैं और कोई कर्म अप्रत्यक्ष रूप से विघ्नरूप बनते हैं।

हम मन्सा-वाचा-कर्मणा कोई भी व्यर्थ वा विकारी कर्म करते हैं तो यज्ञ के लिए विघ्नरूप बनते हैं क्योंकि उससे वातावरण खराब करते हैं, अन्य आत्माओं को पथ-भ्रष्ट करते हैं, जिसका उन पर बोझा चढ़ता है, जो आत्मा को खुशी का अनुभव नहीं करने देता है। जो विघ्नरूप नहीं हैं, वे परमानन्द की अनुभूति में हैं और मन्सा-वाचा-कर्मणा विश्व-कल्याण की सेवा में हैं।

कोई विघ्न प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं और कोई अप्रत्यक्ष रूप में होते हैं। देहाभिमान के कारण अहंकार और हीनता की महसूसता होना भी आत्मा के लिए बड़ा विघ्न है। इसलिए दादी ने और बाबा ने तीन शब्द याद दिलाये हैं - निमित्त, निर्मान और निर्मल। देहाभिमान के साथ देहभान भी आत्मा पर मैल है, इसलिए अभी बाबा देहभान से भी मुक्त होने के लिए कहते हैं। सतयुग के आदि से ही देहभान के कारण आत्माओं की उतरती कला होती है।

यह संगमयुग परम प्राप्तियों से सम्पन्न युग है, इसलिए आये हुए विघ्नों का निवारण कर संगमयुग के परम सुख, परमानन्द को अनुभव करना हर ब्राह्मण आत्मा का परम कर्तव्य है।

विघ्नों का निवारण

विघ्नों के अनेक कारण हैं, जो आत्मा के सामने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में आते हैं और उनका निवारण भी हर आत्मा अपने-अपने पुरुषार्थ अनुसार करती है।

Q. विघ्न, कर्मभोग, कर्म-बन्धन और आपदा में क्या अन्तर है? बाबा का निर्विघ्न बनने का भाव क्या है? निर्विघ्न बनने का यथार्थ पुरुषार्थ क्या है?

बाबा ने ये भी कहा है कि कर्मभोग तो अन्त तक आयेगा, उस पर योगबल से विजय पानी है। कलियुगी दुनिया का अन्त है, उसके विनाश के लिए प्राकृतिक आपदायें तो अन्त में और ही जोर से आयेंगी, उनको सहन करने के लिए भी योगबल चाहिए। कर्मों के हिसाब-किताब के फलस्वरूप कर्म-बन्धन भी किसी न किसी रूप में अन्त तक आना ही है और उसको पूरा करना ही है। परन्तु बाबा ने जो निर्विघ्न बनने की बात कही है, उसके विषय में हम समझते हैं कि बाबा का भाव भाई-बहनों के परस्पर, स्टूडेण्ट्स के टीचर के साथ, सेन्टर पर रहने वाली

बहनों के आपस के, सेवाकेन्द्रों के पास के सेवाकेन्द्रों के साथ, सेवाकेन्द्रों के जोन के साथ और जोन के अन्य जोनों के साथ जो झगड़े हैं, जिनसे ज्ञान का और बाबा का नाम बदनाम होता है, जिसके कारण कई ब्राह्मण दुखी होकर ज्ञान ही छोड़ देते हैं, कई विरोधी पार्टियों में चले जाते हैं, कई गुट्ट बनाकर यज्ञ में विघ्न डालते हैं, आदि-आदि जो विघ्न है, उनसे निर्विघ्न होने के लिए बाबा ने कहा है। इसके लिए हम विचार करेंगे तो इनसे मुक्त होने के लिए भी विश्व-नाटक के ज्ञान की यथार्थ समझ ही ब्रह्मास्त्र है। जिस आत्मा को विश्व-नाटक के ज्ञान की यथार्थ समझ होगी, वह तो साक्षी होकर इन सबको देखेगा और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए इस खेल का परमानन्द अनुभव करेगा। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा वाले के लिए विघ्न नाम की कोई बात हो नहीं सकती। योग में भी व्यर्थ संकल्पों के विघ्न पड़ते हैं, योग का यथार्थ सुख अनुभव करने नहीं देते हैं, वे भी सतत अभ्यास और ड्रामा के यथार्थ ज्ञान की धारणा से ही मिटेंगे।

इस प्रकार सार रूप में हम विचार करें तो निम्न बातों के ज्ञान की यथार्थ समझ, निश्चय और धारणा से ही निर्विघ्न बन सकते हैं।

आत्मा-परमात्मा के ज्ञान के साथ विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान और उसकी धारणा।

बाबा ने हमको कर्मों का ज्ञान दिया है, उस कर्मों के ज्ञान पर विचार करें तो कोई भी आत्मा किसके लिए विघ्नरूप बिना उसके किसी कर्म के नहीं हो सकती।

आत्माओं में आत्माओं के साथ के आधे कल्प के दुखदाई सम्बन्धों का हिसाब-किताब जो आत्मा में संचित है, उसके चुक्ता होने का ज्ञान। हमारे आत्माओं के साथ अनेक जन्मों के दुखदायी हिसाब-किताब हैं जो अभी अवश्य पूरे होने ही हैं।

अभी हम परमात्मा के बने हैं तो यह हमारा ईश्वरीय परिवार है, वह पारिवारिक भावना जागृत हो, जिसके आधार पर भविष्य दैवी परिवार बनना है।

हम परमात्मा के विश्व-कल्याण के कार्य के निमित्त बने हैं, तो हमको अन्य आत्माओं में बाबा और ज्ञान के प्रति आकर्षण पैदा करना है। इसलिए

हमको ऐसा काम नहीं करना है, जो विश्व-कल्याण के कार्य में विघ्नरूप हो अर्थात् अन्य आत्माओं की परमात्मा और ज्ञान के प्रति भावना टूटे।

''फिर कोई आकर फेरी पहनकर चले भी जाते हैं, वे भी फिर आयेंगे, जायेंगे कहाँ। चले गये, सतगुरु की निन्दा कराई, फिर बाबा के पास आते हैं। वे फील करते हैं बरोबर हमारी ही भूल है, तो उनको भी शरण लेना पड़ता है, उनकी भी सेवा करेंगे। बाप रहमदिल है, उनको अन्त तक फुल रहम करना है। कितना भी विघ्न डालते हैं, फिर भी कहेंगे भल आओ, फिर ट्रायल करो, मना नहीं है।''

सा.बाबा 15.05.13 रिवा.

''कर्मयोग का फल है सहजयोग और खुशी। कोई जो कुछ करता है, उसका प्रत्यक्षफल यहाँ ही पदमगुणा मिलता है।... मन के खुश रहने से शरीर की व्याधि भी शूली से काँटा हो जाती है। ज्यादा सोचना नहीं। सोचने से निर्णय शक्ति कम हो जाती है। पेपर आना माना परिपक्व होना। इसलिए घबराना नहीं। पेपर्स फाउण्डेशन को पक्का करते हैं। फाउण्डेशन को कूटते हैं, तो वह कूटना नहीं है लेकिन मज़बूत करना है।''

अ.बापदादा 30.04.77 पार्टी से

विघ्नों के निवारण का विवेकात्मक और भावात्मक दृष्टिकोण

दो प्रकार के निवारण हैं। एक है विवेकात्मक और दूसरा है भावनात्मक परन्तु यथार्थ सफलता पाने के लिए विवेक और भावना का सन्तुलन (Balance) होना अति आवश्यक है। यह संगमयुग है सन्तुलन का युग। परमपिता परमात्मा ही यह सन्तुलन सिखाते हैं।

विवेकात्मक दृष्टि में उपर्युक्त आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक के ज्ञान की सही समझ होगी तो इस विश्व-नाटक में विघ्न की कोई बात नहीं रहेगी क्योंकि यह एक खेल है और सभी आत्मायें इसमें खिलाड़ी और दर्शक है। खेल सदैव आनन्द देने वाला होता है। यदि हमारे जीवन में इस विश्व-नाटक के सर्व पहलुओं की यथार्थ समझ और धारणा होगी तो हम सदा इस खेल का आनन्द का अनुभव करेंगे और जब हम आनन्द में होंगे तो विघ्न की कोई बात हो नहीं सकती। जब हम स्वयं आनन्द में होंगे तब ही हम दूसरों को वह रास्ता बता सकेंगे, जिससे

वे भी निर्विघ्न होकर इसका आनन्द ले सकेंगे। जब सभी व्यक्ति इस खेल का आनन्द अनुभव करेंगे तो सब निर्विघ्न होंगे और सारा संगठन भी निर्विघ्न हो जायेगा।

दूसरा है भावनात्मक निवारण। हम परमपिता परमात्मा के बच्चे बनें हैं, हमने अपना तन-मन-धन-जन सब उनको समर्पित किया है और बाबा ने हमको उसका ट्रस्टी बनकर सम्भालने के लिए कहा है, बाबा ने हमको कितना प्यार दिया है, हमारी कितनी पालना कर रहा है तो हमको भी उसकी श्रीमत का पालन करना चाहिए। हमको परमात्मा को यादकर, उनकी आज्ञा समझकर सदा निर्विघ्न रहना है और सबको बनाना है।

वास्तविकता को विचार करें तो सारे विश्व की आत्मायें परमात्मा के बच्चे हैं तो हम एक ही विश्व परिवार के भाती हैं, सभी हमारे भाई हैं। अभी हम परमात्मा के ब्रह्मा द्वारा गोद के बच्चे बनें हैं तो हमारा ये ईश्वरीय परिवार है, सभी हमारे भाई-बहनें हैं। परिवार में पारिवारिक भावना होती है तो सब एक-दूसरे को प्यार करते हैं, सहयोग करते हैं, कोई किसको विघ्नरूप न समझता है और न ही दूसरे के लिए विघ्नरूप बनता है। यह पारिवारिक भावना यथार्थ रीति जाग्रत करने से हम निर्विघ्न रह सकते हैं और दूसरों को भी बना सकते हैं। अपने व्यक्तिगत, सेवाकेन्द्रों, जोन या विश्व के किसी भी प्रकार के विघ्न के लिए मनुष्य दूसरों पर दोषारोपण करता है, अपने को नहीं देखता है परन्तु बाबा ने हमको अपने को देखने और अपने को सुधारने के लिए कहा है।

विघ्नों का मूल कारण स्वार्थपरता है। परन्तु इस विश्व-नाटक की वास्तविकता पर विचार करें तो हम सभी आत्मायें इस विश्व-नाटक में पार्टधारी हैं और इसकी सारी साधन-सम्पत्ति संगठित सम्पत्ति (Joint Property) है, जो हर आत्मा को पार्ट बजाने के लिए मिलती है अर्थात् किसी पर किसी का स्थाई अधिकार नहीं है, सभी उसके ट्रस्टी मात्र हैं। यह है ट्रस्टीपन का विवेकात्मक पहलू। निर्विघ्न बनने के लिए हर आत्मा को अपने अधिकार और कर्तव्य का सही ज्ञान होना अति आवश्यक है।

अहंकार और हीनता भी विघ्नों का बड़ा कारण है, जिसके कारण आत्मा

में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, ईर्ष्या-घृणा आदि के भाव आते हैं, जो आत्मा को संगमयुग की परम-प्राप्तियों का परम-सुख अनुभव करने में विघ्नरूप बनते हैं। मनुष्य अपने स्वार्थ और अहंकार के कारण दूसरों के लिए भी विघ्नरूप बनता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि यथार्थ ज्ञान की कमी और आत्मिक स्वरूप के अभ्यास की कमी ही विघ्नों का मूल कारण है। ज्ञान का मनन-चिन्तन कर ज्ञान की यथार्थ समझ धारण करने और आत्मिक स्वरूप का अभ्यास करने से ही आत्मा निर्विघ्न बन सकती है। जब आत्मायें निर्विघ्न बनेंगी तो सेन्टर, जोन और समस्त यज्ञ अवश्य ही निर्विघ्न बन जायेगा। यथार्थ में आत्मा, परमात्मा और ड्रामा निर्दोष है, विवेक से इस सत्य को अनुभव करना ही निर्विघ्न बनने का एकमात्र आधार है। भावना के आधार पर कोई अल्पकाल के लिए तो निविघ्न बन सकता है परन्तु सदा काल के लिए नहीं। यह संगमयुग भावना और विवेक भी संगम है, जब दोनों का बैलेन्स होगा, तब ही हम सदा काल के लिए निविघ्न रहेंगे और दूसरों को निर्विघ्न बनने में सहयोग कर सकेंगे।

खुशी, निर्विघ्न स्थिति और निर्दोष दृष्टि

वास्तविकता को देखें तो स्वयं के द्वारा आये विघ्नों या प्रकृति के द्वारा आने वाले विघ्नों को तो आत्मायें सहज पार कर लेती हैं, परन्तु अन्य आत्माओं की ओर से आने वाले विघ्नों से अधिक परेशान होती हैं। ज्ञान सागर बाबा ने विश्व-नाटक का जो ज्ञान दिया है, उस ज्ञान के दर्पण में अपने को देखेंगे तो हमारी स्थिति अहंकार-हीनता से मुक्त साक्षीपन की रहेगी, जिससे हमारी दृष्टि में सर्वात्मायें निर्दोष दिखाई देंगी, जिससे उनके प्रति रहम की भावना रहेगी, उनके भी कल्याण का संकल्प रहेगा। यही ब्राह्मणपन की धारणा है।

विश्व-नाटक की वास्तविकता पर विचार करें तो इसमें न किसकी महिमा है और न ही किसका दोष है, इसलिए किसी भी आत्मा के गुण-धर्मों से प्रभावित होने का कोई आधार नहीं है। सारे खेल को साक्षी होकर देखना है। परमात्मा को भी याद करने की आवश्यकता इसलिए है कि हमको उनके समान बनना है और घर जाना है। परमात्मा ने ही यह ज्ञान दिया है।

निर्विघ्न स्थिति और निर्दोष दृष्टि का सम्बन्ध

निर्विघ्न स्थिति और निर्दोष दृष्टि का परस्पर बहुत गहरा सम्बन्ध है। जिसकी दृष्टि निर्दोष होगी, उसके सामने पहले तो विघ्न आयेंगे ही नहीं अर्थात् उसको विघ्न भी खेल अनुभव होंगे औरआयेंगे भी तो सहज पार हो जायेगा। इसके लिए बाबा ने भी कई बार कहा है कि विघ्नों को भी एक खेल समझो। ज्ञान सागर परमात्मा ने यह भी ज्ञान दिया है कि आत्मा, परमात्मा और यह ड्रामा सभी निर्दोष हैं क्योंकि यह यह अनादि-अविनाशी ड्रामा सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है।

प्राय: देखा जाता है कि जो विघ्न प्रकृति की ओर से आते हैं, उनसे मनुष्य इतना परेशान नहीं होता है अर्थात् उनको सहज सहन कर लेता है। परन्तु जब आत्माओं की ओर से कोई विघ्न आता है तो अधिक परेशान होता है। यह भी देखा गया है कि सभी आत्मायें, आत्माओं की ओर से आने वाले विघ्नों के लिए दूसरों को ही दोषी समझता है, जिससे उनके प्रति उसका दृष्टिकोण बदल जाता है और दृष्टिकोण बदलने से व्यवहार बदल जाता है और व्यवहार बदलने से आत्मा से अनेक प्रकार के विकर्म होते हैं, जो भविष्य में भी उसके लिए दुखदायी अर्थात् विघ्नरूप बनते हैं। परन्तु जब हम परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान की यथार्थ समझ को धारण कर लेते हैं तो हम सभी आत्माओं को निर्दोष देखते हैं, जिससे उनका व्यवहार हमको विघ्नरूप नहीं दिखाई देता है, बल्कि परीक्षा रूप दिखाई देता है। इसलिए सभी आत्माओं को निर्दोष देखने के लिए ड्रामा का और कर्मों का ज्ञान बुद्धि में रहना अति आवश्यक है। वास्तविकता ये है कि हमारे सामने कोई विघ्न आता है तो उसका मूल कारण ड्रामा अनुसार हमारे ही कर्म होते हैं, दूसरी आत्मायें तो निमित्त कारण होती हैं और हर आत्मा का ड्रामा में जो पार्ट है, वह उसको बजाना ही है, तो उसको दोष कैसे दे सकते हैं।

Q. बाबा ने कहा - ज्ञान, योग, धारणा को विशेष खज़ाना और संगम के समय को सबसे श्रेष्ठ खज़ाना कहा है, तो इनके गुण-धर्म और विशेषतायें क्या-क्या हैं, जिससे ये विशेष और सर्वश्रेष्ठ खज़ाने हैं?जैसाकि बाबा ने स्पष्ट किया है कि ज्ञान के खज़ाने से बन्धन-मुक्त बनते हैं, योग से शक्तियों की प्राप्ति होती है, धारणा से गुणों की प्राप्ति। संगम का समय सबसे बड़ा खज़ाना है, जो सर्व खज़ानों का

आधार है क्योंकि संगम पर ही सर्व खज़ानों के दाता, मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता परमात्मा आकर मिलते हैं और आत्माओं को ज्ञान, योग, धारणा के खज़ाने देते हैं, जो सदा खुश जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव का आधार हैं। अभी आत्मा को जो प्राप्तियाँ और अनुभूतियाँ होती हैं, वे सारे कल्प में न होती हैं और न हो सकती हैं। इन सब खज़ानों के महत्व को जानकर उनकी अनुभूति करने और कराने वाला ही सदा निर्विघ्न होकर जीवनमुक्त स्थिति की खुशी में अभी भी रहेगा और भविष्य में भी रहेगा क्योंकि वर्तमान स्थिति ही भविष्य का आधार है।

ज्ञान - आत्मा, परमात्मा, विश्व-नाटक, तीनों लोकों, तीनों कालों, कर्म और फल आदि-आदि का ज्ञान परमात्मा ने दिया है, वह जब बुद्धि में जागृत रहता है, उस अनुसार स्थिति होती है। यथार्थ ज्ञान की धारणा से आत्मा बन्धनमुक्त होकर परमानन्द की अनुभूति करती है

''पहले-पहले तो निश्चय करना है कि मैं आत्मा हूँ, देह नहीं। इस देह का भान भूल जाना है। ... अभी मैंने तुमको बीज और झाड़ की नॉलेज दी है। बीज से झाड़ कैसे निकलता है, फिर कैसे वृद्धि को पाता है, यह सब ज्ञान तुमको दिया है। इस ड्रामा को समझना है। ... फिर भी द्वापर से वही गीता बनेंगी। अक्षर बाई अक्षर वही गीता के अक्षर निकलेंगे। ड्रामा में यह सब नूँध है।''

सा.बाबा 5.3.13 रिवा.

योग - अभी जब हमने यथार्थ रीति सर्वशक्तिवान परमात्मा को जाना है तो हमारा उनके साथ योग होता है, जिससे आत्मा, परमात्मा के समान स्थिति का अनुभव करती है, जिससे उसको सर्वशक्तियों से सम्पन्न होकर परमानन्द की अनुभूति होती है, जो त्रिलोक और त्रिकाल में कहाँ भी नहीं होती है और न कहीं हो सकती है।

धारणा - बाबा ने कहा है - धारणा भी एक विशेष खज़ाना है, जिससे गुणों की प्राप्ति होती है। जब आत्मा में ईश्वरीय गुण होते हैं तो दैवी गुणों की धारणा होती है, जिससे उसका अन्य आत्माओं के साथ व्यवहार में शुद्धि होती है, आत्मा की शुभ और श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत्ति होती है, जो आत्मा को खुशी अनुभव कराती है।

सेवा - सेवा भी संगमयुग का विशेष खजाना है, जिसके आधार पर ही नई दुनिया में सर्व खजाने प्राप्त होते हैं औरअभी भी सेवासे आत्मा को खुशी अनुभव होती है।

संगमयुग और अविनाशी खुशी

जब किसी व्यक्ति के पास खज़ाना अर्थात् सम्पत्ति होती है तो उसको विशेष नशा और खुशी रहती है। ऐसे ही संगम का समय भी हम आत्माओं के लिए विशेष सम्पत्ति भी है और सम्पत्ति प्राप्त करने का समय भी है क्योंकि सारी प्राप्तियों का आधार परमात्मा हमको इस संगम पर ही मिलता है, जिससे हमको सब ज्ञान-गुण-शक्तियों आदि का खज़ाना मिलता है, जिससे आत्मा को नशा और खुशी रहती है। परन्तु बिडम्बना ये है कि कर्मभोग, कर्म-बन्धन, पुराने स्वभाव-संस्कार इन प्राप्तियों की अनुभूति में रहने नहीं देते हैं परन्तु बिना कर्मभोग, कर्म-बन्धन का हिसाब-किताब चुक्तू किये और अपने स्वभाव-संस्कार को बदले न हम परमधाम जा सकते हैं और न ही स्वर्ग में आ सकते हैं।

''अभी यह सारी दुनिया कब्रिस्तान बननी है। तुम जानते हो हम शिवबाबा के बनें हैं तो स्वर्ग के मालिक अवश्य बनेंगे। तो याद कर कितना खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। याद की मेहनत चाहिए। याद से पाप विनाश होंगे। तुम यह भी जानते हो कि यह पुराना शरीर है, कर्मभोग भोगना पड़ता है। बाबा-मम्मा कितना खुशी से कर्मभोग भोगते हैं। जानते हैं फिर भविष्य 21 जन्म सदा सुख में रहेंगे।''

सा.बाबा 29.04.13 रिवा.

''अभी यह कर्मभोग भोगते रहेंगे, फिर 21 जन्म के लिए इनसे छूट जायेंगे। कोई बीमारी छूटती है या कोई आफत आती है फिर हट जाती है तो खुशी होती है ना।... यह है विचार सागर मन्थन कर प्वाइन्ट्स निकालना। बाबा राय देते हैं कि ऐसे-ऐसे अपने से बातें करो। हमने 84 जन्मों का चक्र अब पूरा किया, अभी हम बाबा के पास जाते हैं, फिर स्वर्ग में आकर विश्व की बादशाही का वर्सा पायेंगे।''

सा.बाबा 29.04.13 रिवा.

ये भी वास्तविकता है कि जब सर्व कर्मभोग, कर्म-बन्धन, पुराने स्वभाव-संस्कार खत्म हो जायेंगे, माया के साथ युद्ध खत्म हो जायेगी, हम कर्मातीत बन

जायेंगे तो संगमयुग की परम-प्राप्तियों की अनुभूति भी खत्म हो जायेगी और आत्मा परमधाम जायेगी, जहाँ कोई अनुभूति नहीं है, फिर जब यहाँ नये पार्ट बजाने आयेगी तो आत्मा की उतरती कला आरम्भ हो जायेगी। भले आदि में आने वाली आत्माओं को आधे कल्प तक कोई दुख-अशान्ति नहीं होगी, भौतिक सुख-साधनों की भरमार होगी परन्तु वहाँ संगमयुग की परम-प्राप्तियों अर्थात् परमात्म-प्राप्ति, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति, परमानन्द की अनुभूति नहीं होगी। वहाँ तो इस सत्य का भी ज्ञान नहीं होगा कि यह विश्व-नाटक है, हम पार्टधारी हैं, हम उतरती कला में हैं। न वहाँ परमधाम की परम-शान्ति और परम-शक्ति की, परमात्मा के साथ के परमानन्द की, विश्व-नाटक के दिग्दर्शन के यथार्थ सुख की अनुभूति होगी। यह अनुभति त्रिलोक और त्रिकाल में कब और कहाँ भी नहीं हो सकती है। इस परम अनुभूति को न कर भविष्य के लिए सोचते रहने वाला धोखे में है और वह इस संगम के अनमोल समय को व्यर्थ गँवा रहा है।

इसका भाव ये नहीं कि हम इनसे मुक्त होने का पुरुषार्थ ही न करें क्योंकि बिना पुरुषार्थ के तो संगमयुग का सुख भी अनुभव नहीं हो सकता है। यदि हम अभी यथार्थ पुरुषार्थ नहीं करते हैं तो दोनों जहान की प्राप्तियों से वंचित हो जायेंगे अर्थात् न संगमयुग की परम-प्राप्तियों का अनुभव कर सकेंगे और न सतयुग-त्रेता की प्राप्तियों को अनुभव कर सकेंगे। इस संगमयुग का पुरुषार्थ सतयुग की प्रालब्ध से भी अधिक सुख देने वाला है। वास्तविकता ये है कि संगमयुग पर पुरुषार्थ ही प्रालब्ध है।

संगमयुग के समय का खज़ाना सबसे श्रेष्ठ खज़ाना है क्योंकि संगम पर ज्ञान सागर, सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा आकर आत्माओं से मिलते हैं और उनको सर्व खज़ानों से सम्पन्न करते हैं, जिससे आत्मा सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव करती है। संगमयुग पर परमात्मा से क्या-क्या खज़ाने मिले हैं और क्या-क्या विशेष अनुभूतियाँ हुई हैं या हो सकती हैं, जो सारे कल्प में नहीं हो सकती, वे खज़ाने और अनुभूतियाँ बुद्धि में होंगी तब ही हमको उनका नशा और खुशी रहेगी। संगमयुग की प्राप्तियों और अनुभूतियों की लम्बी लिस्ट है, जो सतयुग की प्राप्तियों से बहुत बड़ी है। संगमयुग की प्राप्तियों और अनुभूतियों पर

हर आत्मा को स्वयं ही विचार करना है।

यह कल्प का संगमयुग परम-प्राप्तियों से परिपूर्ण है और यह विश्व-नाटक अनन्त अद्भुत रहस्यों से परिपूर्ण है। वर्तमान संगमयुग भावना और विवेक का भी संगम है। जो दोनों में सन्तुलन स्थापित करके रहता है, वही इस संगमयुगी जीवन की परम-प्राप्तियों का अनुभव करता है।

''बाप यह सच्ची कमाई करने का रास्ता बताते हैं। अगर तुम अपने को आत्मा समझकर बाप को याद करने की प्रैक्टिस करते रहो तो बहुत कमाई कर सकते हो।... इस ज्ञान को समझने से खुशी का पारा चढ़ता है। गाया हुआ है - अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोपी वल्लभ के गोप-गोपियों से पूछो। ऐसे नहीं कहते कि गोपी-वल्लभ से पूछो।'' सा.बाबा 27.05.13 रिवा.

विचारणीय है कि परमात्मा पिता ने हमको क्या दिया है और क्या नहीं दिया है! इसलिए दूसरों की प्राप्तियों को न देख, उनका चिन्तन न कर, अपनी प्राप्तियों को देखना है, उनका सदुपयोग करना है और हमको क्या करना है, हमारा कर्तव्य क्या है, वह देखना है। अपने जीवन से विकारों को समूल नष्ट करना है, देही-अभिमानी बन ज्ञान की अच्छी समझ धारण कर संगम के सुखों की अनुभूतियों में रहना है और अन्य आत्माओं को यथा सम्भव संगम के सुख लेने में सहयोग करना है। बाप को याद कर अशरीरी बनने का सफल अभ्यास करना है।

बाबा ने हमको क्या दिया है, उसका यथार्थ रीति अनुभव करने वाला कभी भी दुख-अशान्ति, परेशानी, असुविधा, अप्राप्ति का अनुभव नहीं कर सकता है। परन्तु जो अपनी प्राप्तियों को न देख, इस विश्व-नाटक की यथार्थता को न जान दूसरों की प्राप्तियों को देखता है, वह सदा ईर्ष्या की अग्नि में जलता रहता है और दुखी होता है। अज्ञानतावश जो अपनी परेशानी या असुविधा के लिए दूसरों को दोषी समझता है, वह राग-द्वेष, ईर्ष्या-घृणा के वशीभूत व्यर्थ चिन्तन में अपने समय और शक्ति को नष्ट कर वर्तमान संगमयुग की खुशी को अनुभव न कर दुखी होता रहता है और जो इस विश्व-नाटक की यथार्थता को समझता है, उसके लिए कोई विघ्न, असुविधा या परेशानी है ही नहीं, जिससे वह सर्वात्माओं को निर्दोष देखता है और सदा संगमयुगी कर्तव्य को करते हुए खुश रहता है।

सदा खुशी, आदर्श और यथार्थ, भावना और विवेक का सम्बन्ध

केवल आदर्श के आधार पर खुशी सदा काल नहीं रह सकती है परन्तु जो आदर्श के साथ यथार्थ को समझकर धारणा कर खुशी को अनुभव करता है, वह सदा काल खुश रह सकता है क्योंकि यह ब्राह्मण जीवन परम सुखमय है, परमानन्दमय है, जिसका आधार यथार्थ ज्ञान है। यह संगमयुग आदर्श और यथार्थ, भावना और विवेक के सन्तुलन (Balance) का समय है। जो चारो के रहस्य को जानता है, वही इस संगम पर निविघ्न रहकर सदा खुशी का अनुभव करता है।

Q. अब प्रश्न है - खुश कौन रह सकता है और खुशी कौन बाँट सकता है?

जो ईश्वरीय प्राप्तियों से सम्पन्न होगा, जीवनमुक्त स्थिति की अनुभूति में होगा और ईश्वरीय आज्ञा अनुसार अशरीरी बनने का सतत् अभ्यास करेगा। जो भौतिक प्राप्तियों से खुशी की आशा करता है, वह स्वयं को धोखा दे रहा है। जो अपनी प्राप्तियों को न देख दूसरों की प्राप्तियों को देख रहा है, वह भी अपने को धोखा दे रहा है क्योंकि यह विविधता पूर्ण ड्रामा है, इसमें हर आत्मा की अपनी-अपनी प्राप्तियाँ हैं।

जिसको अपनी संगमयुगी प्राप्तियों का ज्ञान होगा और उसकी अनुभूति होगी, वही खुशी बाँट सकता है अर्थात् जो स्वयं उस अनुभूति में होगा, वही दूसरों को अनुभव करा सकता है।

''तुम मेरे बने गोया विश्व के मालिक बनें। तुम जानते हो शिवबाबा स्वर्ग का रचयिता है। अभी हम शिवबाबा के बच्चे बने हैं, भविष्य में स्वर्ग के मालिक बनेंगे। तो कितना खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। ... तुम यह भी जानते हो कि यह पुराना शरीर है, कर्मभोग भोगना पड़ता है। मम्मा-बाबा भी खुशी से कर्मभोग भोगते हैं, फिर भविष्य 21 जन्म कितना सुख मिलेगा।''

सा.बाबा 4.07.13 रिवा.

''कोई बीमारी छूटती जाती है तो खुशी होती है ना। तुम भी जानते हो कि अब जन्म-जन्मान्तर के लिए सभी आफतें हट जायेंगी। अभी हम बाबा के पास जाते हैं। यह सब विचार सागर मन्थन करके प्वाइन्ट्स निकालना होता है। बाबा राय बतलाते हैं कि ऐसे-ऐसे अपने साथ बातें करो। ... कितनी वण्डरफुल नॉलेज है।

बाबा रोज़-रोज़ गुह्य राज़ समझाते रहते हैं।''

सा.बाबा 4.07.13 रिवा.

खुशी और विनाश

Q. क्या खुशी और आनन्द विनाश के बाद सूक्ष्मवतन में अनुभव होगी और जो वर्तमान में खुशी का अनुभव नहीं कर रहा है, वह विनाश के बाद खुशी का अनुभव करेगा?

Q. क्या कोई आत्मा अपने पिछले जन्मों के विकर्मों के हिसाब-किताब को चुक्ता किये बिना सतयुग में जा सकेगा?

Q. आत्मिक स्वरूप परम-शान्त, परम-शक्ति, सम्पन्न है, अव्यक्त स्वरूप परमात्मा का साथ परमानन्दमय है, विश्व-नाटक परम सुखमय है, फिर भी जीवन में खुशी क्यों गायब हो जाती है। खुशी गायब न हो, उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है?

खुशी और आनन्द संगमयुग पर परमात्म-वर्सा और वरदान है, जिसके लिए बाबा ने कहा शरीर भल चला जाये परन्तु खुशी न जाये, फिर भी खुशी गायब हो जाती है, उसका कारण क्या है? सदा खुश रहने के लिए खुशी गायब होने के कारण को जानना अति आवश्यक है। यह विश्व-नाटक सुख और दुख का एक खेल है, जो अनादि-अविनाशी बना हुआ है अर्थात् दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, जिससे एक के आधार पर ही दूसरे का अस्तित्व है। वर्तमान कल्याणकारी संगम समय परमात्मा ने हमको सदा खुश रहने का वरदान दिया है अर्थात् रास्ता बताया है अर्थात् ज्ञान दिया है। उस ज्ञान के दर्पण में हम देखें तो कर्मभोग और कर्म-बन्धन का आना ही खुशी गायब होने का कारण है, जो अज्ञानता वश किये गये हमारे ही विकर्मों का परिणाम है। इन दोनों से मुक्त हो सदा खुशी में रहने के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ है इस सत्य का यथार्थ ज्ञान, उसकी धारणा और योग का सफल अभ्यास। जिससे -

1. अपने निराकारी स्वरूप, अव्यक्त स्वरूप और अकाल तख्तनशीन स्थिति में स्थित रहने से या उसके सफल अभ्यास से हम सदा खुशी में रहेंगे।

2. कर्म और फल के यथार्थ ज्ञान से कर्मभोग और कर्म-बन्धन को सहन करने

की शक्ति आयेगी और सहन करने से वह विकर्मों का खाता खत्म होगा और हम सदा खुशी में रह सकेंगे।

3. आत्मिक स्वरूप में स्थित होने से कर्मभोग की दैहिक वेदना और कर्म-बन्धन की मानसिक वेदना कम महसूस होगी और हम उसके होते भी खुशी में रह सकेंगे।

4. यथार्थ ज्ञान की धारणा और परमात्मा के साथ योगयुक्त होने से हमारी मन-बुद्धि सुकर्मों में प्रवृत्त होगी, जो संगमयुग में ही होते हैं, जिससे प्रकृति और आत्माओं के साथ के हिसाब-किताब का खराब दुखदायी खाता खत्म होगा और अच्छा सुखदायी खाता जमा होगा, जिससे हमको सदा खुशी रहेगी।

5. जब हम मन्सा-वाचा-कर्मणा, तन-मन-धन से ईश्वरीय सेवा में बिज़ी रहेंगे तो हमको बाप की और सर्वात्माओं की दुआयें मिलेंगी, जिससे हम कर्मभोग और कर्म-बन्धन होते भी खुशी और आनन्द की अनुभूति में रहेंगे।

6. बाप से जो ज्ञान खज़ाना मिला है, उसकी यथार्थ रीति अनुभूति और धारणा के लिए उसका चिन्तन करने से खुशी होती है।

7. यथार्थ ज्ञान की धारणा से जब हम वस्तु और व्यक्तियों से होने वाली प्राप्ति और परमात्मा से प्राप्त होने वाली प्राप्ति के अन्तर को समझ लेंगे तो हमारी बुद्धि वस्तु और व्यक्तियों से हट जायेगी और एक परमात्मा से लग जायेगी तो हम सदा खुश रहेंगे।

''खुशियों के सागर बाप के बने हो तो कितनी खुशी होनी चाहिए। अप्राप्ति क्या है, जो खुशी गायब हो जाती है। जहाँ प्राप्ति होती है, वहाँ खुशी होती है। जब अल्पकाल की प्राप्ति वाले भी खुश होते हैं, तो सदा काल की प्राप्ति वालों को तो सदा खुश रहना चाहिए। ... ज्ञान अर्थात् सदा खुश, अज्ञानी अर्थात् कभी-कभी खुश। तो सदा खुश रहने का दृढ़ संकल्प करके जाना।''

अ.बापदादा 22.1.77 दीदी जी के साथ

''इसलिए पहले सोचो, फिर करो। पहले करो, फिर सोचो नहीं। नहीं तो टाइम और इनर्जी वेस्ट चली जाती है। टीचर्स को तो विशेष खुशी होनी चाहिए क्योंकि टीचर्स को लिफ्ट है एक बाप और सेवा में रहने की। ... सदा हर्षित कौन रहता है? जो कहाँ भी आकर्षित न हो। अगर किसी भी तरफ चाहे प्रकृति, चाहे आत्माओं

की तरफ, ... सर्व आकर्षणों से परे, एक बाप के आकर्षण में रहने वाले सदा हर्षित रहेंगे।'' अ.बापदादा 22.01.77 टीचर्स के साथ

''सदा खुश रहो। बाप के खज़ाने का सुमिरण करते हुए सदा हर्षित रहो। इतना खज़ाना सारे कल्प में किसी जन्म में भी नहीं मिलेगा। ... सिवाए एक बाप के और कोई लगन नहीं। एक बाप दूसरा न कोई। गलती से भी दूसरी जगह बुद्धि नहीं जानी चाहिए। ... बाप की सदैव बच्चों प्रति यही आशा रहती है कि बच्चे नम्बरवन हों। नम्बरवन अर्थात् सदैव विजयी। विजयी रतन अर्थात् माया को हार खिलाने वाले, हार खाने वाले नहीं।'' अ.बापदादा 23.1.77 पार्टी

''प्योरिटी अर्थात् मन्सा में भी किसी विकार का अंश न हो और सर्व प्राप्ति अर्थात् ज्ञान, सर्व गुण और सर्व शक्तियों की प्राप्ति। अगर इनमें कोई भी प्राप्ति की कमी है तो लाइट का क्राउन स्पष्ट दिखाई नहीं देगा। ... भाग्य का आधार है सर्व प्राप्तियाँ। सर्व प्राप्तियों की निशानी है अविनाशी खुशी। भाग्य कम तो खुशी भी कम, खुशी कम अर्थात् सदा भाग्यवान नहीं। समझा।''

अ.बापदादा 28.4.77

निर्दोष-दृष्टि और निर्संकल्प, निर्भय, निर्वैर, निर्विघ्न स्थिति का सम्बन्ध

सदा खुश रहने के लिए हमारी स्थिति निर्विघ्न चाहिए और निर्विघ्न बनने के लिए निर्भय-निर्वैर होना अति आवश्यक है। विश्व-नाटक की हिस्ट्री-जॉग्राफी, उसके विधि-विधानों के यथार्थ ज्ञान की धारणा और परमात्मा के साथ से आत्मा सहज राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता, शुभाशुभ की आशंका से मुक्त निर्भय-निर्वैर, निर्संकल्प होकर परम-शान्ति, परम-शक्ति, परमानन्द, परम-सुख को स्वयं भी अनुभव करती है और शुभ-भावना, शुभ-कामना रख सर्वात्माओं के प्रति शुभ-संकल्प को धारण कर अपने वृत्ति-वायब्रेशन्स, वाणी-कर्म से अन्य आत्माओं को भी वह अनुभव कराती है और करा सकते हैं। सर्वशक्तिवान परमात्मा हमारे साथ है, उनकी छत्रछाया हमारे ऊपर है, उनका सहयोग है, उस अनुभव की अथॉरिटी बनना ही संगमयुगी ब्राह्मण जीवन की परम-प्राप्ति है और ब्राह्मणों का परम-कर्तव्य है।

''परमपिता परमात्मा है निराकार, उनको निर्भय, निर्वैर कहा जाता है। उनका कोई के साथ वैर नहीं है। तुम्हारा भी कोई के साथ वैर नहीं है। तुम सबके कल्याणकारी हो। अगर किसका, किसके साथ बैर है तो उनको हॉफ कास्ट कहेंगे अर्थात् आधा शूद्र और आधा ब्राह्मण। जब विकारों की खाद कम्पलीट निकल जायेगी, तब सच्चा ब्राह्मण कहेंगे। अभी तो आधा-आधा है।''

सा.बाबा 20.09.13 रिवा.

''अभी हम बेहद के बाप के बच्चे हैं, हम ईश्वरीय गोद में बैठे हैं। ऐसी ईश्वरीय गोद को कौन छोड़ेंगे। तुमको इस ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को समझना है।... तुमको बिल्कुल निर्भय रहना है। शरीर को कोई मारता है परन्तु आत्मा को थोड़ेही मार सकता है। तो डरना क्यों चाहिए! निर्भय होने की भी बड़ी समझ चाहिए। बाप भी निर्भय है, तो बच्चों को भी निर्भय बनना है।''

सा.बाबा 20.09.13 रिवा.

पुरुषार्थ, प्राप्तियाँ और अनुभूतियाँ

ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा से हमको अनेक प्रकार की प्राप्तियाँ हुई हैं, उन सबकी आत्मा को अनुभूति हो तो उसके सामने न कोई विघ्न होगा और न कोई प्रकार की दुख-अशान्ति होगी, आत्मा सदा खुशी का अनुभव करेगी। उन प्राप्तियों का ज्ञान प्राप्त कर, उनका मनन-चिन्तन कर अनुभूति करने का पुरुषार्थ करने वाला सदा खुशी में रहता है। इसलिए बाबा ने अनेक बार कहा है - बाबा से जो प्राप्तियाँ हुई हैं, उनकी अनुभूति की अथॉरिटी बनें। जब हम उनकी अनुभूति की अथॉरिटी बनेंगे तो स्वयं भी खुशी में रहेंगे और दूसरों को भी उनकी अनुभूति करा सकेंगे।

Q. अभी संगमयुग पर बाबा से हमको जो स्थूल-सूक्ष्म साधन-सम्पत्ति के रूप में परम-प्राप्तियाँ हैं, जो हमको परम-शान्ति, परम-शक्ति, परमानन्द, परम-सुख को अनुभव कराने वाली हैं, उनको पाकर भी हम उस अनुभूति को नहीं कर रहे हैं या कर पा रहे हैं, उसका कारण क्या है?

परमात्मा से हमको जो स्थूल-सूक्ष्म साधन-सम्पत्ति मिली है, उसके महत्व को हम यथार्थ रीति अनुभूति नहीं कर रहे हैं और बाबा ने जो पुरुषार्थ बताया है, वह नहीं

कर रहे हैं, जिससे उससे प्राप्त होने वाली परम अनुभूति नहीं कर रहे हैं। इस संगम युग की परम-प्राप्तियों की अनुभूति न होना सिद्ध करता है कि हमने संगम की परम-प्राप्तियों के महत्व को नहीं जाना है और बाबा का बताया हुआ पुरुषार्थ यथार्थ रीति नहीं किया है। बाबा ने हमको जो ज्ञान दिया है, परम-प्राप्तियों की अनुभूति का साधन है और हमारी स्थिति का दर्पण भी है। यदि हम संगमयुग की परम-प्राप्तियों की अनुभूति नहीं कर रहे हैं या नहीं कर पा रहे हैं तो अवश्य ही हम व्यर्थ चर्चा, व्यर्थ चिन्तन, व्यर्थ खान-पान, अधिक खान-पान, व्यर्थ संग, विलासितापूर्ण जीवन में, शुभाशुभ की आशंका में, इच्छाओं-आकांक्षाओं आदि में फँसे हुए हैं, जिसके कारण हम यह अनुभूति नहीं कर पा रहे हैं। हमको यथार्थ चिन्तन करके इस संगमयुग की परम-प्राप्तियों के महत्व को अनुभव करना है, तब ही हम उनके सुख को अनुभव कर सकेंगे और अन्य आत्माओं को भी करा सकेंगे।

''सदा सन्तुष्ट रहने वाला ही बाप के समीप रह सकता है। सन्तुष्टता बाप के समीप ले जाने का साधन है। सन्तुष्टता नहीं तो सदा बाप से दूर हैं। जो कुछ होता है, उसको बीती सो बीती करते हुए परखने की शक्ति से परखते हुए चलते चलो तो सदा सन्तुष्ट रहेंगे। ... सभी खज़ाने जमा होंगे तब सम्पन्न कहेंगे। सब हैं, इसमें भी सन्तुष्ट नहीं रहना लेकिन इतना है, जो स्वयं भी खा सकें और दूसरों को भी सम्पन्न बना सकें।''

अ.बापदादा 05.05.77 ग्रुप

''परमात्मा सारी सृष्टि पर रहम करते हैं। पाँच तत्वों सहित सबको तमोप्रधान से सतोप्रधान बना देते हैं। ... यह भी ड्रामा बना हुआ है। आत्माओं के पवित्र बनने से हर चीज़ पवित्र बन जाती है। सतयुग में तत्व भी सतोप्रधान होते हैं, वहाँ कभी कोई बूढ़े नहीं होते हैं। ... पवित्र बनने के लिए कितने सितम सहन करने पड़ते हैं। बाप कहते हैं - बच्चे, इसमें पूरा नष्टोमोहा बनना पड़े।''

सा.बाबा 24.9.13 रिवा.

''अभी ज्ञान से बाप का सदा साथ है, तो जो बाप के सदा साथी हैं, वे सदा निर्विघ्न हैं और जो निर्विघ्न होगा, वह सदा खुश रहेगा। विघ्न खुशी को गायब करते हैं। अगर मास्टर सर्वशक्तिवान भी विघ्नों से परेशान हों तो दूसरे बेचारे क्या होंगे! तो

मास्टर सर्वशक्तिवान कभी भी परेशान नहीं हो सकते। किसी के स्वभाव-संस्कार को न देखो, अपने अनादि स्वभाव-संस्कार को देखो और बाप के स्वभाव-संस्कार को देखो।''

अ.बापदादा 05.05.77 ग्रुप

यह संगमयुग ही परमात्म-प्यार की अनुभूति का समय है, जो सर्व प्राप्तियों और अनुभूतियों का आधार है। निर्दोष-दृष्टि और निर्विघ्न स्थिति संगमयुग की परम-प्राप्ति है। निर्विघ्न आत्मा सदा ही अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति में रहती है क्योंकि आत्मा का मूल स्वरूप सच्चिदानन्दमय है।

Q. क्या हम संगमयुग से थक गये हैं? यदि थक गये हैं तो उसका कारण क्या है, यदि नहीं थके हैं और कभी भी न थकें, उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है?

यदि हम थक गये हैं तो उसका कारण है संगमयुग की प्राप्तियों का यथार्थ ज्ञान नहीं, उनकी अनुभूति नहीं, उनकी अनुभूति का सफल और सतत् अभ्यास नहीं।

परमात्मा के हाथ और साथ की जो अनुभूति अभी संगमयुग पर यहाँ है, वह अनुभूति तीनों कालों और तीनों लोकों में कहाँ और कभी नहीं है और न हो सकती है।

ज्ञान सागर परमात्मा से जो ज्ञान-धन मिला है, उसकी जो अभी अनुभूति है, वह तीनों कालों और तीनों लोकों में कहाँ और कभी भी नहीं है।

आत्मिक स्वरूप में स्थित हो निर्संकल्प, निर्विकल्प, शुभ-संकल्प की स्थिति में जो परम-शान्ति, परम-शक्ति, परमानन्द, परम-सुख की अनुभूति अभी है, वह तीनों लोकों और तीनों कालों में कहाँ और कब भी नहीं हो सकती है।

आत्मिक स्वरूप परम-शान्त और परम-शक्ति सम्पन्न है। अभी ही हम अपने मूल स्वरूप में स्थित हो निर्संकल्प स्थिति में स्थित हो उस परम-शान्ति और परम-शक्ति की अनुभूति कर सकते हैं, जो परमधाम में नहीं हो सकती है।

अभी परमात्मा का हाथ हमारे सिर पर है, उसका साथ है, उसके हाथ में हमारा हाथ है, हम उसके साथ विश्व नव-निर्माण के कर्तव्य में सहयोगी हैं, उससे जो परमानन्द की अनुभूति होती है, वह त्रिलोक और त्रिकाल में कहाँ और कभी नहीं हो सकती है। परमात्मा की छत्रछाया हमारे ऊपर है, उसका जो सुखद अनुभव

अभी है, वह त्रिकाल और त्रिलोक में कहाँ और कभी नहीं हो सकता है।

ज्ञान सागर परमात्मा ने अभी हमको जो विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान दिया है, उसके विधि-विधान बताये हैं, उनको यथार्थ रीति समझकर अपने अकाल तख्तनशीन होकर साक्षी स्थिति में स्थित हो इस विश्व-नाटक का दिग्दर्शन करने और उसकी अनुभूति का जो परम-सुख आत्मा अभी अनुभव करती है या कर सकती है, वह तीनों लोकों और तीनों कालों में कहाँ नहीं हो सकता है। बाबा ने हमको ट्रस्टीपन का जो ज्ञान दिया है और पाठ पढ़ाया है, उस स्थिति में स्थित होने से जो परम-सुख की अनुभूति होती है, वह त्रिकाल और त्रिलोक में कहाँ भी नहीं हो सकती है।

बाबा ने हमको यथार्थ ज्ञान देकर जो शुभ-संकल्प का पाठ पढ़ाया है और शुभ-कर्मों को करने का विधि-विधान बताया है अर्थात् आत्म-कल्याण और विश्व-कल्याण का जो कर्तव्य सिखाया है, उस कर्तव्य में तत्पर रहने से जो सुख और आनन्द की अनुभूति होती है, वह त्रिलोक और त्रिकाल में कहाँ और कभी भी नहीं हो सकती है।

सारा कल्प उतरती कला का ही समय और स्थिति है, यह वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुग का समय और परमात्मा का साथ ही एकमात्र चढ़ती कला का है, जिसके महत्व का वर्णन सारे शास्त्र और धर्म-ग्रन्थ करते हैं, सब धर्म-पिताओं ने उसकी महिमा गाई है। इस सत्य को समझने से अभी आत्मा को जो अद्वितीय सुख की अनुभूति होती है, वह त्रिलोक और त्रिकाल में कहाँ और कब भी नहीं हो सकती है। संगमयुग के अतिरिक्त सारा कल्प तो उतरती कला का ही है, जो सतयुग आदि से ही आरम्भ हो जाती है, भले ही वहाँ सुख-साधनों की भरमार होने के कारण आत्मा उसकी अनुभूति उस समय नहीं करती है, परन्तु समयान्तर में तो होती ही है।

''सदा भाग्य-विधाता बाप द्वारा प्राप्त हुए अपने भाग्य को सुमिरण करते हुए, सदा हर्षित रहते हो? क्योंकि सारे कल्प के अन्दर सर्वश्रेष्ठ भाग्य इस समय ही प्राप्त करते हो। इस समय ही सदा भाग्यशाली स्थिति का अनुभव कर सकते हो। भविष्य नई दुनिया में भी ऐसा भाग्य प्राप्त नहीं होगा। तो जितना बाप बच्चों को

श्रेष्ठ भाग्यशाली समझते हैं, उतना ही हर एक स्वयं को समझते हुए चलते हो? इसको ही कहा जाता है स्वमान में स्थित होना।''

अ.बापदादा 14.05.77

''अगर माया का बार-बार वार होता रहेगा तो अतीन्द्रिय सुख का अनुभव चाहते हुए भी कर नहीं पायेंगे। जो गायन है कि अतीन्द्रिय सुख संगमयुग का वरदान है - यह और किसी युग में नहीं होता है। यह अब का ही अनुभव है। अगर अभी अतीन्द्रिय सुख का अनुभव नहीं किया तो ब्राह्मण बनकर क्या किया! ब्राह्मणपन की विशेषता ही है - अतीन्द्रिय सुख। वह नहीं किया तो कुछ भी नहीं।''

अ.बापदादा 14.05.77 पार्टी

''सर्व द्वारा मान माँगने से नहीं मिलता है, लेकिन सम्मान देने और स्वमान में स्थित होने से, प्रकृति दासी के समान, स्वमान के अधिकार के रूप में मान प्राप्त होता है। ... स्वमान में रहने वालों का सिर्फ इस एक जन्म में मान नहीं होता, लेकिन सारे कल्प में मान होता है। ... इस एक जन्म में किये हुए इस पुण्य का फल सारा कल्प मिलता है। ... सम्मान मिले - यह लेने की भावना भी रॉयल बेगरपन अर्थात् भिखारीपन है।'' अ.बापदादा 14.5.77

यह संगमयुग ही सारे कल्प में तीनों लोकों और तीनों कालों के गौरवमय स्वरूपों की अनुभूति का समय है। और तो सारे कल्प का पार्ट इसकी परछाई मात्र ही है अब प्रश्न है कि आत्मा ऐसे परम-प्राप्तियों से परिपूर्ण संगमयुग पर थक क्यों गई है या थक क्यों जाती है? इस तथ्य पर विचार करेंगे तो देखेंगे कि आत्मा द्वारा आधे कल्प से किये गये विकर्मों और पाप-कर्मों का जो बोझ सिर पर है, जिसके फलस्वरूप आत्मा को कर्मभोग और कर्म-बन्धन से जो दुख-अशान्ति की अनुभूति होती है, वह थका रही है। परन्तु प्रश्न यह भी है कि क्या हम आत्मा पर चढ़े उस बोझ को कर्मभोग या कर्मयोग के द्वारा खत्म किये बिगर कर्मभोग और कर्म-बन्धन से छूट सकते हैं। इस सत्य का भी बाबा ने हमको ज्ञान दिया है कि कोई भी आत्मा इस बोझ को समाप्त कर कर्मातीत बनने के बिना परमधाम नहीं जा सकती है और जब परमधाम नहीं जा सकती तो सतयुग में जाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता है। इसलिए बाबा ने कहा है - इस बोझ को उतारने के लिए आये हुए कर्मभोग और

कर्म-बन्धन को खुशी-खुशी सहन करो और उसको सहन करने के लिए ही कर्मयोग का विधि-विधान बताया है। कर्मयोग के सफल अभ्यास से जब आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होगी तो कर्मभोग और कर्म-बन्धन से उत्पन्न वेदना कम महसूस होगी और उससे जो वृत्ति और वायब्रेशन्स पैदा होंगे, वे उसको हल्का कर देंगे। कर्मयोग से उत्पन्न वृत्ति और वायब्रेशन्स जड़-जंगम-चेतन तीनों को प्रभावित करते हैं और उनकी प्रतिक्रिया आत्मा पर होती है, जो आत्मा के कर्मभोग और कर्म-बन्धन की वेदना को हल्का कर देती है।

इस प्रकार इस सत्य पर विचार करें तो यथार्थ ज्ञान की कमी ही इसका मूल कारण है, इसलिए मनन-चिन्तन कर ज्ञान की यथार्थता को समझकर अपने आत्मिक स्वरूप में रहना या उसका सतत् अभ्यास ही संगमयुग के परम-सुख, परमानन्द, परम-शान्ति, परम-शक्ति की अनुभूति में रहने का आधार है और संगमयुग पर किसी भी प्रकार की थकावट से मुक्त सदा उमंग, उल्लास में रहने का एकमात्र साधन है।

''सबसे बड़े ते बड़ा संगम का अनादि लॉ कौनसा है? ड्रामा प्लेन अनुसार एक का लाख गुणा प्राप्ति और पश्चाताप अर्थात् भोगना। यह लॉ अर्थात् नियम ऑटोमेटिकली चलता ही रहता है। बाप को स्थूल रीति-रस्म माफिक कहना वा करना नहीं पड़ता है कि इस कर्म का यह लेना वा इस कर्म की सज़ा यह है। लेकिन यह ऑटोमेटिक मशीनरी है, जिस मशीनरी को बच्चे जान नहीं सकते, इसलिए गाया है - कर्मों की गति अति गुह्य है।'' अ.बापदादा 3.5.77

''बाप को जान लिया, वर्सा भी पा लिया... प्राप्ति का अनुभव भी करने लग गये, ईश्वरीय नशा, प्राप्ति का नशा भी चढ़ने लगा, प्रारब्ध का निशाना भी दिखाई देने लगा लेकिन आगे क्या हुआ? माया की चैलेन्ज को सफलता पूर्वक सामना नहीं कर पाया।... इसलिए माया को बलवान देखकर दिल-शिकस्त हो जाते हैं, थक जाते हैं।'' अ.बापदादा 3.5.77

''कोई अपने में बाप के डॉयरेक्ट साथ और सहयोग लेने की हिम्मत न देख, राह पर चलने वाले साथियों को ही पण्डा बना लेते अर्थात् उन द्वारा ही साथ और सहयोग की प्राप्ति समझते हैं। बाप के बजाए कोई आत्मा को सहारा समझ लेते हैं,

इसलिए बाप से किनारा हो जाता है। तिनके को अपना सहारा समझने के कारण बार-बार तूफानों में हिलते और गिरते रहते हैं और सदैव किनारा दूर अनुभव करते हैं।''

अ.बापदादा 3.05.77

''ऐसे ही कोई व्यक्ति के सहारे के साथ-साथ किसी न किसी प्रकार के सेलवेशन के आधार पर चलने का प्रयत्न करते हैं।... ऐसे सेलवेशन रूपी लाठी के आधार पर चलते रहते हैं अर्थात् अविनाशी बाप का आधार न ले, अल्पकाल के अनेक आधार बना लेते हैं। जो आधार विनाशी और परिवर्तनशील हैं। ... इसलिए स्थिति भी एकरस नहीं रहती, बार-बार परिवर्तन होती रहती है।''

अ.बापदादा 3.05.77

''63 जन्मों के हिसाब यहाँ ही चुक्तू होने हैं, अपने पिछले संस्कार-स्वभाव बाहर इमर्ज हो सदा के लिए समाप्त हो रहे हैं, उस कर्मों की गुह्य गति को न जान घबरा जाते हैं। ... इन व्यर्थ संकल्पों की उलझन के कारण पार नहीं कर पाते हैं, सोचने में ही टाइम वेस्ट कर देते हैं। कोटों में कोई ही तूफानों को भी ड्रामा का तोहफा समझ स्वभाव-संस्कारों की टक्कर को आगे बढ़ने का आधार समझ, माया को परखते हुए पार करते, सदा बाप को साथी बनाते हुए साक्षी होकर हर पार्ट को देखते सदा हर्षित हो चलते रहते हैं।''

अ.बापदादा 3.05.77

''याद रखो - सच्चे बाप को अपने जीवन की नैया दे दी, तो सत्य के साथ की नाँव हिलेगी लेकिन डूब नहीं सकती, इसलिए बाप को जिम्मेवारी देकर वापस नहीं ले लो। ... इस देहाभिमान के मैंपन का अभाव हो (खत्म करो)। ... अपनी जिम्मेवारी सिर्फ एक समझो - जैसे बाप चलाये, वैसे चलेंगे; जो बाप कहे, वह करेंगे; जिस स्थिति के स्थान पर बिठाये, वहाँ बैठेंगे; श्रीमत में मैंपन की मनमत को मिक्स नहीं करेंगे तो पश्चाताप से परे, प्राप्ति स्वरूप और पुरुषार्थ की सहज गति को प्राप्त करेंगे।''

अ.बापदादा 3.05.77

''घबराओ नहीं लेकिन गहराई में जाओ क्योंकि वर्तमान अन्तिम समय समीप होने के कारण एक तरफ अनेक प्रकार के रहे हुए हिसाब-किताब, स्वभाव-संस्कार वा दूसरे के सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा बाहर निकलेंगे अर्थात् अन्तिम विदाई लेंगे। बाहर

निकलते हुए अनेक प्रकार की मानसिक परीक्षाओं रूपी बीमारियों को देखकर घबराओ नहीं, लेकिन इस अति को अन्त की निशानी समझो।''

अ.बापदादा 3.05.77

''दूसरी तरफ अन्तिम समय समीप होने के कारण कर्मों की गति की मशीनरी भी तेज रफ्तार से दिखाई देगी। धर्मराजपुरी के पहले यहाँ ही कर्म और उसकी सज़ा के साक्षात्कार होंगे। यदि सत्य बाप के सच्चे बच्चे बन, सत्य स्थान के निवासी बन, ज़रा भी असत्य कर्म किया तो प्रत्यक्ष दण्ड के अनेक वण्डरफुल रूप के साक्षात्कार यहाँ ही होंगे। ब्राह्मण परिवार वा ब्राह्मणों की भूमि पर पाँव ठहर नहीं सकेंगे। हर दाग़ स्पष्ट दिखाई देगा, छिपा नहीं सकेंगे। स्वयं अपनी गलती के कारण मन उलझता हुआ टिक नहीं सकेगा।''

अ.बापदादा 3.05.77

''सम्पन्न बनने में ही वण्डरफुल बातें देखेंगे क्योंकि यह प्रैक्टिकल पेपर होगा।... घबरायेंगे नहीं, और ही राज़युक्त, योगयुक्त हो, लाइट-हाउस हो वायुमण्डल को डबल लाइट बनायेंगे। ... कमजोर को पहाड़ लगेगा और मास्टर सर्वशक्तिमान को राई अनुभव होगा। प्रैक्टिकल पेपर पास करने के ही नम्बर बनते हैं। ... श्रेष्ठ पुरुषार्थी पेपर को खेल समझते हैं। खेल में घबराया नहीं जाता है, खेल तो मनोरंजन होता है।'' अ.बापदादा 3.05.77 दीदी जी से

''बाप ने कहा - साथी का हाथ पकड़ कर चलो, परन्तु साथ छोड़कर अपने ऊपर बोझ उठाकर चलते हो तो मुश्किल लगता है। ... यह भी नहीं कह सकते हो कि मेरे पिछले संस्कार हैं। पिछले संस्कार हैं अर्थात् मरजीवा नहीं बने हैं। जब मरजीवा बन गये तो नया जन्म, नये संस्कार होने चाहिए। पिछले संस्कार पिछले जन्म के हैं, इस जन्म के नहीं। वह कुल ही दूसरा और यह कुल ही दूसरा। वह शूद्र कुल और यह ब्राह्मण कुल।'' अ.बापदादा 3.05.77 दीदी जी से

बाबा के उपयुक्त महावाक्यों पर विचार करें तो पुराने रहे हुए कर्मों के हिसाब-किताब चुक्ता होने ही हैं और भविष्य नई दुनिया में नम्बरवार पद पाने के लिए परीक्षायें भी होनी ही हैं, जिसके फलस्वरूप कर्मभोग और कर्म-बन्धन का आना अवश्य सम्भावी है। इसलिए घबराना नहीं है, एक बाप का ही सहारा और

एक बाप को ही आधार बनाकर रखना है, जिससे उनको सहज पार कर लेंगे।

अभी हमारा नया ब्राह्मण जन्म है, इसलिए उसकी कुल-मर्यादा अनुसार हमको अपना तन-मन-धन, बुद्धि उसके कर्तव्य में ही लगी रहे, जिससे इस संगमयुग पर कोई नया पाप कर्म न हो, सदा ही शुभ कर्म हों।

घबराने के बजाये ज्ञान सागर बाबा ने जो ज्ञान दिया है, उसकी गहराई में जाकर संगमयुग की परम-प्राप्तियों की अनुभूति करते हुए सदा हर्षित जीवनमुक्त स्थिति में रहना है। आत्मिक स्वरूप परम-प्राप्तियों से सम्पन्न है। बुद्धि में दृढ़ निश्चय रहे कि हम सर्वशक्तिमान बाप के बनें हैं, बाप की छत्रछाया हमारे ऊपर है, बाप का हाथ और साथ है, इसलिए हमारे जीवन में असफलता हो नहीं सकती।

''अभी यहाँ तुम्हारी बुद्धि का ताला खुला हुआ है। तुम इस ड्रामा के एक्टर्स हो। तुम अभी इस ड्रामा के क्रियेटर, डॉयरेक्टर, मुख्य एक्टर्स, ड्युरेशन आदि को जानते हो। यह नॉलेज जिसकी बुद्धि में रहेगी, उसको अपार खुशी रहेगी। ... गॉड फादर को ही नॉलेजफुल, वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी कहा जाता है। वही आकर संगम पर रचयिता और रचना की नॉलेज देते हैं।''

सा.बाबा 16.09.13 रिवा.

''तुमको ज्ञान सागर बाप द्वारा कितनी बड़ी नॉलेज मिली है। तो तुम्हारा मगज़ ज्ञान से कितना भरपूर रहना चाहिए, तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। ... इस समय तुम बच्चे मास्टर नॉलेजफुल बनते हो। बाकी आत्मा जो तमोप्रधान बनी है, उसको सतोप्रधान बनाना है। अभी तक कोई सतोप्रधान नहीं बना है। ... सतोप्रधान जब बन जायेंगे तो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सबकी कर्मातीत अवस्था हो जायेगी।''

सा.बाबा 16.09.13 रिवा.

''अभी तुम तीनों लोकों और तीनों कालों को जान गये हो। तुम्हारी बुद्धि में सतयुग से लेकर कलियुग तक का सब राज़ है। तुम्हारे अन्दर यह ज्ञान टपकता रहे तो सदैव खुशी में रहेंगे। यह ज्ञान होने से चिन्ता फिकर की कोई बात नहीं रहती है, तुम फिकर से फारिग हो जाते हो। ... तुम जानते हो - अभी बाप हमको अपने जैसा बना रहे हैं, उनमें जो नॉलेज है, वह आत्माओं को दे रहे हैं।''

सा.बाबा 16.09.13 रिवा.

ड्रामा के राज

''जब तीनों कालों के राज़ को जान गये तो राज़ी हो गये हो ना! कभी भी कोई नाराज़ होता है अर्थात् ड्रामा के राज़ को भूल जाता है। जो सदा ड्रामा के राज़ को और तीनों कालों के राज़ को जानता है, वह सदा राज़ी रहेगा। ... तीनों कालों को जानने वाला सदा राज़ी और खुश रहता है। कभी भी कोई नाराज़ होता है अर्थात् ड्रामा के राज़ को भूल जाता है।'' अ.बापदादा 29.1.77 मधुबन निवासी

''ज्ञान सागर की लहरों में लहराने का अनुभव तो किया, अब ज्ञान सागर के तले में जाना है। अमूल्य खज़ाने सागर के तले में मिलते हैं। ... यह एकाग्रता की शक्ति बढ़ानी है। जितना भी समय मिले, दो मिनट, पाँच मिनट चले जाओ इस एकाग्रता की शक्ति में।'' अ.बापदादा 28.01.77 दीदी जी के साथ

सागर के तले में जाना अर्थात् निर्संकल्प होकर अपनी मूल स्थिति में स्थित हो जाना अर्थात् बाप समान बन जाना या फरिश्ता बन अव्यक्त बापदादा से मिलन मनाना। ड्रामा के ज्ञान की यथार्थ रीति धारणा वाला ही सहज निर्संकल्प होकर इस स्थिति में स्थित होकर परम-शान्ति, परम-शक्ति और अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कर सकेगा।

बाबा ने कहा है - ड्रामा के राज़ को जानने वाला कब नाराज़ नहीं हो सकता है। इसलिए ही ज्ञान सागर बाबा ने हमको इस ड्रामा के सब राज़ विस्तार से बताये हैं परन्तु वे सदा हमारी बुद्धि में जागृत रहें, उसके लिए उन सब पर विचार सागर मन्थन करके, उनके अनुभूति की अथॉरिटी बनना है। इसलिए बाबा ने कहा है कि अनुभव की अथॉरिटी बनों, अनुभव सबसे श्रेष्ठ अथॉरिटी है।

बाबा की मुरली को यथार्थ रीति देखें तो ज्ञान सागर बाबा ने हमको ड्रामा के अनेकानेक राज़ बताये हैं परन्तु कुछ राज़ जो अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति के लिए बुद्धि में जागृत रहना अति आवश्यक है, उन पर यहाँ कुछ विचार किया गया है।

यह विश्व-नाटक आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का अनादि-अविनाशी खेल है अर्थात् जो इस खेल को यथार्थ रीति समझ लेता है, वह साक्षी होकर देखते और खेल भावना से ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए इसका परमानन्द अनुभव करता है।

निर्दोष दृष्टि - यह अनादि-अविनाशी ड्रामा है, हर आत्मा में अनादि-अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है, जो उसको बजाना ही है। इसलिए हर आत्मा निर्दोष है, हमको किसके पार्ट से ईर्ष्या-घृणा नहीं होनी चाहिए।

अहंकार-हीनता से मुक्त - यह वैराइटी ड्रामा है इसलिए सभी आत्माओं के गुण-धर्म, संस्कार-स्वभाव, प्राप्तियाँ भी वैराइटी अवश्य होंगी। इसलिए ड्रामा के राज को जानने वाले के मन में किसके पार्ट और प्राप्तियों को देखकर अहंकार-हीनता की भावना नहीं आयेगी।

जन्म-मृत्यु का राज़ - इस विश्व-नाटक में जन्म और मृत्यु आत्मा के लिए एक वरदान हैं, जो आत्मा को पार्ट बजाने के लिए नवजीवन प्रदान करते हैं। जो इस रहस्य को जानकर धारणा स्वरूप होगा, उसको न मृत्यु का कोई भय होगा और न मृत्यु-दुख होगा। यथार्थ दृष्टि से देखें तो जन्म-मृत्यु आत्मा के लिए वस्त्र बदलना है। इसलिए मृत्यु इस विश्व-नाटक में सबसे अच्छी घटना है परन्तु देहाभिमान के वश अभिशाप अनुभव होती है।

''कोई ईश्वर से वर्सा लेते-लेते चला जाता है तो जरूर उनको कोई और पार्ट बजाना होगा, इससे भी जास्ती कोई कार्य करना है। तुम बच्चों को सदैव बुद्धि में रखना है - अहो सौभाग्य, जो हमारा ही पार्ट है कल्प पहले मुआफिक बाप के मददगार बनने का। मददगार बनते-बनते कोई जनरल भी मर पड़ते हैं। हम समझते हैं - ड्रामा अनुसार ही यह सब कुछ होता है। हमको उसके लिए कोई फिकर नहीं करना है।'' सा.बाबा 17.08.13 रिवा.

Q. आज हर आत्मा को मृत्यु का भय रहता है, सतयुग-त्रेता में भय क्यों नहीं होता है?

जब आत्मा देहाभिमान के वश होती है, आत्मा पर विकर्मों का बोझा होता है तो उसको मृत्यु का भय होता है। भले ही सतयुग-त्रेता में आत्मा का पुण्य का संचित खाता दिनोंदिन क्षीण होता जाता है, परन्तु विकर्मों का बोझा न होने के कारण मृत्यु का भय नहीं होता है और आत्मा समय पर सहज देह का त्याग कर नयी देह धारण करती है।

हू-ब-हू पुनरावृत्ति का राज़ अर्थात् जो हुआ, वह बच नहीं सकता और जो नहीं

हुआ, वह हो नहीं सकता। यह विश्व-नाटक हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है परन्तु बाबा ने इस राज़ के साथ यह राज़ भी बताया है कि इसमें जो हुआ अच्छा हुआ; जो हो रहा है, वह अच्छा है और जो होगा, वह भी अच्छा होगा।

यह विश्व-नाटक **विविधतापूर्ण और सतत् परिवर्तनशील** है। इसकी विविधता, भिन्नता और परिवर्तनशीलता ही इसकी शोभा है।

विश्व-नाटक की स्वत: गतिशीलता का राज़ अर्थात् यह विश्व-नाटक स्वत: और सतत् गतिशील है।

उतरती कला और चढ़ती कला का राज़ अर्थात् सतोप्रधानता से तमोप्रधानता और तमोप्रधानता से सतोप्रधानता का राज़ - हर आत्मा को सतोप्रधान होकर वापस घर जाना है और फिर अपने समय पर आकर पार्ट बजाते हुए सतो, रजो, तमो में आना ही है। तमोप्रधान बनते, तब ही परमपिता परमात्मा आकर सतोप्रधान बनाते हैं।

कर्म और फल, पुरुषार्थ और प्राप्ति का राज़ - हर आत्मा को कोई भी प्राप्ति, उसके कर्म के फलस्वरूप ही मिलती है और हर आत्मा को अपने अच्छे-बुरे कर्म का फल भोगना ही होता है। एक आत्मा के कर्म का फल दूसरी आत्मा नहीं भोग सकती है।

विश्व-नाटक की सत्यता, न्यायपूर्णता और कल्याणकारिता का राज़ -

इस अनादि-अविनाशी नाटक में हर आत्मा के पार्ट में सुख-दुख का समान अनुपात है, इसलिए किसी भी आत्मा को इसकी न्यायपूर्णता पर कुछ सोचने या कहने की मार्जिन नहीं है। अन्तर्दृष्टि से देखें तो इसकी हर घटना कल्याणकारी है।

विश्व-नाटक की कलम (सेपलिंग) का राज़ अर्थात् सृष्टि-चक्र के परिवर्तन का राज़ अर्थात् इस विश्व-नाटक की रचना का राज़। इस नाटक की कभी नई रचना नहीं होती है, परन्तु इसकी कलम लगती है, जिससे कल्प-कल्प इसका नव-निर्माण होता है।

''अगर कोई अच्छी सर्विस करते-करते चला जाता है तो समझना चाहिए कि जो भी कोई जाता है, उसे जाकर और कहाँ पार्ट बजाना है। इसमें संशय की कोई बात

नहीं है। कोई न कोई कल्याण के कारण यह सब कुछ होता है क्योंकि बाप कल्याणकारी है और यह संगमयुग है ही कल्याणकारी। हर बात में कल्याण समझ कर फखुर में रहना है क्योंकि हम ईश्वरीय सन्तान है।''

सा.बाबा 17.08.13 रिवा.

वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुग का राज- अभी कल्प का संगमयुग है, जो आत्माओं और जड़-जंगम प्रकृति की चढ़ती कला का समय है, इसलिए इसको पुरुषोत्तम संगमयुग कहते हैं। अभी ही ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं और विश्व का नव-निर्माण करते हैं। अभी हमारा परमात्मा के साथ पार्ट है, उनका वरदानी हाथ और कल्याणमयी छत्रछाया हमारे ऊपर है। उनकी हमारे को मदद है और हम उनके विश्व-परिवर्तन के कार्य में मददगार हैं।

मुक्ति-जीवनमुक्ति का राज़ - मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है अर्थात् हर आत्मा को अवश्य ही मिलती है।

विश्व में राजाई की स्थापना और संचालन का राज़ - वर्तमान विश्व में सभी देशों में प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था है, परमात्मा आकर प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा विश्व में राजशाही की राज-व्यवस्था स्थापित करते हैं। जब राजाई की स्थापना होती है तो राजाई में राजा-रानी, दास-दासी, साहूकार-ग़रीब प्रजा आदि सब होंगे और वह राजाई समयान्तर में परिवर्तन भी अवश्य होगी, उसका आधार भी यहाँ का पुरुषार्थ ही बनेगा। विश्व में आदि से अन्त तक राजाई की राज-व्यवस्था चलती है, प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था कलियुग के अन्त में बहुत थोड़े समय के लिए आती है।

भारत के उत्थान-पतन और विस्तार एवं संकुचन का राज़ - भारत क्या था, अभी क्या है और भविष्य में क्या होगा, उसका राज़ भी बाबा ने बताया है। भारत ही अविनाशी खण्ड है क्योंकि अविनाशी बाप यहाँ ही अवतरित होते हैं अर्थात् यह अविनाशी परमात्मा की अवतरण भूमि है।

विश्व-नाटक में आत्माओं के परस्पर हिसाब-किताब बनने, कल्पान्त में पुराने दुखदाई हिसाब-किताब समाप्त होने और भविष्य के लिए नये सुखदाई सम्बन्ध बनने का राज़ भी बाबा ने बताया है, जो बड़ा ही समझने योग्य है।

आत्मा के संकल्पों का प्रभाव जड़-जंगम-चेतन तीनों पर पड़ता है। जब हमारी दूसरों के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना होगी तो उनकी भी अवश्य हमारे प्रति अवश्य ही शुभ-भावना, शुभ-कामना होगी।

आत्माओं के आत्माओं के हिसाब-किताब के समान ही आत्माओं के प्रकृति के साथ भी हिसाब-किताब का खेल चलता है, उसका राज़ भी बाबा ने बताया है। जड़-जंगम प्रकृति के साथ के हिसाब-किताब के कारण ही आत्माओं को कर्मभोग भोगना होता है।

ड्रामा में हर आत्मा को अपनी-अपनी विशेष प्राप्तियाँ हैं। जो अपनी प्राप्तियों को देखता है, उनका सुख लेता है, वह सदा सुखी रहता है और मन्सा-वाचा-कर्मणा खुशी बाँटता रहता है। जो दूसरों की प्राप्तियों को देखता है, वह ईर्ष्या-घृणा की अग्नि में जलता रहता है और सदा दुखी रहता है। इसलिए बाबा ने हमको सिखाया है - तुमको अपनी कमाई करनी है, दूसरों की कमाई में तुम्हारी ऑख नहीं जानी चाहिए अर्थात् दूसरों की प्राप्तियों को देख ईर्ष्या-घृणा में नहीं करनी है। बाबा ने कहा है - पर-चिन्तन और पर-दर्शन पतन की जड़ है।यह वैराइटी ड्रामा है, हर आत्मा का अपना पार्ट है, हर आत्मा के पार्ट में अपनी-अपनी विशेषतायें हैं, इसलिए जब हम अपने पार्ट की विशेषता को देखेंगे और उसको ईश्वरीय सेवा में लगायेंगे तो सदा खुशी का अनुभव करेंगे।

विश्व-नाटक में आत्माओं के अधिकार और कर्तव्य का राज़ भी बाबा ने बताया है। इस विश्व-नाटक अर्थात् सारे विश्व की साधन-सम्पत्ति संगठित सम्पत्ति है, इसलिए इसमें किसी का व्यक्तिगत अधिकार नहीं है। हर आत्मा देह सहित सारी वस्तुओं का ट्रस्टी मात्र है, किसी चीज़ पर उसका स्थाई अधिकार नहीं है। हर चीज़ आत्मा को पार्ट बजाने मात्र के लिए मिली है और पार्ट पूरा होने अर्थात् बदलने के साथ ही उसका पहले वाली वस्तुओं पर अधिकार समाप्त हो जाता है और पार्ट बजाने के नयी देह और पदार्थ मिलते हैं।

जब हमारी बुद्धि में ड्रामा के सभी राज़ों की यथार्थ रीति धारणा होती है तो हम राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता, शुभाशुभ की आशंका से मुक्त जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करते हैं, जिसकी बाबा बार-

बार याद दिलाता है कि ब्रह्मा बाप समान जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव में रहो। ड्रामा के सब राज़ों को जानने वाले की स्थिति मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, लाभ-हानि, प्राप्ति-अप्राप्ति, यश-अपयश में समान होती है।

ड्रामा के राज़ को जानने वाला कभी अपने पार्ट से ऊबेगा नहीं, उसको न विनाश की उतावली होगी और न ही विनाश का भय होगा। वह कब किस पर कभी कोई दोषारोपण नहीं करेगा अर्थात् सबको निर्दोष देखकर व्यवहार करेगा।

जो इस आधार पर खुश रहता है कि हमारे पास जो है, वह दूसरों के पास नहीं है, वह सदा काल खुश नहीं रह सकता है। जो भौतिक प्राप्तियों के आधार पर खुश रहता है, वह भी सदा खुश नहीं रह सकता है। सदा खुश वही रह सकता है, जो ईश्वरीय प्राप्तियों के आधार पर खुशरहताहै क्योंकि ईश्वरीय प्राप्तियाँ अविनाशी हैं।

''मम्मा भी तो वही सुनाती है और बच्चे भी वही सुनाते हैं कि शिवबाबा को याद करो। तुम बच्चे यहाँ शिवबाबा की याद में बैठे हो, तुम्हें कोई फिकर नहीं करना है क्योंकि तुम बेहद के बाप से यह वर्सा ले रहे हो। इनमें कोई भी शरीर छोड़कर जाते हैं तो हम कहेंगे कि यह भी भावी है। कल्प पहले भी यह हुआ था क्योंकि ड्रामा के ऊपर भी तो चलना पड़े ना, जिससे कोई फिकर नहीं रहे।''

सा.बाबा 17.08.13 रिवा.

''कोई भी अच्छी अवस्था में शरीर छोड़े तो उनका कल्याण ही है। बहुत अच्छे घर में जन्म लेकर वहाँ भी अपनी खुशी देंगे। छोटे-छोटे बच्चे भी सबको खुश कर देते हैं।... तो बच्चों की अवस्था का ड्रामा के ऊपर और बाप के ऊपर मदार है। सेकेण्ड बाई सेकण्ड जो कुछ होता है, वह सब ड्रामा की नूँध है, ऐसा समझकर सदा खुशी में हर्षित रहना चाहिए।''

सा.बाबा 17.08.13 रिवा.

''बाप और बाप की सम्पत्ति की स्मृति से समर्थी आती है। अगर समर्थी होगी तो कोई भी परिस्थिति स्व-स्थिति को डगमग नहीं करेगी। परीक्षाओं को एक खेल समझकर चलेंगे।... ऐसे ही परिस्थितियों को एक पार्ट समझो। परिस्थिति के पार्ट को साक्षी होकर देखने से डगमग नहीं होंगे, कब मुरझायेंगे नहीं, और ही मजा आयेगा। मुरझाते तब हैं, जब ड्रामा की प्वाइन्ट को भूल जाते हैं।''

अ.बापदादा 28.04.77 पार्टी

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता

जीवन का अभीष्ट लक्ष्य

''संगमयुग की विशेषता सन्तुष्टता है और सन्तुष्टता की निशानी प्रसन्नता है। यह है ब्राह्मण जीवन की विशेष प्राप्ति। ... ब्राह्मण जीवन का वर्सा एवं प्रॉपर्टी सन्तुष्टता है और ब्राह्मण जीवन की पर्सनालिटी प्रसन्नता है।''

अ.बापदादा 5.10.87

सम्पूर्णता - सम्पन्नता - सन्तुष्टता - प्रसन्नता हर आत्मा के जीवन का लक्ष्य है और हर आत्मा उसके लिए सतत प्रयत्नशील है। आत्मा का प्रयत्न इस बात को सिद्ध करता है कि आत्मा ने इस स्थिति का अनुभव किया है, आज नहीं है, इसलिए वह उसको पुन: प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील है। वास्तविकता तो ये है कि सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता हर आत्मा को परमात्मा के द्वारा ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में मिलती है। शिव भगवानोवाच्य - खुशी तुम्हारा संगमयुग पर ईश्वरीय वर्सा है। शरीर चला जाये परन्तु खुशी न जाये। खुशी जाती क्यों है? इस पर विचार करें तो देखेंगे कि आत्मा अपने में कोई न कोई कमी अनुभव करती है, जिससे असन्तुष्ट होने से खुशी गायब हो जाती है। खुशी को स्थाई रखने के लिए केवल स्थूल साधन-सम्पत्ति की सम्पन्नता ही पर्याप्त नहीं है लेकिन तन-मन-धन-जन सब की सम्पन्नता चाहिए। इन सबसे सम्पन्न आत्मा ही सदा खुशी का अनुभव कर सकती है।

''सबसे बड़ा खजाना है ही खुशी। अगर खुशी है तो सब-कुछ है और खुशी नहीं तो कुछ भी नहीं। ... जब ईश्वरीय प्राप्तियों को भूल जाते हो तो उदास होते हो।''

अ.बापदादा 3.11.92 पार्टी 4

प्रसन्नता हर आत्मा के जीवन का लक्ष्य है, उसका आधार है सन्तुष्टता और सन्तुष्टता जीवन में तब होगी, जब सम्पन्नता होगी। सम्पन्नता उसी के जीवन में होगी, जिसके जीवन में सम्पूर्णता होगी अर्थात् जिसका जीवन सर्व प्राप्तियों से परिपूर्ण होगा। यथार्थ ज्ञान जीवन की परम प्राप्ति है। ज्ञान सागर परमात्मा पिता आकर हम आत्माओं को सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देते हैं, जिस ज्ञान को पाकर आत्मायें अपनी सम्पूर्ण स्थिति अर्थात् आत्मिक स्थिति अर्थात् सतोप्रधान स्थिति को प्राप्त करती हैं। जहाँ सम्पूर्णता है, वहाँ ही सम्पन्नता है और जहाँ सम्पन्नता है, वहाँ ही सन्तुष्टता है तथा जहाँ सन्तुष्टता है, वहाँ प्रसन्नता है ही है। पुरुषार्थ प्रसन्नता का नहीं करना होता है, पुरुषार्थ सम्पूर्णता का करना होता है। वृक्ष को हरा-भरा करने के लिए पानी वृक्ष की जड़ में डाला जाता है, पत्तों पर नहीं।

''ज्ञान रत्न जो अभी तुम लेते हो, वह फिर सच्चे हीरे-जवाहर बन जाते हैं। 9 रत्न की माला कोई हीरे-जवाहरों की नहीं है। इन ज्ञान रत्नों की ही माला है। मनुष्य लोग फिर स्थूल रत्न समझ अंगूठियां पहन लेते हैं। इन ज्ञान रत्नों की माला इस संगम पर ही मिलती है। ये ज्ञान रत्न ही तुमको भविष्य 21 जन्म मालामाल बनाते हैं।''

सा.बाबा 10.1.69

2003 से बाद की अव्यक्त मुरलियों को देखें तो बाबा हमको हर मुरली के बाद में जो ड्रिल कराते हैं कि एक सेकेण्ड में देह से न्यारे अपने बिन्दुरूप आत्मिक स्वरूप में स्थित होने की ड्रिल कराते हैं और वह ड्रिल सारे दिन में बार-बार करने की श्रीमत देते हैं। ये बाबा हमको अपने सम्पूर्ण स्वरूप का अनुभव कराते हैं, जिससे हम उस अनुभव को करके, उसको अधिक से अधिक समय के लिए बढ़ाते हुए सदा काल के लिए सम्पूर्णता को पा सकें।

''सर्व शक्तियाँ, सर्व गुणों से सम्पन्न अर्थात् सम्पूर्ण। सर्व हो। मन्सा-वाचा, सम्बन्ध-सम्पर्क चारो में ही सम्पन्न। अगर एक में भी कमजोर रह गये तो सम्पन्न नहीं कहेंगे।''

अ.बापदादा 21.10.05

''अब ऐसी मीटिंग करो कि कब तक सम्पन्न बनेंगे ? ... आज की विशेष टॉपिक है - कब तक ? ... ब्राह्मण परिवार के आगे, विश्व के आगे सम्पन्न और सम्पूर्ण।''

अ.बापदादा 21.10.05

''सम्पन्न और सम्पूर्ण, एवर-रेडी, सफल कर सफलतामूर्त बनने का ... जो वायदा किया है तो अभी एक मिनट के लिए अपने दिल से इस वायदे को दृढ़ता का अण्डरलाइन लगाओ। अपने मन में पक्का करो।''

अ.बापदादा 15.11.05

''लास्ट पेपर में नम्बरवन होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है - सेकेण्ड में जहाँ चाहें, जैसे मन-बुद्धि को लगाने चाहो, वहाँ सेकेण्ड में लग जाये। हलचल में नहीं आये। ... ऐसे आप स्मृति के संकल्प का स्वीच ऑन करने से लाइट-हाउस, माइट-हाउस होकर आत्माओं को लाइट-माइट दे सकते हो। ... यह बहुत काल का अभ्यास ही अन्त में सहयोगी बनेंगा।''

अ.बापदादा 30.11.05

''सेकेण्ड में जहाँ, जैसे मन-बुद्धि को लगाने चाहो, वहाँ सेकेण्ड में लग जाये। हलचल में नहीं आये। ... इस अभ्यास को सारे दिन में कर्म करते हुए भी करो। इसके लिए मन के

कन्ट्रोलिंग पॉवर की आवश्यकता है।''

अ.बापदादा 30.11.05

''बापदादा एक सेकण्ड में अशरीरी भव की ड्रिल देखना चाहते हैं। अगर अन्त में पास होना है तो यह ड्रिल बहुत आवश्यक है। इसलिए अभी इतने बड़े संगठन में बैठे एक सेकेण्ड में देहभान से परे स्थिति में स्थित हो जाओ। कोई आकर्षण आकर्षित न करे।''

अ.बापदादा 30.11.05

हम कितना जल्दी अपने सम्पूर्ण आत्मिक स्वरूप में स्थित होते हैं, वह हमारी सम्पूर्णता की स्थिति के निकट पहुँचने की कसौटी है क्योंकि हमारा आत्मिक स्वरूप सर्व गुणों, सर्व शक्तियों, सर्व प्राप्तियों से सदा सम्पन्न परमानन्दमय है। जब हम उस स्थिति में स्थित होते हैं तो सम्पूर्णता और प्रसन्नता अर्थात् अतीन्द्रिय सुख अर्थात् परमानन्द का अनुभव स्वत: होता हैं। इस स्थिति के लिए किसी साधन-सम्पत्ति, व्यक्ति की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए आवश्यकता है यथार्थ ज्ञान की धारणा, दृढ़ निश्चय और दृढ़ पुरुषार्थ की। इसलिए बापदादा सदा दृढ़ता पर जोर देते हैं। ब्रह्मा बाबा के जीवन को देखें तो बाबा ने सम्पूर्णता किसी साधन-सम्पत्ति या व्यक्ति के आधार पर नहीं पायी है। उन्होंने ये स्थिति अपने दृढ़ पुरुषार्थ के आधार पर पायी है। वर्तमान में हम दादा विश्वरतन, जो विजयी रतन के उदाहरण स्वरूप बने हैं, उनको देखें तो भी उन्होंने ये विजय किसी साधन-सम्पत्ति या व्यक्ति के आधार पर नहीं पायी है। उन्होंने अपने दृढ़ निश्चय, दृढ़ संकल्प, सतत पुरुषार्थ के आधार पर पायी है।

इस स्थिति को पाने में कोई व्यक्ति बाधक या साधक नहीं बन सकता है, इसमें हमारा अपना ही आलस्य और अलबेलापन बाधक है और हमारा दृढ़ संकल्प और सतत अभ्यास ही साधक है। इसके लिए हम कोई बहाना भी नहीं दे सकते हैं क्योंकि इसके लिए कोई व्यक्ति जिम्मेवार नहीं है। प्यारे ब्रह्मा बाबा और विजयी रतन दादा विश्वरतन जी के जीवन से ये सिद्ध हो जाता है कि ये आत्मा की अपनी स्थिति है, जो अपने दृढ़ पुरुषार्थ के द्वारा पायी जा सकती है। इसके लिए हम कोई बहाना भी नहीं दे सकते हैं क्योंकि बाबा ने हमको इस पुरुषार्थ के लिए भरपूर साधन दिये हुए हैं और उसके लिए विधि-विधान बताये हैं।

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अर्थ ये नहीं कि हम सम्पूर्ण बन जायेंगे तब ही हमको प्रसन्नता की अनुभूति होगी। सम्पूर्ण तो आत्मा अन्त में बनेगी। सम्पूर्णता अर्थात् आत्मा अपने सम्पूर्ण स्वरूप की स्थिति और स्मृति में स्थित होकर अपने मूल गुणों अर्थात् सच्चिदानन्द स्वरूप की अनुभूति करे और अपनी इस सम्पूर्ण स्थिति में स्थित होने के समय को

बढ़ाते हुए ही सदा काल की सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं। जब और जितना समय आत्मा अपने इस सम्पूर्ण स्वरूप की स्थिति और समृति में स्थित रहेगी, वह अपने में सम्पन्नता, सन्तुष्टता और प्रसन्नता की अनुभूति अवश्य करेगी।

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता - ये चारो ही शब्दों का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है, इसलिए उनका भाव-अर्थ समझना अति आवश्यक है।

सम्पूर्णता अर्थात् सर्व ईश्वरीय प्राप्तियों से भरपूर स्थिति अर्थात् सम्पन्नता।

सम्पन्नता ही सन्तुष्टता का आधार है अर्थात् थोड़ी भी कमी अनुभव होगी तो सम्पन्न नहीं कहा जायेगा और सम्पन्न नहीं तो सन्तुष्ट भी नहीं अर्थात् वह कमी आत्मा को सन्तुष्टता की अनुभूति होने नहीं देगी, अपनी तरफ खींचती रहेगी।

सन्तुष्टता ही प्रसन्नता का आधार है। यदि जीवन में थोडी भी असन्तुष्टता है तो वह असन्तुष्टता प्रसन्न रहने नहीं देगी। इसलिए प्रसन्नता के लिए जीवन में सन्तुष्टता का होना अति आवश्यक है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इन चारो शब्दों अर्थात् स्थितियों का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है अर्थात् सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता एक-दूसरे का आधार भी हैं तो फल भी हैं।

इस संगमयुगी जीवन में या इस कर्मक्षेत्र पर सम्पूर्णता का अर्थ यह नहीं है कि सम्पूर्णता अर्थात् सदा काल की कर्मातीत स्थिति। संगमयुग पर सदा काल की सम्पूर्णता के लिए परमात्मा आत्माओं को पुरुषार्थ कराते हैं और आत्मायें पुरुषार्थ करती हैं, जिसके लिए परमात्मा ज्ञान-गुण-शक्तियां आत्माओं को देते हैं, आत्मा की सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव कराते हैं और आत्मायें उन ज्ञान-गुण-शक्तियों को धारण कर उस अनुभव को बढ़ाने का पुरुषार्थ करते हैं। इसलिए संगमयुगी ईश्वरीय प्राप्तियों से सम्पन्न स्थिति ही सम्पूर्णता है। हर आत्मा का आत्मिक स्वरूप में सम्पूर्ण और सम्पन्न है। हर आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने पर सम्पूर्णता का अनुभव करती है, अब उस अनुभव में रहने की समय सीमा का विस्तार करते अर्थात् बढ़ाते हुए आत्मा सदा काल के लिए सम्पूर्णता अर्थात कर्मातीत स्थिति को पाती है और उसको पाकर परमधाम में जाती है।

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का आधार अर्थात् साधन

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का आधार यथार्थ ज्ञान है। सतयुग में आत्मा सम्पूर्ण तो होती है परन्तु उतरती कला में होती है और उतरते-उतरते अपूर्ण-असम्पन्न-असन्तुष्ट-अप्रसन्नता में पहुँच जाती है। ज्ञान सागर परमात्मा जब आकर जो ज्ञान देते हैं तो वह ज्ञान और उनका साथ ही सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का एकमात्र आधार है। जितना ज्ञान धन की पहचान होगी, उतना ही उनकी धारणा होगी और उससे ही हमारी स्थिति सम्पूर्ण और सम्पन्न बनेगी। सम्पन्नता से सन्तुष्टता और प्रसननता की अनुभूति होगी।

''जितना पुरुषार्थ करेंगे, उतनी रिजल्ट निकलेगी। सम्पूर्ण अवस्था को प्राप्त करने का लक्ष्य क्या है? साधन क्या है? साधन मिल जायेंगे तो लक्ष्य को पकड़ लेंगे। रतनों की भी परख चाहिए ना। ... जिनको परख नहीं है, उनके पास वैल्यू नहीं रहेगी।''

अ.बापदादा 6.7.69

Q. क्या बाबा ने सम्पूर्ण ज्ञान दे दिया है या देना है?

बाबा ने तो सम्पूर्ण ज्ञान दे दिया है। जब सम्पूर्ण ज्ञान दे दिया, तब ही तो ब्रह्मा बाप सम्पूर्ण बनें। अब वह सम्पूर्ण ज्ञान हमारी बुद्धि में है या नहीं है अर्थात् हमने समझा या नहीं समझा, वह अलग बात है। जो हमने अभी तक नहीं समझा है, वह समझने का पुरुषार्थ हमको करना है। बाबा की मुरलियां ज्ञान का अखुट भण्डार हैं, सम्पूर्ण ज्ञान का भण्डार हैं, उस सागर को खोजने और मन्थन करने से ही हम सम्पूर्णता को पायेंगे।

सम्पूर्णता की स्थिति / सम्पूर्णता की परिभाषा

सम्पूर्णता आत्मा की या वस्तु की वह स्थिति है, जिसमें कोई कमी न हो अर्थात् उसमें किसी तरह की बढ़ती की गुन्जाइश न हो अर्थात् जिसके आगे कुछ करने की मार्जिन न रहे। बीजरूप स्थिति, निर्संकल्प स्थिति कर्मातीत स्थिति आत्मा की सम्पूर्णता के ही पर्यायावाची शब्द हैं। इस देह में रहते हुए अपनी सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव परमानन्दमय है।

सम्पूर्णता अर्थात् शत प्रतिशत देही-अभिमानी स्थिति अर्थात् जिसमें देहाभिमान और देहभान का अंश भी न हो। यदि देहाभिमान या देहभान का अंश भी है तो उसको सम्पूर्ण नहीं कहा जा सकता है। इसलिए बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है - लक्ष्मी-नारायण को भी सम्पूर्ण पावन नहीं कहेंगे, सम्पूर्ण पावन श्रीकृष्ण को ही कहेंगे क्योंकि श्रीकृष्ण के जन्म लेने के बाद जो समय बीतता है, उसमें आत्मा की सम्पूर्णता में कुछ न कुछ कमी अवश्य आती जाती

है और वह कमी निरन्तर होते-होते अन्त में आत्मा अपूर्ण अर्थात् पतित बन जाती है।

अब विचार करें तो आत्मा की ये स्थिति कब और कहाँ होती है। आत्मा की सम्पूर्ण स्थिति परमधाम में ही होती है। इस जगत में आत्मा की सम्पूर्ण स्थिति हो नहीं सकती क्योंकि पार्ट बजाते हुए आत्मा की या तो चढ़ती कला होती है या उतरती कला होती है और ये चढ़ती कला की क्रिया तब तक चलती है जब तक आत्मा परमधाम में जाती है अर्थात् अन्तिम क्षण तक ये चढ़ती कला की क्रिया होती रहती है। ऐसे ही उतरती कला की स्थिति की गतिविधि परमधाम से आने से ही आरम्भ हो जाती है। आत्मा जैसे ही परमधाम से इस धरा पर पार्ट बजाने आती है, उसी क्षण से आत्मा की सम्पूर्णता की स्थिति में कमी आना आरम्भ हो जाती है, भले ही सतयुग-त्रेता में आत्मा उस कमी को अनुभव नहीं करती है। कमी की अनुभूति आत्मा को कुछ समय बाद में होती है। इसके सम्बन्ध में बाबा ने कई बार मुरलियों में भी शब्द उच्चारे हैं अर्थात् स्पष्ट किया है कि आत्मा को त्रेता में भी कुछ कमी तो जरूर महसूस होती होगी। विवेक भी ऐसा ही कहता है कि वहाँ भी आत्मा को अन्दर में महसूसता तो होती होगी परन्तु उस कमी के कारण आत्मा को किसी प्रकार का दुख-दर्द नहीं होता है।

अब प्रश्न उठता है कि बाबा जो हमको कहते हैं कि तुम सम्पूर्ण बनो, उसका भाव-अर्थ क्या है? हम सम्पूर्ण तो परमधाम में ही होते हैं परन्तु अभी बाबा ने हमको यथार्थ ज्ञान दिया है तो इस जगत में पार्ट बजाते हुए पुरुषार्थ करते हुए तुम अपनी सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव कर सकते हैं और जो जितना अच्छा पुरुषार्थ करेगा, वह उतना ही अधिक समय तक और उतना ही अच्छा अपनी सम्पूर्णता का अनुभव करेगा। यह सदा काल की सम्पूर्ण स्थिति तो एक परमात्मा की ही रहती है क्योंकि उनको अपनी देह ही नहीं है तो उनके लिए देह-भान और देहाभिमान का प्रश्न ही नहीं उठता है। उनके बाद सभी आत्माओं की ये सम्पूर्णता की स्थिति उनके विश्व-नाटक के पार्ट अनुसार नम्बरवार और पुरुषार्थ अनुसार होती है। इसमें ब्रह्मा बाबा नम्बरवन हैं क्योंकि उनके तन में परमात्मा आते हैं और उनका इस विश्व-नाटक में नम्बरवन आल-राउण्ड पार्ट है, उनके बाद सभी आत्मायें नम्बरवार अपने पार्ट, पार्ट के समय और अपने पुरुषार्थ अनुसार अनुभव करते हैं। इसलिए ही ब्रह्मा बाबा सम्पूर्ण बनने के बाद 45 वर्ष से सूक्ष्मवतन में अव्यक्त होकर पार्ट बजा रहे हैं।

''मेरा बाबा' स्मृति में आना और सर्व प्राप्तियों के भण्डार अनुभव होना।... बाप के खज़ाने सो मेरे खज़ाने हैं। तो जितना भरपूर रहेंगे, उतना हलचल में नहीं आयेंगे। भरपूर चीज हलचल में नहीं आती।... बुद्धि कभी चंचल हो नहीं सकती।''

अ.बापदादा 3.10.92 पार्टी 2

बाबा बार-बार मुरली द्वारा बच्चों को इशारा देता रहता है कि बच्चे, सम्पूर्ण पवित्र भव। केवल ब्रह्मचर्य की पवित्रता नहीं है लेकिन मन की पवित्रता, वाणी की पवित्रता, जीवन की पवित्रता, संग की पवित्रता - ये सब पवित्रतायें हैं। ... कमल-नयन, कमल-चरण, कमल-मुख ... का गायन है। जब ऐसे बनें हैं, तब तो गायन है।

अ.बापदादा 26.8.99 सन्देश

सम्पूर्णता के प्रकार

इस सृष्टि के काल-चक्र पर हम विचार करें तो देखेंगे आत्माओं की सम्पूर्णता की स्थिति तीन प्रकार की होती है -

एक है कल्प के हिसाब से सम्पूर्णता,

दूसरी है समय के हिसाब से सम्पूर्णता और

तीसरी है स्थिति के हिसाब से सम्पूर्णता

कल्प के हिसाब से सम्पूर्णता अर्थात् जो आत्मायें आदि में आती हैं, वे कल्प के हिसाब से सम्पूर्ण होती हैं क्योंकि वे पूरे कल्प में पार्ट बजाती हैं, उस हिसाब से उनको संगमयुग पर अपने में शक्ति भरनी होती है। वैसे तो कल्प के हिसाब से देखें तो श्रीकृष्ण को ही सम्पूर्ण कहेंगे क्योंकि जब नारायण बनते हैं तो उनकी स्थिति भी 25-30 वर्ष पुरानी हो जाती है, सृष्टि रंगमच पर पार्ट बजाते हुए समयान्तर में आत्मा की स्थिति में कुछ न कुछ कमी जरूर आती होगी और आती ही है।

दूसरी है समय के हिसाब से सम्पूर्णता अर्थात् जो भी आत्मायें परमधाम से सृष्टि रंगमंच पर पार्ट बजाने आती हैं तो वे पहले-पहले सम्पूर्ण ही होती हैं क्योंकि कोई भी आत्मा परमधाम में अपूर्ण नहीं हो सकती। पहले जन्म में जो भी आत्मायें आती हैं तो पहले-पहले उनको सम्पूर्णता के सुख की अनुभूति होती ही है अर्थात् उनको किसी भी प्रकार दुख-अशानति की अनुभूति नहीं होती है। उनकी वह स्थिति जीवनमुक्त स्थिति है।

तीसरी है स्थिति के हिसाब से सम्पूर्णता अर्थात् श्रीकृष्ण के साथ जो भी आत्मायें आयेंगी, वे सभी भी सम्पूर्ण होंगी परन्तु सम्पूर्णता की स्थिति सबकी अलग-अलग होगी क्योंकि सभी आत्मायें एक जैसे गुण-धर्म-संस्कार वाली नहीं हो सकती हैं।

यथार्थ सम्पूर्ण स्थिति आत्मा की परमधाम में ही होती है। इस सृष्टि चक्र में पार्ट बजाते समय आत्मा उसके निकटस्त तक पहुँचती है परन्तु सम्पूर्णता में नहीं। इसलिए बाबा ने अनेक

मुरलियों में कहा है कि आत्मा सम्पूर्ण बन जायेगी तो कर्मातीत बन जायेगी और वह इस देह को ही छोड़ देगी। बाबा के इन महावाक्यों से ये सिद्ध होता है कि यहाँ पर आत्मा सम्पूर्णता का अनुभव अवश्य करती है परन्तु सदा काल के लिए वह अनुभव स्थिर नहीं रह सकता है। दूसरी ओर बाबा ने ये भी कहा है कि आत्मा जैसे ही इस धरा पर जन्म लेती है, तब से ही उसकी उतरती कला आरम्भ हो जाती है, भले ही उसका अनुभव आत्मा को बाद में होता है अर्थात् इस विश्व-नाटक में अपने पार्ट के आधा समय के बाद ही आत्मा अपूर्णता का अनुभव करती है। इसलिए बाबा ने अनेक बार कहा है कि आदि में आने वाली आत्माओं को आधा कल्प तक अपूर्णता का अनुभव नहीं होगा। हम उतरती कला की ओर जा रहे हैं, उसका भी उनको ज्ञान नहीं होता है। सम्पूर्णता, चढ़ती कला और उतरती कला का यथार्थ ज्ञान और अनुभव आत्मा को संगमयुग पर ही होता है, जब परमात्मा आकर यथार्थ ज्ञान देते हैं। इस प्रकार हम देखें तो इस धरा पर पार्ट बजाते हुए आत्मा चाहे चढ़ती कला में हो या उतरती कला में हो, उसमें कुछ न कुछ अपूर्णता अवश्य रहती है परन्तु हमको इस सत्य को समझकर अपूर्णता का चिन्तन न करके अपनी सम्पूर्ण स्थिति का ही चिन्तन करना चाहिए और उसका अधिक से अधिक समय तक अनुभव करने का पुरुषार्थ अवश्य करना चाहिए। जितना-जितना हम अपनी सम्पूर्ण स्थिति का चिन्तन करेंगे, उसका अभ्यास करेंगे, उतना हमारी आत्मा सम्पूर्ण बनती जायेगी और बनते-बनते हम सम्पूर्णता को प्राप्त करेंगे। बाबा का इस सत्य को समझाने और बताने का लक्ष्य यही है कि हम अपनी सम्पूर्ण स्थिति के लिए यथार्थ पुरुषार्थ कर सकें।

इस सम्बन्ध में बाबा ने ये भी कहा है कि आत्मा जितना अधिक समय तक यहाँ सम्पूर्णता का अनुभव करेगी, उतना ही अधिक समय नये कल्प में प्रकृति के सम्पूर्ण सुख का अनुभव करेगी, उपभोग करेगी। आत्मा की सम्पूर्ण स्थिति परमधाम में होती है, इसलिए अभी हम जितना अधिक समय उस स्थिति में स्थित होकर रहेंगे, उतना ही सम्पूर्णता अनुभव होगा और उस स्थिति में आत्मा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करेगी। आत्मा परमधाम में सम्पूर्ण स्थिति में तो होती है परन्तु उस समय आत्मा को सम्पूर्णता का कोई अनुभव नहीं होता है। आत्मा को सम्पूर्णता और अपूर्णता का अनुभव देह के साथ ही होता है और यथार्थ रीति से संगमयुग पर ही होता है, जब आत्मा को त्रिलोक और त्रिकाल का स्पष्ट ज्ञान होता है।

सम्पूर्णता की कसौटी

सम्पूर्णता के पुरुषार्थ के लिए हम कहाँ तक सम्पूर्णता के निकट पहुँचे हैं, उसकी परख होना भी अति आवश्यक है। सम्पूर्णता की परख अर्थात् कसौटी आत्मा की सन्तुष्टता और प्रसन्नता है। सम्पूर्णता को प्राप्त हुई आत्मा और सम्पूर्णता के निकट पहुँची हुई आत्मा की आंख किसी व्यक्ति, वैभव या साधन-सम्पत्ति में नहीं डूबेगी। वह सदा अपने स्वमान और ईश्वरीय प्राप्तियों से सन्तुष्ट रहेगा। ईश्वरीय प्राप्तियां इतनी महान है कि उनको धारण करने वाला अर्थात् उनसे सम्पन्न आत्मा को किसी प्रकार की अप्राप्ति की अनुभूति हो नहीं सकती। जब ईश्वर और उनकी शक्तियों पर श्रृद्धा-भावना के आधार पर निश्चय और विश्वास करने वाली अल्पज्ञ आत्माओं की भी आंख किसी साधन-सम्पत्ति या व्यक्ति में नहीं डूबती है, उनसे वे प्रभावित नहीं होते हैं, तो सर्वज्ञ, सर्वशक्तिवान परमात्मा के डायरेक्ट सन्तानों की आंख किसी व्यक्ति, साधन-सम्पत्ति में कैसे डूब सकती, उनसे प्रभावित कैसे हो सकती है।

सम्पूर्णता के निकट पहुँची हुई, सम्पन्न आत्मा कभी भी किसके आगे झुकेगी नहीं अर्थात् प्रभावित नहीं होगी, भल वह अपने स्वमान में रहते हुए हर व्यक्ति को समय और उसके पद अनुसार मर्यादापूर्वक सम्मान अवश्य देगी। सम्पूर्णता और सम्पन्न आत्मा अहंकार में आकर कभी किसी व्यक्ति का अपमान भी नहीं करेगा परन्तु उससे भयभीत या प्रभावित भी नहीं होगा। इसलिए ही उसकी तुलना फलों से भरपूर वृक्ष से की जाती है अर्थात् जैसे फलों से सम्पन्न वृक्ष की डालियां झुक जाती हैं, ऐसे ही ज्ञान-गुण-शक्तियों से सम्पन्न आत्मा निरहंकारी बनकर सबको समय और स्थिति अनुसार सम्मान देती है और सदा अपने स्वमान में रहती है। सम्पूर्णता की स्थिति राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा से मुक्त स्थिति है, जहाँ सम्पूर्णता है, वहाँ सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता निश्चित ही होगी। यही सम्पूर्णता की कसौटी है।

इस विश्व-नाटक का ये नियम है कि हर चीज पहले सतोप्रधान अर्थात् सम्पूर्ण होती है और हर चीज सतोप्रधानता से तमोप्रधानता की ओर जाती है और हर कल्प अपने समय पर फिर सतोप्रधान बनती है। ये सारा खेल ही सतोप्रधानता अर्थात् सम्पूर्णता और तमोप्रधानता अर्थात् अपूर्णता का बना हुआ है। ज्ञान सागर परमात्मा कल्पान्त में आकर विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान देकर इस विश्व को सतोप्रधान बनाता है, जिससे हर चीज अपने सतोप्रधान स्वरूप में स्थित हो जाती है। सभी आत्मायें अपनी सतोप्रधान स्थिति अर्थात् सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त करती हैं। आत्मा जब सम्पूर्णता को प्राप्त होती हैं तो वह सदा सम्पन्नता, सन्तुष्टता और

प्रसन्नता का अनुभूति अवश्य करती है। अन्य आत्माओं को भी उसकी उस स्थिति का आभास होता है।

एक परमपिता परमात्मा ही सदा सम्पूर्ण है और उसके द्वारा दिया गया ज्ञान ही सम्पूर्णता का आधार है। परमात्मा सम्पूर्ण है, वह सम्पूर्णता का वर्सा सर्व आत्माओं को देता है अर्थात् सर्व आत्माओं को सम्पूर्णता का अनुभव अवश्य कराता है, जिससे आत्मायें अतीन्द्रिय सुख का अर्थात् प्रसन्नता का अनुभव करती हैं। परमात्मा के द्वारा सम्पूर्णता के अनुभव को दीर्घ कालिक या सदा काल के लिए बनाना हर आत्मा का अपना पुरुषार्थ है। सम्पूर्णता का आधार परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान, गुण, शक्तियों की धारणा। इसीलिए गायन है - सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी।

''समय के खज़ाने को भी जानते हो कि इस संगमयुग का समय कितना श्रेष्ठ है। जो प्राप्ति चाहिए, वह अधिकारी बन बाप से ले रहे हो। ... एक-एक श्रेष्ठ संकल्प कितना बड़ा खज़ाना है। ... सर्व शक्तियाँ बड़े से बड़ा खज़ाना हैं। एक-एक ज्ञान-रतन कितना बड़ा खज़ाना है। हर एक गुण कितना बड़ा खज़ाना है। ... आपके हर स्वांस में सफलता का अधिकार समाया हुआ है।''

अ.बापदादा 30.11.99

Q. सम्पूर्णता सन्तुष्टता का और सन्तुष्टता प्रसन्नता का आधार है। तो हमारी सम्पूर्णता और परमात्मा की सम्पूर्णता में क्या अन्तर है और क्या सामन्जस्य है ?

आत्मिक स्वरूप सदा भरपूर है इसलिए अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने पर दोनों ही सम्पूर्णता के अनुभव में रहते हैं। परमात्मा निराकार है, इसलिए उसकी सम्पूर्णता सदा स्थाई रहती है परन्तु आत्माओं की सम्पूर्णता, सम्पूर्णता से अपूर्णता की ओर अग्रसर होती है और अपूर्ण होने पर परमात्मा पिता आकर उसको ज्ञान, गुण, शक्तियों से भरपूर करते हैं। अभी संगमयुग पर ही परमात्मा आकर सर्व आत्माओं को यथार्थ ज्ञान देकर, उनको अपने सम्पूर्ण स्वरूप का अनुभव कराते हैं, जिस अनुभव को करके आत्मायें पुरुषार्थ करके अपनी सम्पूर्णता को प्राप्त करती हैं।

आत्मा की सम्पूर्ण स्थिति क्या है, सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए क्या पुरुषार्थ है, सम्पूर्णता को प्राप्त आत्मा की स्थिति क्या होती है - ये सब ज्ञान भी परमात्मा ही देते हैं। सम्पूर्णता को प्राप्त आत्मा ही परमधाम जा सकती है। इस सम्पूर्णता की स्थिति को प्राप्त तो सभी आत्मायें करती हैं परन्तु उनकी सम्पूर्णता उनके पार्ट के अनुसार नम्बरवार ही होती हैं। यदि पार्ट के हिसाब से देखें तो एक ब्रह्मा बाबा का ही आलराउण्ड पार्ट है, उनके ही पूरे 84

जन्म होते हैं और वे ही शत प्रतिशत सम्पूर्णता को प्राप्त करते हैं। उसके अतिरिक्त सभी आत्माओं का पार्ट और जन्म नम्बरवार ही है। किसी का पूरा आलराउण्ड पार्ट नहीं कहा जा सकता है। इसलिए सबकी सम्पूर्णता की स्थिति भी नम्बरवार ही होती है।

इस विश्व-नाटक में जब से आत्मा आती है, तब से ही उसके अन्य आत्माओं और प्रकृति के साथ हिसाब-किताब आरम्भ हो जाते हैं तथा जब कल्पान्त में वापस परमधाम जाती है तो सब हिसाब किताब पूरे करके ही जाना होता है। ये हिसाब-किताब का पूरा होना ही आत्मा की सम्पूर्णता है, जिसे कर्मातीत स्थिति या बाप समान स्थिति भी कहा जाता है।

''जितना समर्पण, उतना ही सम्पूर्ण। ... इसलिए लक्ष्य सदैव सम्पूर्णता का रखना है, जो सम्पूर्ण मूर्त प्रत्यक्ष प्रख्यात हो चुके हैं, उनका लक्ष्य रखना है। जो अभी गुप्त हैं, प्रत्यक्षता में नहीं आये हैं, उनका भी लक्ष्य नहीं रख सकते।''

अ.बापदादा 29.6.70

''समय के अनुसार अगर सम्पूर्ण बने तो उसकी इतनी प्राप्ति नहीं होती है। समय के पहले सम्पूर्ण बनना है। समय पर सम्पूर्ण बने तो सम्पूर्णता क्या चीज है, उसका अनुभव कब करेंगे ? ईश्वरीय अतीन्द्रिय सुख निरन्तर क्या होता है, उसका अनुभव यहाँ ही करना है। ... अगर अब न करेंगे तो फिर कब करेंगे। फिर कब हो न सकेगा।''

अ.बापदादा 18.6.70

''जितना दूसरों को सन्देश देते हैं, उतना अपने को भी सम्पूर्णता का सन्देश मिलता है क्योंकि दूसरों को समझाने से अपने को सम्पूर्ण बनाने का न चाहते हुए भी ध्यान जाता है। यह सर्विस करना भी अपने को सम्पूर्ण बनाने का मीठा बन्धन है।''

अ.बापदादा 24.1.70

''निन्दा-स्तुति, मेरा-तेरा ... कुछ भी अंगीकार न करेंगे तब ललकार होगी। आप मन में संकल्प पीछे करते हो, आपके मन में संकल्प आते ही वहाँ पहुँच जाता है। क्यों पहले पहुँचता है, यह गुह्य पहेली है। ... क्योंकि सम्पूर्ण बनने से ड्रामा की हर नूँध स्पष्ट देखने में आती है।''

अ.बापदादा 2.4.70

''बापदादा कब व्यर्थ रचना नहीं रचते हैं। ... पुरुषार्थ की कमजोरी के कारण व्यर्थ संकल्पों की रचना होती है। ... साकार रूप ने सम्पूर्णता को साकार में लाया। सम्पूर्णता साकार रूप में सम्पन्न (स्पष्ट) देखने में आती थी। सम्पूर्ण और साकार अलग देखने में आता था! ... इस स्थिति को कहा जाता है उपराम। उपराम और साक्षीदृष्टा।''

अ.बापदादा 26.3.70

''सुनाया था ना कि अन्त के समय नई-नई परीक्षायें आयेंगी, जिन परीक्षाओं को पास कर सम्पूर्णता की डिग्री लेंगे। अगर यह पहला पाठ ही स्मृति में नहीं होगा तो सम्पूर्णता की डिग्री भी नहीं ले सकेंगे। ... पहली सीढ़ी अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थित।''

अ.बापदादा 28.7.71

''सम्पूर्ण निशाने के नज़दीक पहुँचने की निशानी का डबल नशा उत्पन्न होता है ? पहला नशा है - कर्मातीत अर्थात् सर्व बन्धनों से मुक्त, न्यारे बन, प्रकृति द्वारा निमित्त-मात्र कर्म कराना। ऐसे कर्मातीत अवस्था का अनुभव होगा। न्यारे बनने का पुरुषार्थ बार-बार नहीं करना पड़ेगा। सहज और स्वत: ही अनुभव होगा कि कराने वाला और करने वाली यह कर्मेन्द्रियाँ स्वयं से हैं ही अलग।''

अ.बापदादा 4.7.74

''सम्पूर्ण निशाने के नज़दीक पहुंचने का पहला नशा है - कर्मातीत स्थिति का अनुभव ... दूसरा नशा है - विश्व का मालिक बनने का। वे ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कि स्थूल चोला व वस्त्र तैयार हुआ सामने दिखाई दे रहा है और निश्चय होगा कि ... और चलते-फिरते यह नशा और खुशी होगी कि कल यह पुराना शरीर छोड़ नया शरीर धारण करेंगे।''

अ.बापदादा 4.7.74

''जब तीनों ही लाइट जगमगाती हुई दिखाई दें तब ही सबको साक्षात्कार करा सकेंगे। प्योरिटी की लाइट, सतोप्रधान दिव्य-दृष्टि की लाइट और मस्तक मणि की लाइट - यह तीतों ही सम्पूर्ण बनाने की मुख्य बातें हैं।''

अ.बापदादा 24.4.74

'''अशरीरी भव' - यह वरदान प्राप्त कर लिया है ? जिस समय संकल्प करो कि मैं अशरीरी हूँ, उसी सेकेण्ड स्वरूप बन जाओ। ऐसा अभ्यास सहज हो गया है ? यह सहज अनुभव होना ही सम्पूर्णता की निशानी है।''

अ.बापदादा 8.12.75

''सम्पूर्ण स्टेज की निशानियां - पहली निशानी पुरानी दुनिया की किसी भी व्यक्ति वा वैभव से संकल्पमात्र वा स्वप्न मात्र भी लगाव नहीं होगा ... सर्व आत्माओं को कल्याण और रहम की दृष्टि से देखेंगे। ... हर परिस्थिति वा परीक्षा में सदा स्वयं को विजयी अनुभव करेंगे। ... सदा साक्षीपन की सीट पर सेट होंगे।''

अ.बापदादा 7.10.75

''आप शक्तियों में प्रेम और शक्ति के दोनों गुण समान होने चाहिए। जितना शक्ति स्वरूप, उतना ही प्रेम स्वरूप। ... यह है शक्तिपन की अन्तिम सम्पूर्णता की निशानी।''

अ.बापदादा 13.3.69

सम्पन्नता

सम्पन्नता अर्थात् सर्व प्राप्ति स्वरूप की अनुभूति अर्थात् इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति। सम्पूर्णता, सम्पन्नता की जननी है और सम्पन्नता सम्पूर्णता का दर्पण है। सम्पन्नता, सन्तुष्टता की जननी है और जहाँ सन्तुष्टता है, वहाँ प्रसन्नता अवश्य होगी। सम्पन्नता का आधार सम्पूर्णता है और प्रसन्नता का आधार सन्तुष्टता है। प्रसन्नता प्राणी मात्र का अभीष्ट लक्ष्य है।

ज्ञान-गुण-शक्तियों और स्थूल साधन सम्पत्ति में सम्पन्नता

वर्तमान जगत में मनुष्य स्थूल साधन-सम्पत्ति की सम्पन्नता को ही जीवन की सम्पन्नता समझता है परन्तु स्थूल साधन-सम्पत्ति की सम्पन्नता भी उसके ज्ञान-गुण-शक्तियों की सम्पन्नता पर ही आधारित होती है। जो आत्मा ईश्वरीय ज्ञान-गुण-शक्तियों से संगमयुग पर जितना सम्पन्न बनती है, वह उतना ही सारे कल्प में स्थूल साधन-सम्पत्ति से सम्पन्न बनती है।

ये विविधतापूर्ण विश्व-नाटक है, इसमें विविधता अवश्य सम्भावी है और विविधता ही इसकी शोभा है। इस विश्व-नाटक में एक समान साधन-सम्पन्ति सबको मिलना सम्भव नहीं है परन्तु विविधता होते भी आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर सम्पूर्णता और सम्पन्नता को अनुभव कर सकती है क्योंकि सम्पूर्णता और सम्पन्नता हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है। परमात्मा पिता ने तो हमको ज्ञान देकर अपने सम्पूर्ण और सम्पन्न स्वरूप का अनुभव कराया है परन्तु हम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर जीवन की सम्पूर्णता और सम्पन्नता अनुभव करें, वह विशेष बात है, जो हर आत्मा के अपने पुरुषार्थ पर निर्भर है। जो विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान और आत्मिक गुण-शक्तियों की धारणा के आधार पर ही सम्भव है। ये सम्पूर्णता और सम्पन्नता ही सन्तुष्टता और प्रसन्नता का आधार है।

''होली मनाना अर्थात् बीती को बीती करना। होली मनाना अर्थात् दिल में कोई भी छोटा-बड़ा दाग़ नहीं रहना, बिल्कुल साफ दिल, सर्व प्राप्ति सम्पन्न।''

अ.बापदादा 19.3.2000

''समय समीप आना अर्थात् हर बच्चे को सम्पन्न बनना। जब आप बच्चे सम्पन्न बनेंगे तब समय पर जो परिवर्तन होना है, वह हो सकेगा। तो समय इतला दे रहा है कि मैं समीप आ रहा हूँ और बाप बच्चों को सम्पन्न बनने का इशारा दे रहे हैं। बाबा ने सम्पन्न बनने के लिए आज सभी को एक शब्द याद दिलाया, वह शब्द है - 'करावनहार'। ... मैं बाप समान करावनहार

हूँ, मालिक बनकर कर्मेन्द्रियों से कर्म कराने वाली। ये स्मृति रहेगी तो मन, बुद्धि, संस्कार जो सूक्ष्म कर्मचारी हैं, वे आपके आर्डर में चलेंगे।''

अ.बापदादा का सन्देश 30.5.04 गुल्जार दादी के द्वारा

सम्पन्नता ब्राह्मण जीवन का मुख्य गुण है क्योंकि परमात्मा पिता द्वारा आत्मा को सर्व प्राप्तियों का वर्सा मिलता है। सम्पन्नता की कमी का कारण अपनी प्राप्तियों को न देखकर दूसरों की प्राप्तियों को देखना और उनके प्रति लालायित होना है। किसी दूसरे की प्राप्तियों के प्रति लालायित होने से आत्माओं की इच्छायें बढ़ती रहती हैं। जिसके लिए बाबा ने कहा है - तुम बच्चों की स्थिति इच्छा मात्रम् अविद्या की होनी चाहिए, इच्छा तुमको अच्छा बनने नहीं देगी, कामना माया का सामना करने नहीं देगी। वास्तविकता ये है कि सभी आत्मायें अपने मूल स्वरूप में सम्पन्न हैं और परमात्मा आकर आत्माओं को यथार्थ ज्ञान देकर उनके मूल स्वरूप का अनुभव कराकर सच्ची सम्पन्नता का अनुभव कराता है परन्तु जो आत्मायें उनकी श्रीमत को यथार्थ रीति न समझकर, अपनी प्राप्तियों को नहीं देखते हैं, उनको अनुभव नहीं करते हैं, उनका सुख अनुभव नहीं करते हैं, वे ही दूसरों की प्राप्तियों को देखते हैं, उनकी तरफ लालायित होते हैं, जिससे वे सदा ही अपने में कमी अनुभव करते हैं और उस कमी को पूरा करने के लिए इच्छाओं के जाल में फंसे रहते हैं और कभी भी सच्ची सम्पन्नता का अनुभव नहीं कर पाते हैं, जिससे वे इस ब्राह्मण जीवन का समय और संकल्प व्यर्थ गंवाते रहते हैं। जहाँ सम्पन्नता नहीं है, वहाँ सन्तुष्टता और प्रसन्नता हो नहीं सकती।

''सर्वशक्तिवान बाप ने सभी ब्राह्मण आत्माओं को समान सर्व शक्तियों का वर्सा दिया है। ... फिर भी कोई सर्वशक्ति सम्पन्न बने और कोई सिर्फ शक्ति सम्पन्न बने, सर्व नहीं। कोई सदा शक्ति स्वरूप बनें, कोई कभी-कभी शक्ति स्वरूप बनें हैं। ... बाप के आगे जी हाजिर करने वाले के आगे हर शक्ति भी जी हाजिर करती है।''

अ.बापदादा 20.12.92

वास्तविकता पर विचार करें तो विश्व की साधन-सम्पत्ति तो वही है, उसमें कोई घटती-बढ़ती न तो होती है और न ही हो सकती है परन्तु उस साधन-सम्पत्ति पर स्वामित्व का परिवर्तन अर्थात् रिजर्वेशन अवश्य होता है, जो विश्व-नाटक के पार्ट और आत्मा के पुरुषार्थ अर्थात् कर्म के आधार पर निर्भर करता है। किसी भी साधन-सम्पत्ति पर जब एक का रिजर्वेशन समाप्त होता है तो उस पर दूसरे का रिजर्वेशन स्वत: आरम्भ हो जाता है। इस विश्व-नाटक में कोई चीज सदा काल के लिए एक जैसी और एक के पास नहीं रहती है, सदा परिवर्तन होती रहती है और ये परिवर्तन ही इस विश्व-नाटक की शोभा है। जो आत्मा विश्व-

नाटक की इस परिवर्तनशीलता को समझ लेता है, वह सदा ही सम्पन्नता का अनुभव करता है क्योंकि वह कभी भी दूसरे की साधन-सम्पत्ति की ओर लालायित नहीं होता है। वह सदा अपनी साधन-सम्पत्ति से सनतुष्ट रहता है और उसका सुख अनुभव करता है।

''सबका लक्ष्य है सम्पूर्ण और सम्पन्न बनने का। ... कब तक ? ... अब ऐसी मीटिंग करो कि कब तक सम्पन्न बनेंगे ... क्योंकि बाप से प्रकृति पूछती है कि कब तक विनाश करें ? तो बापदादा क्या जबाब दें। .. बापदादा तो बच्चों से ही पूछेंगे।''

अ.बापदादा 21.10.05

'''अप्राप्त नहीं कोई वस्तु इस ब्राह्मण जीवन में' ... जिसको सर्व प्राप्तियां हैं, उसकी निशानी प्रत्यक्ष जीवन में क्या दिखाई देगी ? सर्व प्राप्तियों की निशानी है - सदा उसके चेहरे और चलन में प्रसन्नता की पर्सनॉलिटी दिखाई देगी। ... जिसको सन्तुष्टता भी कहते हैं।''

अ.बापदादा 22.3.96

''प्रसन्नता अगर कम होती है तो उसका कारण प्राप्ति कम और प्राप्ति कम का कारण - कोई न कोई इच्छा है। इच्छा का फाउण्डेशन ईर्ष्या और अप्राप्ति है। ... मोटे रूप की इच्छायें समाप्त हुई हैं लेकिन रॉयल इच्छायें ज्ञान के बाद सूक्ष्म रूप में रही हुई हैं।''

अ.बापदादा 22.3.96

यथार्थ सम्पन्नता की स्थिति

बाबा से हमको ज्ञान, गुण, शक्तियां प्राप्तियां हुई हैं, उनकी धारणा ही यथार्थ सम्पन्नता है और ये ज्ञान, गुण, शक्तियां ही स्थूल सम्पन्नता का आधार हैं। जो आत्मा उस ज्ञान, गुण, शक्तियों की धारण करती है, वह इस जीवन में सदा सम्पन्नता का अनुभव करती है और भविष्य की सम्पन्ता का आधार निर्माण करती है। इसलिए ही बाबा ने कहा है और जीवन का अनुभव भी ऐसा ही है कि अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के जीवन में। जो सच्चा ब्राह्मण है, वह जीवन में सदा सम्पन्नता का अनुभव अवश्य करेगा। यदि कहाँ अप्राप्ति का अनुभव होता है, तो वह सच्चा ब्राह्मण नहीं है अर्थात् उसने ईश्वरीय प्राप्तियों का महत्व नहीं समझा है, उनको अनुभव नहीं किया है। ब्राह्मण अर्थात् अपने मूल स्वरूप में स्थित आत्मा और मूल स्वरूप सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न है। जिसके लिए बाबा कहते हैं - बीज सदा भरपूर होता है अर्थात् सम्पन्न होता है। जहाँ भरपूता में कमी होती है, वहीं हलचल होती है।

''झुकाव तब होता है, जब लगाव होता है ... पूज्य आत्मा सम्पन्न होने के कारण सदा ही

अपने रुहानी नशे में रहेगी। उसकी मन-बुद्धि का झुकाव न देह के सम्बन्ध में और न देह के पदार्थ में होगा। सबसे न्यारा और प्यारा।''

अ.बापदादा 24.9.92 पार्टी 4

''संगमयुग का समय ही सदा उत्सव का समय है। ... सदा बाप की महिमा और अपनी प्राप्तियों के गीत गाते रहो। ... सहज है और सदा सहज अनुभव करते सम्पन्न बनना ही है। कभी भी ये नहीं सोचो कि पता नहीं हम सम्पन्न बनेंगे या नहीं बनेंगे। ये कमजोर संकल्प कभी आने नहीं दो। सदा यही सोचो कि अनेक बार मैं ही बनी हूँ और मुझे ही बनना है।''

अ.बापदादा 7.3.93

''बापदादा यही चाहते हैं कि जो प्रतिज्ञा की है - बाप समान बनने की तो हर एक बच्चे की सूरत में बाप की मूरत दिखाई दे। हर एक बोल बाप समान हो। बापदादा के बोल वरदान रूप बन जाते हैं। ... तो चेक करो - हमारी सूरत में बाप की मूरत दिखाई देती है ? बाप की मूरत क्या है - हर बात में सम्पन्न।''

अ.बापदादा 5.3.08

''हिम्मतवान सपूत पात्र बच्चे कभी अपने को किसी भी खज़ाने से खाली अनुभव नहीं करेंगे। उनके दिल से सदा यह गीत स्वत: बजता है - अप्राप्त नहीं कोई वस्तु बाप के हम बच्चों के भण्डारे में। उनकी दृष्टि, वृत्ति, वायब्रेशन्स से, मुख से, सम्पर्क से सदा भरपूर आत्माओं का अनुभव होता है।''

अ.बापदादा 9.1.93

सन्तुष्टता

सन्तुष्टता प्रसन्नता का आधार है अर्थात् जब जीवन में सन्तुष्टता होगी, तब ही आत्मा प्रसन्नता का अनुभव करेगी। और सन्तुष्टता के लिए सम्पन्नता परमावश्यक है अर्थात् जहाँ सम्पन्नता होगी, वहीं सन्तुष्टता होगी। सन्तुष्टता अर्थात् इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति। बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है - असन्तुष्टता का कारण कोई न कोई कमी है। अनुभव भी ऐसा ही कहता है कि जब जीवन में किसी चीज की कमी अनुभव होती है, तब ही असन्तुष्टता आती है, जो आत्मा की प्रसन्नता को गायब कर देती है। बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है - सन्तुष्टता ब्राह्मण जीवन की शोभा है। जो स्वयं सन्तुष्ट होगा वही दूसरी आत्माओं को भी सन्तुष्ट कर सकेगा। जिसका खुद का ही पेट खाली होगा, वह अन्य का पेट कैसे भर सकेगा। जिसके जीवन में परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान, गुण, शक्तियों की यथार्थ रीति धारणा होगी,

वह कभी भी असन्तुष्टता को अनुभव नहीं कर सकता। परमात्मा ने जो ज्ञान धन दिया है, उसका एक-एक रतन अमूल्य है और परमानन्द को देने वाला है। विश्व के इतिहास पर दृष्टि डालें तो इस सत्य ज्ञान की प्राप्ति के लिए द्वापर युग के अनेकानेक राजाओं ने अपनी राजाई को त्याग कर दिया और परमात्मा को प्राप्त करने के लिए कठिन तपस्या की परन्तु वे उसको पा नहीं सके। अभी हमको वह परमात्मा मिला है और उनसे हमको वह ज्ञान-धन मिल रहा है। जो आत्मा इस जीवन और इस सत्य ज्ञान के मूल्य को समझता है, वह कभी भी जीवन में असन्तुष्टता का अनुभव नहीं कर सकता।

''ब्राह्मण जीवन की विशेषता है सन्तुष्टता ... सन्तुष्टता का आधार है बाप द्वारा प्राप्त हुई सर्व प्राप्तियों की सम्पन्नता अर्थात् भरपूर आत्मा। असन्तुष्टता का कारण अप्राप्ति होती है। ... बापदादा सदैव बच्चों को कहते हैं - बाप और वर्से को याद करो। बाप का वर्सा है सर्व प्राप्तियां।''

अ.बापदादा 17.3.91

असन्तुष्टता आत्मा को अनेक प्रकार के चिन्तन के लिए बाध्य करती है क्योंकि आत्मा अपने में या अपने पास जो भी कमी महसूस करती है, उसके प्राप्ति के लिए उसका चिन्तन अवश्य चलता है और पुरुषार्थ करती है। ये चिन्तन आत्मिक शक्ति का ह्रास करता है, जिससे आत्मा और कमजोर होती जाती है, जिससे कमियां अर्थात् अप्राप्ति की महसूसता और बढ़ती जाती है, जिससे आत्मा सच्चे सुख से वंचित होती जाती है अर्थात् प्रसन्नता से वंचित हो जाती है।

असुन्तटता के कारणों पर विचार करें तो हम देखेंगे कि आत्मा की असन्तुष्टता का कारण है - अपनी प्राप्तियों को न देखकर, उनका सुख अनुभव न करके दूसरों की प्राप्तियों को देखना और उनका चिन्तन करना है। परन्तु इस सत्य को सदा याद रखना चाहिए कि ये विश्व-नाटक विविधतापूर्ण है, जिसके कारण एक साथ एक समान प्राप्तियाँ सर्व आत्माओं को न हैं और न हो सकती हैं। ये विविधता ही इस विश्व-नाटक की शोभा है।

''आज बापदादा अपने चारो ओर के सन्तुष्ट रहने वाले सन्तुष्ट मणियों को देख रहे हैं। हर एक के चेहरे पर सन्तुष्टता की चमक दिखाई दे रही है।''

अ.बापदादा 2.4.08

''बापदादा सन्तुष्टमणियों को देख रहे हैं ... सन्तुष्टमणियां स्वयं को भी प्रिय हैं, बाप को भी प्रिय हैं और परिवार को भी प्रिय हैं क्योंकि सन्तुष्टता महान शक्ति है। सन्तुष्टता तब धारण होती है, जब सर्व प्राप्तियां प्राप्त होती है। अगर प्राप्ति कम, सन्तुष्टता भी कम होती है।

सन्तुष्टता और शक्तियों को भी आवाह्न करती है।''

अ.बापदादा 2.4.08

''जो सन्तुष्ट रहता है, उसकी निशानी है, वह सदा प्रसन्नचित्त दिखाई देता है, उसका चेहरा सदा हर्षितमुख स्वत: ही रहता है। ... कोई भी परिस्थिति सन्तुष्ट आत्मा की स्व-स्थिति को हिला नहीं सकती।'' अ.बापदादा 2.4.08

''सन्तुष्ट आत्मा को परिस्थिति कार्टून शो अर्थात् मनोरंजन दिखाई देती है। ... परिस्थिति उसके ऊपर वार नहीं कर सकती, हार जाती है, इसलिए वह अतीन्द्रिय सुख में रहता है और ये जीवन मनोरंजन की जीवन अनुभव करता है।'' अ.बापदादा 2.4.08

सन्तुष्टता के गुण-धर्म

सन्तुष्ट आत्मा सदा प्रसन्नता अर्थात् अतीन्द्रिय सुख के अनुभूति में रहेगी।

सन्तुष्ट आत्मा की कभी भी किसी व्यक्ति की प्राप्तियों में आंख नहीं जायेगी।

सन्तुष्ट आत्मा कभी भी किसी की प्राप्तियों से प्रभावित नहीं होगी।

सन्तुष्ट आत्मा सदा अपनी प्राप्तियों के सुख के अनुभव में रहेगी और वह दूसरों को भी वह अनुभव करायेगी।

सन्तुष्ट आत्मा कभी भी किसी आत्मा से किसी प्राप्ति की इच्छा नहीं रखेगी।

सन्तुष्ट आत्मा सदा दाता होगी और दाता बन दूसरों को भी देने का पुरुषार्थ करेगी।

सन्तुष्ट आत्मा सदा प्रभु-चिन्तन, ज्ञान-चिन्तन में मग्न रहेगी क्योंकि उसको अन्य किसी प्रकार का चिन्तन नहीं होगा

सन्तुष्ट आत्मा सदा अपने स्वमान में रहेगी और अन्य आत्माओं को सम्मान देगी।

सन्तुष्ट आत्मा सदा निर्मान होगी, जिसके लिए गायन है कि फलों से भरपूर वृक्ष झुका रहता है।

सन्तुष्ट आत्मा के प्रति सदा सर्व की शुभ भावना और शुभ कामना होगी, जिससे उसका दुआओं का खाता बढ़ता रहेगा, सदा भरपूर रहेगा।

''वर्तमान समय बापदादा दो बातों पर बार-बार अटेन्शन दिला रहे हैं - एक स्टॉप अर्थात् बिन्दी लगाओ और दूसरा स्टॉक जमा करो। दोनों बहुत जरूरी हैं। तीन खज़ाने विशेष जमा करो। एक - अपने पुरुषार्थ की प्रालब्ध अर्थात् प्रत्यक्ष फल जमा करो, दूसरा - सदा सन्तुष्ट

रहना और सन्तुष्ट करना। सिर्फ रहना नहीं लेकिन करना भी। उसके फल स्वरूप दुआयें जमा करो। ... उसकी विधि है सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना। तीसरा - सेवा द्वारा सेवा का फल जमा करना, पुण्य का खाता जमा करना।''

अ.बापदादा 25.03.05

''शुभ चिन्तन और शुभ चिन्तक दोनों ही स्थिति में बिजी रहना, वायुमण्डल फैलाना - यह अच्छा है। ... जो भी आप निमित्त हैं, उनको विशेष इस समय यह अटेन्शन रखना है कि सन्तुष्ट रहना तो है ही लेकिन सब सन्तुष्ट रहें, वायुमण्डल सन्तुष्टता का रहे, उसके लिए आपस में कोई न कोई प्लेन बनाते रहना। जो भी निमित्त बने हुए हैं, उनको आजकल के वायुमण्डल प्रमाण स्वयं तो सन्तुष्ट रहना ही है लेकिन सन्तुष्ट करना भी है।''

अ.बापदादा 30.11.07 दादियों से

''सन्तुष्टता का आधार है - बाप द्वारा प्राप्त हुई सर्व प्राप्तियों में भरपूरता अर्थात् सम्पूर्णता। ... सन्तुष्टता की निशानी है प्रसन्नता अर्थात् वह स्वयं भी प्रसन्नचित्त होगी और दूसरे भी उसके सम्पर्क में आने से प्रसन्न होंगे।''

अ.बापदादा 17.3.91

प्रसन्नता

बाबा के महावाक्य हैं - प्रसन्नता ब्राह्मण जीवन की पर्सनॉलिटी है, प्रसन्नता ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ श्रृंगार है, खुशी बाप का वर्सा है आदि आदि।

प्रसन्नता का आधार क्या है, प्रसन्नता सदा क्यों नहीं रहती, सदा प्रसन्नता कैसे रहे, उसका अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है ? इन सब बातों का उत्तर हमारी बुद्धि में होगा, तब ही हम सदा प्रसन्न रह सकेंगे।

प्रसन्नता का आधार सन्तुष्टता है और सन्तुष्टता का आधार सम्पन्नता है। अभी संगमयुग पर बाबा ने हमको जो ज्ञान, गुण, शक्तियाँ दी हैं, उनसे सम्पन्न आत्मा ही जीवन में सन्तुष्टता का अनुभव कर सकती है। अभी सन्तुष्टता और प्रसन्नता सारे कल्प की प्रसन्नता का आधार है। भौतिक सम्पत्ति कितनी भी हो लेकिन जब ईश्वरीय सम्पत्ति अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियाँ नहीं हैं तब तक आत्मा जीवन में सम्पन्नता अनुभव नहीं कर सकती है और जब सम्पन्नता नहीं तो सन्तुष्टता का तो प्रश्न ही नहीं उठता है और जब सन्तुष्टता नहीं तो प्रसन्नता कहाँ रह सकती है। इसलिए सम्पन्नता और सन्तुष्टता और प्रसन्नता के लिए -

ईश्वरीय प्राप्तियों का ज्ञान हो, उसका अनुभव हो और उस पर निश्चय होना अति आवश्यक है।

जब ये निश्चय होगा, तब ही उनकी जीवन में सच्ची प्रसन्नता का अनुभव होगा। आत्मा की आन्तरिक प्रसन्नता की झलक उसके चेहरे और चलन से स्पष्ट दिखाई देती है।प्रसन्नता स्थाई रहे, उसके लिए -

श्रेष्ठ कर्म और श्रेष्ठ कर्म-फल का खाता संचित होगा तो प्रसन्नता अवश्य स्थाई रहेगी।

हम कलियुग से सतयुग, नर्क से स्वर्ग, जीवन बन्ध से जीवनमुक्त स्थिति के पथ के पथिक हैं, जिसको बाबा कहते हैं तुम रुहानी यात्रा पर हो। यदि हमको अपना पथ स्पष्ट होगा तो हमको अपना उज्ज्वल भविष्य स्पष्ट दिखाई देगा, जिससे जीवन में सदा प्रसन्नता रहेगी। यदि प्रसन्नता नहीं रहती है तो अपने पथ को चेक करो, कहाँ भटक तो नहीं गये हैं अर्थात् कहाँ बुद्धि में कोई मूँझ तो नही है।

हमारा परमात्मा के साथ बुद्धियोग ठीक होगा तो उनसे मिलन का अनुभव होगा, जिससे आत्मा सदा प्रसन्नता का अनुभव करेगी।

ज्ञान का चिन्तन चलता रहेगा तो ज्ञान रतनों का खज़ाना जमा होता रहेगा, तो खज़ानों के जमा का नशा और खुशी अवश्य होगी।

संग भी आत्मा के सुख या दुख का आधार या कारण बनता है। जब हमारा संग अच्छा होगा तो जीवन में खुशी की अनुभूति अवश्य होगी।

मन-बुद्धि, तन-मन-धन सदा ईश्वरीय सेवा में लगा रहेगा तो सदा खुशी रहेगी। बाबा भी कहते हैं - संगमयुग पर सेवा ही मेवा है अर्थात् सेवा आत्मा को खुशी और शक्ति की अनुभूति कराती है।

योग अच्छा होगा तो आत्मा के ऊपर से विकर्मों का बोझ समाप्त होगा और आत्मा अपने को हल्का अनुभव करेग, जिससे आत्मा को प्रसन्नता होगी।

हमको सदा दूसरों को देने का संकल्प रहे, लेने का नहीं। जो दूसरों से कुछ लेता है, वह उसके अहसान में दब जाता है और किसके अहसान में दबा हुआ व्यक्ति कब सदा प्रसन्न नहीं रह सकता। जो दाता बनकर देने वाला होगा, वह सदा प्रसन्नता का अनुभव करेगा। दाता बनकर देने से आत्मा में शक्ति आती है।

जो अधिक समय प्रकृति के सम्पर्क में रहेंगे, वे तन से स्वस्थ रहेंगे, तन की स्वस्थता का प्रभाव मन पर भी होता है और जो तन-मन से स्वस्थ होंगे, वे प्रसन्न भी अवश्य रहेंगे। खान-पान शुद्ध और सन्तुलित होगा तो खुशी रहेगी।

सदा रुहानी-जिस्मानी एक्सरसाइज़ करते रहेंगे तो तन-मन सदा स्वस्थ रहेगा और जीवन में सदा प्रसन्नता रहेगी।

यथार्थ ज्ञान की धारणा से आत्मा भूतकाल के चिन्तन और भविष्य की चिन्ता से मुक्त हो जाती है। जब हम भूतकाल के चिन्तन और भविष्य की चिन्ता से मुक्त होंगे तो सदा प्रसन्न रहेंगे।

ज्ञान-गुण-शक्तियों का दान करते रहेंगे तो वे बढ़ते रहेगे और सदा जीवन में प्रसन्नता रहेगी।

ज्ञान-गुण-शक्तियों का दान करते रहेगे तो दूसरों का जीवन अच्छा बनेगा और उनकी दुआयें हमको मिलेंगी और दूसरों की दुआयें भी आत्मा को खुशी प्रदान करती हैं। जिसको इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान होगा, वह इसको साक्षी होकर इस खेल को देखेगा और ट्रस्टी बनकर पार्ट बजायेगा, जिससे उसके जीवन में अहंकार-हीनता नहीं होगी और जो अहंकार-हीनता दोनों से मुक्त होगा, वह जीवनमुक्ति स्थिति का अनुभव करेगा। जीवनमुक्त स्थिति परमानन्दमय स्थिति है।

मान-शान की इच्छा वाला सदा काल के लिए प्रसन्न नहीं रह सकता। जो मान-शान की इच्छा न रखकर अपनी इश्वरीय शान में रहता है, वह सदा प्रसन्न रहता है।

जो दूसरों की प्राप्तियों को न देख अपनी प्राप्तियों को देखते हैं, उनका सदुपयोग करते हैं, वे सदा प्रसन्न रहते हैं और जो दूसरों की प्राप्तियों को देखते हैं, वे राग-द्वेष, ईर्ष्या-घृणा के वशीभूत दुखी होते रहते हैं।

अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा सदा खुशी और ईश्वरीय नशे में रहेगी, वह सदा निर्भय, निश्चिन्त, निर्विकल्प होगी और जो निर्भय, निश्चिन्त, निर्विकल्प स्थिति में होगा वह प्रसन्न अवश्य रहेगा।

आत्मा के इस पुरुषार्थ में कोई व्यक्ति किसके लिए बाधक या साधक नहीं है, उसके लिए आत्मा स्वयं ही उत्तरदायी है।

Q. वर्तमान जगत की विकराल परिस्थितियों में सफलतापूर्वक जीने और सदा प्रसन्न रहने का पुरुषार्थ क्या है?

विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त को यथार्थ रीति समझना और समझकर नाटक को साक्षी होकर देखना और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाना ही इस जीवन की सफलता और प्रसन्नता का सहज पुरुषार्थ है, जिसके लिए ही परमात्मा आया है और हमको ये ज्ञान दिया है और पुरुषार्थ

करा रहा है।

''कई बच्चे प्रशंसा के आधार पर प्रसन्नता अनुभव करते हैं लेकिन वह प्रसन्नता अल्प काल की है। ... चेक करो कि मेरी प्रसन्नता प्रशंसा के आधार पर तो नहीं है? ... बाबा ने पहले भी सुनाया है कि रॉयल रूप की इच्छा का स्वरूप नाम, मान और शान है।''

अ.बापदादा 22.3.96

''जो नाम-मान के पीछे सेवा करते हैं ... यह मान नहीं है लेकिन अभिमान है। जहाँ अभिमान है, वहाँ प्रसन्नता रह नहीं सकती। सबसे बड़ा शान बापदादा के दिल में शान प्राप्त करो।''

अ.बापदादा 22.3.96

Q. परमानन्द का अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है?

आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है। विश्व-नाटक के विधि-विधान की यथार्थता को जानकर, निश्चयबुद्धि होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाना ही परमानन्द अनुभव करने का सहज साधन और साधना है। इसके लिए न समय की, न स्थान की और न किसी साधन-सम्पत्ति की आवश्यकता है और न ही कोई अन्य व्यक्ति इसमें बाधक या साधक हो सकता है। इसके लिए सत्य ज्ञान की धारणा, दृढ़ निश्चय, अटल विश्वास और सतत अभ्यास की आवश्यकता है।

संगमयुग पर पुरुषार्थ की सफलता और प्रसन्नता

प्रसन्नता का आधार है जीवन में सफलता। जीवन की सफलता अर्थात् संकल्प-बोल-कर्म में सफलता, इच्छाओं और प्राप्तियों में सन्तुलन। ये इच्छाओं और प्राप्तियों का सन्तुलन ही आत्मा की प्रसन्नता का आधार है, जिसके लिए बाबा ने यह ज्ञान दिया है। जितना ज्ञान की समझ होगी, उसकी धारणा होगी, उतना ही हमारी इच्छाओं और प्राप्तियों में सन्तुलन होगा और ये जीवन सदा खुशी से भरपूर रहेगा। यही इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति है।

ये विश्व-नाटक का नियम है कि जब आत्मा पवित्र होती है तो उसकी इच्छाओं, आवश्यकताओं और प्राप्तियों में सन्तुलन होता है, जिससे वह सदा सम्पन्नता का अनुभव करती है और सम्पन्नता के कारण सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव स्वत: होता है।

सभी आत्मायें परमात्मा के बच्चे हैं, जो सदा सम्पूर्ण और सम्पन्न सागर है, इसलिए सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता हर आत्मा का जन्मसिद्ध अधिकार है अर्थात् प्रकृति प्रदत्त मूलभूत गुण है अर्थात् हर आत्मा परमधाम जाते समय और जब परमधाम से इस धरा

पर पार्ट बजाने के लिए आते समय सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव अवश्य करती है। जो भी आत्मा परमधाम से आती है तो पहले जन्म या इस धरा पर पार्ट के पहले कुछ समय तक वह सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव अवश्य करती है लेकिन वह पहले जन्म की सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता, प्रसन्नता उतरती कला की होती है और परमधाम जाते समय अर्थात संगमयुग की सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता, प्रसन्नता ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर होती है और चढ़ती कला की होती है, इसलिए संगमयुग की ये प्राप्ति विशेष महत्वपूर्ण है।

''ब्राह्मण अर्थात् सदा सम्पन्न आत्मा। शक्तियों से भी सम्पन्न, गुणों से भी सम्पन्न, सर्व ज्ञान के खज़ाने से सम्पन्न ... जब लास्ट जन्म तक आपकी दिव्यता, महानता आपके जड़ चित्रों से भी अनुभव करते हैं तो वह दिव्यता वर्तमान समय आप चेतन्य श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा अनुभव होता है?''

अ.बापदादा 31.12.99

''अमृतवेले से लेकर हर चलन को चेक करो कि हमारी दृष्टि अलौकिक है, चेहरे का पोज़ सदा हर्षित है? एकरस, अलौकिक है वा समय प्रति समय बदलता रहता है? ... साधारण कार्य करते हुए भी चेहरा और चलन विशेष रहता है?''

अ.बापदादा 31.12.99

प्रसन्नता की स्थिति, उससे दैहिक एवं मानसिक लाभ एवं उसका प्रभाव

आत्मा की प्रसन्नता का प्रभाव इस स्थूल देह पर भी पड़ता है तो मन्सा पर भी होता है अर्थात् प्रसन्न आत्मा अपने को सदा स्वस्थ अनुभव करती है। न सिर्फ अनुभव करती है लेकिन यथार्थ में भी दैहिक और मानसिक रूप से स्वस्थ होती है। उससे जो वायब्रेशन्स फैलते हैं, वे प्रसन्नता का वातावरण निर्माण करते हैं, जो अन्य आत्माओं को भी प्रसन्नता का अनुभव कराता है। दैहिक स्थिति का प्रभाव मन और मन का प्रभाव देह पर अवश्य होता है क्योंकि दोनों एक-दूसरे के सहयोगी हैं परन्तु मानसिक स्थिति अर्थात् आत्मिक स्थिति का प्रभाव मूल है और दैहिक सथिति का प्रभाव गौड़ है। आत्मा की प्रसन्नता के लिए दैहिक और मानसिक दोनों का स्वस्थ होना अति आवश्यक है और प्रसन्नचित्त आत्मा के देह और मन दोनों स्वस्थ होते हैं।

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और समर्पणता का सम्बन्ध

प्रसन्नता हर आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य है लेकिन प्रसन्नता का आधार सम्पूर्णता है। सम्पूर्णता जीवन में कैसे आये, यह भी एक प्रश्न है। सदा सम्पूर्ण तो एक परमात्मा ही है और वही आकर आत्माओं को और प्रकृति को भी सम्पूर्ण अर्थात् उनके सतोप्रधान रूप में स्थित करता है। जो आत्मायें जितना और जिस स्थिति तक उनके प्रति समर्पण होती हैं, वे उतना ही सम्पूर्णता को पाती हैं। इस प्रकार हम विचार करें तो सम्पूर्णता और समर्पणता का गहरा सम्बन्ध है। जो आत्मायें जिस विधि से और जैसे उनके प्रति समर्पण करेंगे, वे उसी विधि से और उतना ही सम्पूर्ण बनेंगे और जितना सम्पूर्ण बनेंगे, उस अनुसार ही इस सृष्टि रंगमंच पर आकर पार्ट बजायेंगे। उतना ही इस जीवन में सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव इस जीवन में भी करेंगी और भविष्य में भी करेंगी। हम सभी के आदर्श प्यारे ब्रह्मा बाबा ने अपना तन-मन-धन, सम्बन्ध-सम्पर्क अंश और वंश सहित परमात्मा के प्रति समर्पण किया और एक धक से समर्पण किया तो उन्होंने वैसे ही सम्पूर्णता को प्राप्त किया और सारे विश्व में वे ही पहले मानव हैं, जिन्होंने सम्पूर्णता को प्राप्त कर फरिश्ता रूप धारण किया, फरिश्ता स्वरूप से विश्व-कल्याण की सेवा कर रहे हैं और नये कल्प में आकर पहले नारायण बनेंगे। ब्रह्मा बाबा ने साकार में रहते भी सम्पूर्णता को अपने जीवन से प्रत्यक्ष किया, अनुभव कराया। ब्रह्मा बाबा का जीवन हमारे लिए समर्पणता का दर्पण है, जिस दर्पण में हम अपने जीवन की सर्म्पणता को देख सकते हैं और हम कहाँ तक सम्पूर्ण बने हैं या बनेंगे वह अनुभव कर सकते हैं और अपनी कमी-कमजोरी को पूरा कर सकते हैं।

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता के साथ समर्पणता का गहरा सम्बन्ध है। जितना समर्पणमयता होगी, उतना ही ईश्वरीय वर्सा अर्थात सम्पूर्णता-सम्पन्नता का इस जीवन में अनुभव करेंगे, जिसके आधार पर जीवन में अतीन्द्रिय सुख अर्थात् आनन्द की अनुभूति होगी। जितना अभी इस ब्राह्मण जीवन में सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की अनुभूति होगी, उतना ही अगले कल्प अर्थात् स्वर्ग में भौतिक प्राप्तियों की सम्पन्नता होगी और उसी अनुसार वहाँ भी सन्तुष्टता और प्रसन्नता की अनुभूति होगी।

''सर्व समर्पण बने हो ? ... सर्व में यह देह का भान भी आता है। ... इसलिए देह का भान तोड़कर समर्पण बनना है। ... यह देह का अभिमान बिल्कुल ही टूट जाये तब कहा जाये सर्व समर्पणमय जीवन। सर्व त्यागी, सर्व समर्पण जीवन वाला होगा, उनकी ही सम्पूर्ण अवस्था गाई जायेगी और जब सम्पूर्ण बन जायेंगे तब ही साथ जायेंगे।'' अ.बापदादा 25.1.69

''ज्ञान के राज़ों में जो अचल रहता है, उसका यादगार अचल-घर है। ... जो सदा विघ्न-विनाशक स्थिति में स्थित रहता है, वह सदा ही डबल लाइट रहता है। सबकुछ तेरा ... तेरा कहने से भरपूर हो जायेंगे, मेरा-मेरा कहेंगे तो खाली हो जायेंगे। सदा डबल लाइट अर्थात् सबकुछ तेरा। अगर जरा भी मोह है तो मेरा है। तेरा अर्थात् निर्मोही।''

अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 4

''ब्रह्मा बाप सर्व समर्पणता के लक्ष्य से ही सम्पूर्ण बने। जितना समर्पण, उतना ही सम्पूर्ण। लेकिन समर्पण का भी विशाल रूप क्या है? ... एक तो हर संकल्प, दूसरा हर सेकेण्ड अर्थात् समय, तीसरा कर्म और चौथा सम्बन्ध एवं सम्पत्ति जो भी है, वह भी समर्पण। ... आत्मा और शरीर के सम्बन्ध का भी समर्पण।'' अ.बापदादा 29.6.70

''जितना समर्पण, उतना ही सम्पूर्ण। ... इसलिए लक्ष्य सदैव सम्पूर्णता का रखना है, जो सम्पूर्ण मूर्त प्रत्यक्ष प्रख्यात हो चुके हैं, उनका लक्ष्य रखना है। जो अभी गुप्त हैं, प्रत्यक्षता में नहीं आये हैं, उनका भी लक्ष्य नहीं रख सकते।'' अ.बापदादा 29.6.70

''आप नॉलेज की स्थिति के दर्पण से अपने स्वरूप का साक्षात्कार कराने वाले दर्पण हो। दर्पण जितना पॉवरफुल होता, उतना ही साक्षात्कार स्पष्ट होता है। ... जितना-जितना स्वयं अर्पणमय होगा, उतना ही दर्पण पॉवरफल होगा।'' अ.बापदादा 11.7.71

''दर्पण के सामने आने से न चाहते हुए भी अपना स्वरुप दिखाई देता है। इस रीति से जब सदैव एक की याद में बुद्वि को अर्पण रखेंगे तो आप चेतन्य दर्पण बन जायेंगे। जो भी सामने आयेंगे वह अपना साक्षात्कार करेंगे वा अपने स्वरुप को सहज अनुभव करते जायेंगे।''

अ.बापदादा 10.6.71

सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता, प्रसन्नता का परस्पर सम्बन्ध

सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता और प्रसन्नता का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है अथवा ऐसे कहें कि एक-दूसरे पर आधारित हैं। यथार्थ ज्ञान और उसकी धारणा ही सम्पूर्णता का आधार है, सम्पूर्णता सम्पन्नता का आधार है, सम्पन्नता सन्तुष्टता का अधार है और सन्तुष्टता प्रसन्नता का आधार है। प्रसन्नता प्राणी मात्र का अभीष्ट लक्ष्य है। परमात्मा यथार्थ ज्ञान का दाता है, वह ज्ञान का सागर है, इसलिए वह सदा सम्पूर्ण और सम्पन्न है, वही आकर आत्माओं को सम्पूर्णता के लिए मार्ग प्रदर्शन करता है। सम्पूर्णता को प्राप्त आत्मा अर्थात् स्व-स्थिति में स्थित आत्मा को सर्व प्राप्तियां स्वत: होती है, उसकी स्थिति इच्छामात्रम् अविद्या की होती है।

उसके जीवन में ब्रह्मचर्य की धारणा स्वत: होती है। जब आत्मा अपने बीजरूप स्थिति में स्थित होती है तो सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव स्वत: करती हैं। परमात्मा भी हर आत्मा को इस स्थिति का अनुभव कराता है परन्तु उस अनुभव को सदाकाल का बनाना हर आत्मा का अपना पुरुषार्थ है अर्थात् सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता आत्माओं को ईश्वरीय वर्सा है, जन्मसिद्ध अधिकार है अधिकार को पाकर उसमें वृद्धि करना हर आत्मा का अपना पुरुषार्थ है। जो जितना इस अनुभव में वृद्धि करता है, वह अभी भी उतना अधिक समय अतीन्दिय सुख की अनुभूति करता है और उतना ही भविष्य के लिए सुख का खाता संचित करता है। अभी की सम्पन्नता ही भविष्य सम्पन्नता का आधार है।

परमधाम है सम्पूर्णता को प्राप्त आत्माओं का घर। हर आत्मा जब इस धरा पर पार्ट बजाने आती है तो उसकी सम्पूर्ण पावन स्थिति होती है, जिसके आधार पर जीवन में पूर्ण सुख-शान्ति का अनुभव करती है और जब वापस घर जाती है तो भी सम्पूर्ण पावन बनकर ही जाती है। भल ये विश्व-नाटक विविधतापूर्ण है, जिसके कारण हर आत्मा की सम्पूर्णता की स्थिति भी अपनी-अपनी होती है अर्थात् सबकी एक समान नहीं होती है परन्तु होती हर आत्मा सम्पूर्ण पावन अर्थात् उसमें किसी तरह की अपवित्रता का अंश नहीं होता है।

''थोड़े समय बाद हरेक अपने-अपने नम्बर प्रमाण सम्पूर्णता को प्राप्त हो जायेंगे। ... विजयी रतन अर्थात् अपने नम्बर प्रमाण सम्पूर्णता को प्राप्त हो। उनके लिए सारे ड्रामा के अन्दर वही सम्पूर्णता की फर्स्ट स्टेज है। ... इसलिए बापदादा सम्पूर्ण स्टेज और वर्तमान समय के पुरुषार्थ को देखते रहते हैं।'' अ.बापदादा 22.1.70

''जब तक यह ज्ञान नहीं है तब तक विनाशी इच्छायें कभी भी पूरी नहीं होती हैं। ... इच्छा कभी भी सदा सन्तुष्टता का अनुभव करने नहीं देती।''

अ.बापदादा 13.3.86

''सन्तुष्टता मानव जीवन का सर्वश्रेष्ठ श्रृंगार है और परमात्मा का परम उपहार है।''

अ.बापदादा 15.12.04

''सभी से बड़े ते बड़ा खज़ाना तो बाप मिला। पहले नम्बर का खज़ाना तो ये है ना! जैसे किसी को खज़ाने की चाबी मिल जाये तो गोया सब मिल गया। ... संगमयुग का समय भी बहुत बड़ा खज़ाना है। ... किसी भी बात में यदि सम्पन्न नहीं तो सूर्यवंशी नहीं कहेंगे।''

अ.बापदादा 8.5.73

''अगर अपने पुरुषार्थ के प्रति ही ज्ञान का खज़ाना व शक्तियों का खज़ाना लगाते रहते हो तो वह भी सम्पूर्ण स्टेज नहीं हुई। अब सर्व खज़ाने दूसरों के प्रति लगाने का समय है। ... दूसरों

को देने लग जायेंगे तो ही अपने आपको सर्व बातों में सम्पन्न होने का अनुभव करेंगे।''

अ.बापदादा 8.5.73

''हर संकल्प और हर सेकेण्ड विश्व के कल्याण के प्रति ही हो। ऐसी स्टेज को कहा जायेगा - सम्पूर्ण अर्थात् सम्पन्न। अगर सम्पन्न नहीं तो सम्पूर्ण भी नहीं क्योंकि सम्पन्न स्टेज ही सम्पूर्ण स्टेज है। ... आप आत्माओं की सम्पन्न स्टेज ही सम्पूर्णता को समीप लायेगी।''

अ.बापदादा 13.4.73

''समस्या साधन के रूप में परिवर्तित हो जाये। ... जब सब बातें अपने अनुकूल हों, इस कारण सन्तुष्ट रहे तो इसको कोई सन्तुष्टता नहीं कहेंगे! ... परिस्थिति अनुकूल न भी महसूस हो तो भी सन्तुष्ट रहें, ऐसी स्थिति होनी चाहिए।''

अ.बापदादा 22.11.72 मधुबनवासियों से

''सन्तुष्टता का बीज सर्व प्राप्तियाँ है। असन्तुष्टता का बीज है स्थूल वा सूक्ष्म अप्राप्ति है। जब ब्राह्मणों का गायन है - 'अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्माणों के खजाने में अथवा ब्राह्मणों के जीवन में', फिर असन्तुष्टता क्यों?... दाता के भण्डार भरपूर हैं।''

अ.बापदादा 5.10.87

''अल्पकाल की प्राप्ति की इच्छा, बेहद की प्राप्ति के फलस्वरूप जो सदा सन्तुष्टता की अनुभूति हो, उससे वंचित कर देती है। हद की प्राप्ति दिलों में हद डाल देती है इसलिए असन्तुष्टता की अनुभूति होती है। ... हद, बेहद का नशा अनुभव करने नहीं देता है।''

अ.बापदादा 5.10.87

''प्रसन्नचित्त सदा निस्वार्थी और सदा सभी को निर्दोष अनुभव करेगा, वह किसी और के ऊपर दोष नहीं रखेगा। न भाग्यविधाता के ऊपर,.. न ड्रामा के ऊपर,.. न व्यक्ति पर,.. न प्रकृति के ऊपर,.. न शरीर के हिसाब-किताब के ऊपर। प्रसन्नचित्त अर्थात् सदा निस्वार्थ, निर्दोष वृत्ति-दृष्टि वाले।''

अ.बापदादा 5.10.87

''आत्मा सम्पूर्णता को पा रही है - यह मुख्य किस बात में सबको अनुभव होता है? मुख्य बात यह है कि ऐसी आत्मा सदा स्वयं से सर्व सब्जेक्ट्स में सन्तुष्ट रहने का अनुभव करेगी और साथ-साथ अन्य आत्मायें भी उनसे सदा सन्तुष्ट रहेंगी। तो सन्तुष्टता ही सम्पूर्णता की निशानी हैं।''

अ.बापदादा 7.2.75

सम्पूर्णता, समाप्ति, सम्पन्नता और बाप समान स्थिति /

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और समानता /

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और फॉलो फादर

सम्पूर्णता, समाप्ति, सम्पन्नता और बाप समान बनने का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। इसका ज्ञान भी परमात्मा ने अभी दिया है कि जब तुम आत्मायें सम्पूर्ण बनेंगें, तब ही दुनिया की समाप्ति होगी अर्थात् विनाश होगा। जब सम्पूर्ण बनेंगे तब ही सम्पन्न बनेंगे और सर्व बातों में सम्पन्नता ही बाप समान स्थिति है क्योंकि बाप तो सर्व गुणों, शक्तियों, विशेषताओं का सागर है और सागर सदा ही सम्पन्न होता है, उसमें घटती-बढ़ती नहीं होती है। जिसमें घटती-बढ़ती होती है, उसे सम्पन्न और सम्पूर्ण नहीं कहा जा सकता है। जब आत्मायें सम्पूर्ण बनेंगे, तब घर जा सकेंगे अर्थात् तब ही विनाश होगा। बाबा के महावाक्य हैं - तुम्हारी सम्पूर्णता ही विनाश को समीप लायेगी, विनाश सम्पूर्णता को नहीं क्योंकि सम्पूर्णता को पाना आत्माओं का काम है, आत्मा चेतन्य शक्ति है। साथ ही बाबा ने यह भी कहा है कि विनाश अपने समय पर अवश्य होगा, वह किसके लिए रुकेगा नहीं और जब विनाश होगा तब सभी आत्मायें परमधाम वापस जायेंगी। परमधाम में आत्मायें सम्पूर्ण बनकर ही जा सकती हैं, इसलिए उस समय सभी आत्मायें सम्पूर्ण अवश्य बनेंगी। अब प्रश्न उठता है कि आत्माओं के अपने पुरुषार्थ से सम्पूर्ण बनने और विनाश के समय सम्पूर्ण बनने में क्या अन्तर है? जब आत्मायें परमधाम वापस जायेंगी तो सम्पूर्ण बनकर ही जायेंगी परन्तु उनकी सम्पूर्णता और जो अपने पुरुषार्थ से विनाश के पहले सम्पूर्ण बनती हैं या सम्पूर्णता का पुरुषार्थ करती हैं या सम्पूर्णता का संगमयुगी जीवन में अनुभव करती हैं, उन दोनों की प्राप्तियों और अनुभूतियों में महान अन्तर होता है। जो आत्मायें अपने पुरुषार्थ से सम्पूर्ण पावन बनेंगी, वे आत्मायें ही सम्पूर्ण पावन दुनिया का सुख भोगेंगी अर्थात् पहले-पहले सतयुग में आयेंगी और उनको अन्त में धर्मराज की सजायें भी नहीं भोगनी पड़ेंगी परन्तु जो आत्मायें अपने पुरुषार्थ से सम्पूर्ण पावन नहीं बनेंगी, उनको अन्त में विनाश के समय धर्मराज की सजायें भोगनी पड़ेंगी अर्थात् उनको अन्त समय दुख होगा, पश्चाताप होगा। जो आत्मायें सजायें भोगकर सम्पूर्ण पावन बनेंगी, वे सम्पूर्ण तो बनेंगी परन्तु वे सतयुग के आदि में नहीं आ सकेंगी, उसका सुख नहीं भोग सकेंगी क्योंकि इस जगत में हर आत्मा को प्राप्ति उसके पुरुषार्थ अर्थात् कर्म के आधार पर ही मिलती है। संगमयुग की सम्पूर्णता की अनुभूति के विषय में भी बाबा ने ड्रामा का लॉ बताया है कि जो आत्मायें जितना

अधिक समय संगमयुग पर सम्पूर्णता की अनुभूति करती हैं, वे उतना ही अधिक समय सतयुगी सृष्टि में सम्पूर्ण पावन प्रकृति का सुख भोगती हैं। इसलिए संगमयुग पर सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता के अनुभव का विशेष महत्व है, उसकी विशेष प्राप्ति है।

बाप समान बनना हर आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य है और सभी को बनना भी है क्योंकि सभी आत्माओं को परमधाम तो जाना ही है। बाप सदा सम्पूर्ण है, सदा पावन है, सदा मुक्त है और आत्मायें भी परमधाम में बाप के साथ रहती हैं, इसलिए ही हर आत्मा मुक्ति-जीवनमुक्ति की इच्छा रखती है परन्तु बाप समान कौन कितना बनता है और कौन बन सकता है, यह एक विचारणीय प्रश्न है। यह विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है, जहाँ हर आत्मा आकर अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजाती है, विविधता ही इसकी शोभा है, इसलिए हर आत्मा के पार्ट में भी विविधता और भिन्नता अवश्य होगी। सभी आत्मायें परमधाम में रहती हैं और परमधाम में सबकी बाप समान सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता स्थिति होती है अर्थात् हर आत्मा अपने मूल आत्मिक स्वरूप में सम्पूर्ण और सम्पन्न होगी परन्तु वहाँ सम्पन्नता, सन्तुष्टता और प्रसन्नता की अनुभूति नहीं होगी क्योंकि अनुभूति देह के साथ ही आत्मा को होती है। कोई भी आत्मा जब यहाँ पार्ट में आयेगी तो पहले सम्पन्नता, सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव अवश्य करेगी परन्तु इस अनुभूति का समय हर आत्मा का अपने पार्ट के समय अनुसार अलग2 होगा। जो स्थिति आत्माओं की परमधाम से यहाँ पार्ट में आते समय होती है, वही स्थिति परमधाम जाते समय भी होती है, इसलिए हर आत्मा को परमात्मा से मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है और हर आत्मा को अन्त समय सम्पूर्ण बनना ही है, बाप समान बनना ही है, अब वह चाहे अपने पुरुषार्थ से बनें या सजायें खाकर बनें। संगमयुग पर आत्मा जितना जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करती है, उसके अनुसार ही परमधाम से आकर इस सृष्टि में जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करती है।

अब प्रश्न उठता है कि पुरुषार्थ क्या और कैसा ? ये विश्व-नाटक पुरुषार्थ और प्रालब्ध का खेल है, इसलिए प्रालब्ध के लिए हर आत्मा को पुरुषार्थ करना ही होता है। हमारे सामने पुरुषार्थ का सेम्पुल है ब्रह्मा बाबा अर्थात् साकार बाबा और सम्पूर्णता की स्थिति का सेम्पुल है शिवबाबा अर्थात् शिवबाबा के समान सम्पूर्ण बनना है, जिसके लिए ब्रह्मा बाप के समान के समान पुरुषार्थ करना अति आवश्यक है।

ब्रह्मा बाप ने शिवबाबा की प्रवेशता अर्थात् परिचय पाते ही सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की स्थिति को धारण कर लिया, जो उनके इस जीवन के आदि से ही

दिखाई दी। उसके बाद सभी आत्माओं ने नम्बरवार ये स्थिति प्राप्त की अर्थात् विश्व-नाटक के नियमानुसार कुछ न कुछ अन्तर अवश्य रहता है अर्थात समय अवश्य ही लगता है, इसलिए ही ब्रह्मा बाबा ही सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त कर फरिश्ता बनें। शिवबाबा ने कहा भी है - बच्चों को ब्रह्मा बाप को ही फॉलो करना है।

ये बाप समान सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की यथार्थ अनुभूति संगमयुग पर होती ही है क्योंकि संगमयुग पर ही इस स्थिति का ज्ञान होता है और दोनों बाप अर्थात् निराकार शिवबाबा और साकार ब्रह्मा बाबा का परिचय होता है। सतयुग की सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता तो संगमयुग की अनुभूति की परछाई मात्र है।

''इन सभी का सार हुआ कि स्वयं जो 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की स्थिति में स्थित होगा, वही किसी की भी इच्छाओं की पूर्ति कर सकता है। अगर स्वयं में ही कोई इच्छा रही होगी तो वह दूसरे की इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर सकते। ... जो सम्पन्न नहीं हैं तो उनकी इच्छायें जरूर होंगी। ... 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की स्टेज को 'कर्मातीत' अथवा 'फरिश्तेपन' की स्टेज कहा जाता है।''

अ.बापदादा 21.7.73

''ड्रामा प्लॉन अनुसार आप श्रेष्ठ आत्माओं के साथ पश्चाताप का सम्बन्ध है। जब तक पश्चाताप न किया है, तब तक मुक्तिधाम जाने का वर्सा भी नहीं पा सकते। ... अभी अपने ही आगे अपनी सम्पूर्णता प्रत्यक्ष नहीं है तो औरों के आगे कैसे प्रत्यक्ष होंगे। ... इतनी ही देरी है, विनाश के आने में, जब तक आप निमित्त बनी हुई आत्माओं को अपने सम्पूर्ण स्टेज का स्पष्ट साक्षात्कार हो जाये।''

अ.बापदादा 19.4.73

''निशाने पर स्थित होने की निशानी है नशा।...जो स्वयं नशे में रहते हैं वह दूसरों को भी नशे में टिका सकते हैं। जैसे कोई हद का नशा पीते हैं तो उनकी चलन से, उनके नैन-चैन से कोई भी जान लेता है - इसने नशा पिया हुआ है। इसी प्रकार, यह जो सभी से श्रेष्ठ नशा है, जिसको ईश्वरीय नशा कहा जाता है ... दूर से दिखाई देगा।''

अ.बापदादा 5.2.72

''बच्चों का लक्ष्य सूर्यवंशी बनने का है। नम्बरवन सूर्यवंशी की निशानी है सदा विजयी। सूर्य की कलायें कम या ज्यादा नहीं होती हैं। तो सूर्यवंशी की निशानी है सदा एकरस और सदा विजयी। ... नम्बरवन अर्थात् फॉलो ब्रह्मा बाप।''

अ.बापदादा 12.12.98

''हर कर्म करने के पहले सोचो कि जो कर्म मैं ब्राह्मण आत्मा कर रही हूँ, कर रहा हूँ, क्या यह ब्रह्मा बाप समान है? ... अगर ब्रह्मा के हर कदम समान कदम पर कदम रख फॉलो करते

चलेंगे तो एक तो सदा अपने को सहज पुरुषार्थी अनुभव करेंगे और सदा सम्पूर्णता की मंजिल समीप अनुभव करेंगे।''

अ.बापदादा 12.12.98

''ताली बजायें, बोलो तैयार हो ? पेपर लेंगे, ऐसे थोड़ेही मान जायेंगे। ... जहाँ हूँ, वहाँ ही हूँ - ऐसे एवर-रेडी। ... मेरे बिना यह नहीं हो जाये, यह नहीं हो जाये - यह वेस्ट संकल्प भी नहीं करना। ब्रह्मा बाप ट्रान्सफर हुआ तो क्या सोचा कि मेरे बिना क्या होगा।''

अ.बापदादा 12.12.98

''बाप दादा देख रहे हैं कि मैजारिटी बच्चों के दिल में एक ही संकल्प है कि अभी जल्दी से जल्दी बाप को प्रत्यक्ष करें। ... लेकिन बाप को प्रत्यक्ष तब कर सकेंगे जब पहले अपने को बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण प्रत्यक्ष करेंगे।''

अ.बापदादा 17.3.07

''स्वमान अर्थात् बाप समान। सम्पूर्ण स्वमान है ही बाप-समान। ... दाता सदा ही बेहद की वृत्ति वाला होगा और दाता सदा सम्पन्न, भरपूर होगा। दाता सदा ही क्षमा का मास्टर सागर होगा। ... कोई मान दे, कोई नहीं दे लेकिन मुझे देना है। ऐसा दातापन अभी इमर्ज रूप में चाहिए।''

अ.बापदादा 23.10.99

''कोई दे या न दे लेकिन बाप ने तो सब कुछ दे दिया है। ... सबके लिए वही ज्ञान है, वही प्यार है, वही सर्व शक्तियां हैं। ... जब बाप ने सभी को भरपूर कर दिया तो फिर भरपूर आत्मा दाता बनती है, लेने वाली नहीं। ... और जितना देंगे, दता बनेंगे, उतना खजाना बढ़ता जायेगा। ... न सूक्ष्म लेने की इच्छा और न स्थूल लेने की इच्छा। दाता का अर्थ ही है इच्छा मात्रम् अविद्या, सदा सम्पन्न। कोई अप्राप्ति अनुभव नहीं होगी, जिसको लेने की इच्छा हो। ... सम्पन्न बनना ही सम्पूर्ण बनना है।''

अ.बापदादा 23.10.99

''सबसे बड़ा खज़ाना, जो वर्तमान और भविष्य श्रेष्ठ बनाता है, वह है श्रेष्ठ संकल्प का खज़ाना। ... संकल्प तो सबके पास हैं लेकिन श्रेष्ठ संकल्प शक्ति, शुभ-भावना, शुभ-कामना की संकल्प शक्ति, मन-बुद्धि को एकाग्र करने की शक्ति आपके पास ही है।''

अ.बापदादा 15.12.99

''आज बापदादा विशेष अटेन्शन दिला रहे हैं कि समय की समाप्ति अचानक होनी है। यह नहीं सोचो कि मालूम तो पड़ता रहेगा, समय पर ठीक हो जायेंगे। ... ड्रामा अनुसार अगर समय आपको सिखायेगा या समय के आधार पर परिवर्तन होंगे तो बापदादा जानते हैं कि प्रालब्ध भी समय पर मिलेगी।''

अ.बापदादा 30.11.99

बाबा को इन बच्चों में से एक ग्रुप चाहिए जो सिर्फ ब्रह्मचारी नहीं लेकिन ब्रह्माचारी हो। हर बात में ब्रह्मा बाप को फॉलो करे। जैसे ब्रह्मा बाबा ने सम्पूर्ण बनकर अपना कार्य सम्पन्न किया। बाबा ने किसी को भी नहीं देखा कि ये ऐसा है... हर पार्ट बजाते हुए सम्पूर्ण और सम्पन्न बने - ऐसे मुझे भी बनना ही है। सेसा संकल्प लेने वाला ब्रह्माचारी ग्रुप चाहिए। ... लेकिन 'प्रीत निभाने वाला, प्रतिज्ञा निभाने वाला हो।'

अ.बापदादा 23.3.2000 सन्देश

''स्नेही स्वत: ही देह के भान, देह के सम्बन्ध का ध्यान, देह की दुनिया के ध्यान से ऊपर स्नेह में स्वत: ही लीन रहता है। दिल का स्नेह बाप के समीप का, साथ का, समानता का अनुभव कराता है। स्नेही सदा अपने को बाप की दुआओं के पात्र समझते हैं। स्नेह असम्भव को भी सहज सम्भव कर देता है।''

अ.बापदादा 18.1.08

''चेक करो खज़ाने मिले, खजानों से सम्पन्न हुए हैं लेकिन स्व-प्रति वा विश्व के प्रति कितना सफल किया ? ... सफल और व्यर्थ का चार्ट रखना। अमृतवेले ही दृढ़ संकल्प करना, स्मृति स्वरूप बनना कि सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। सफलता मेरे गले का हार है। सफलता स्वरूप ही समान बनना है।''

अ.बापदादा 31.12.07

''बाप आते हैं जीते जी मरना सिखाने। मरना तो सारी दुनिया को है लेकिन तुमको पावन बनकर मरना है। ... इसमें सच्ची कमाई होती है, फिर झूठी कमाई को क्या करेंगे। उस झूठी कमाई को सच्ची कमाई से बदली करना है। बाप ने करके दिखाया।''

सा.बाबा 3.6.69 रिवा.

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और ईश्वरीय प्राप्तियां एवं सर्व प्राप्ति सम्पन्न स्थिति /

ईश्वरीय प्राप्तियों से सम्पन्नता और फिकर से फारिग स्थिति

आत्मा परमात्मा के वंशधर है, इसलिए आत्मिक स्वरूप सम्पूर्ण और सर्व प्राप्ति सम्पन्न है। आत्मा अपने मूल स्वरूप की विस्मृति के कारण देहाभिमान में आकर अपनी प्राप्तियों को भूलने के कारण दुखी होती है, फिर परमात्मा आकर यथार्थ ज्ञान देकर उसको अपने मूल स्वरूप का अनुभव कराते हैं, जिससे वह पुन: अपने मूल स्वरूप को अनुभव करती

है, सम्पूर्ण और सम्पन्न है। यथार्थ ज्ञान सम्पूर्णता को पाने का मूल आधार है। सम्पन्न स्थिति इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति है। परमात्मा भविष्य स्वर्ग का वर्सा तो हम आत्माओं को देता ही है लेकिन संगमयुग पर ये श्रेष्ठ ज्ञान दिया है, जो स्वर्ग के वर्से को प्राप्त करने का आधार है, इस ज्ञान की यथार्थ धारणा और आत्मिक स्थिति के सफल अभ्यास से आत्मा को सर्व प्राप्ति सम्पन्न स्थिति का अनुभव होता है, जो ही सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का यथार्थ अनुभव है और यथार्थ स्थिति है, जो स्वर्ग की प्राप्तियों से भी अति श्रेष्ठ है।

परमात्मा हमको अनन्त प्राप्तियां दी है, जो आत्मा को सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता को प्राप्त कराने में समर्थ हैं, जो इस रहस्य को समझकर अपनी प्राप्तियों को देखता है, उनका सुख अनुभव करता है, वह सदा प्रसनन रहता है। अपनी प्राप्तियों को भूलकर दूसरे की प्राप्तियों को देखकर लालायित होना, ईर्ष्या होना भी अप्राप्ति और रॉयल भिखारीपन की निशानी है। अपनी प्राप्तियों को देखना और उनको उपयोग करना, उनका सुख लेना ही रॉयलिटी है। विचार करो - बाप ने तुमको क्या नहीं दिया है! ज्ञान धन परम-धन है, जो सर्व प्राप्तियों का आधार है। जो आत्मा ईश्वरीय ज्ञान की धारणा करती, वह सदा ही सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव करती है और इस अनुभव वाला कभी भी किसी की प्राप्तियों से प्रभावित नहीं होता, किसी की प्राप्तियों से ईर्ष्या नहीं करता। उसके जीवन में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा का अंशमात्र भी नहीं हो सकती। वह तो बाप समान दाता बनकर सर्व को देने वाला होता है। दाता कभी दूसरे की प्राप्तियों के प्रति लालायित हो नहीं सकता। भक्ति में भी कहा है - गोधन, गजधन, बाजिधन और रत्न धन खानि, जो आवै सन्तोष धन सब धन धूरि समान। जिसके पास ईश्वरीय ज्ञान रतनों का धन है, वही सदा सम्पन्न और सनतुष्ट है।

''संगमयुग पर सबसे बड़े ते बड़ी आप ब्राह्मणों की शान कौनसी है? ... हम ऊंचे ते ऊंचे भगवान के बच्चे ऊंचे ते ऊंचे हैं। ... सदा अपनी प्राप्तियों की स्मृति में रहो। ... अगर प्राप्तियों की लिस्ट सामने रहे तो सदा अपना श्रेष्ठ शान स्वत: स्मृति में रहेगा।''

अ.बापदादा 13.10.92 पार्टी 5

परमात्मा ज्ञान, प्रेम, आनन्द, पवित्रता, सुख-शान्ति, सर्व गुणों-शक्तियों का सागर है, जब से हम उनके बच्चे बनते हैं तब से ही हमको ये सब जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में मिल जाते हैं अर्थात् हम उनका अनुभव करते हैं। ये अनुभव आत्माओं को अभी संगमयुग पर ही होता है। इन ईश्वरीय प्राप्तियों का ज्ञान भी परमात्मा ने अभी ही दिया है और अनुभव भी अभी

ही कराया है। भक्ति में तो केवल गायन करते थे, उनका कोई अनुभव नहीं था। अभी बाबा सबका ज्ञान भी देते तो अनुभव करा रहे हैं। सतयुग में भौतिक सुखों का तो भरपूर अनुभव होता है परन्तु यथार्थ ज्ञान न होने के कारण ईश्वरीय प्राप्तियों का अनुभव नहीं होता है, इसलिए वह स्थिति सर्व सुख होते भी पतनोन्मुखी होती है अर्थात् सम्पूर्णता से अपूर्णता की ओर अग्रसर होती है। बाप अभी मिला है तो बाप का वर्सा भी अभी ही मिलता है अर्थात् अनुभव होता है। अभी आत्मा ये ईश्वरीय वर्सा पाकर अपने को बेफिकर बादशाह अनुभव करती है। गायन है - चाह गई, चिन्ता मिटी, मनुवां बेपरवाह। जिन्हें कछु नहीं चाहिए, वे ही शहंशाह।

''जिसने जितना खज़ाना जमा किया है, उतना ही उसके चलन और चेहरे में रुहानी नशा और फखुर दिखाई देता है। ... जितना फखुर है, उतना ही बेफिकर बादशाह की झलक उसके हर कर्म में दिखाई देती है। ... जहाँ रुहानी फखुर है, वहाँ कोई फिकर रह नहीं सकती।''

अ.बापदादा 21.11.92

''बेफिकर बादशाह की विशेषता है कि वह सदा प्रश्न-चित्त के बजाये प्रसन्न-चित्त रहते हैं। उसका हर कर्म में स्व के सम्बन्ध में वा सर्व के सम्बन्ध में वा प्रकृति के भी सम्बन्ध में किसी भी समय, किसी भी बात में संकल्प-मात्र भी क्वेश्चन नहीं होगा।''

अ.बापदादा 21.11.92

''अभी तुम बच्चों को भक्ति और ज्ञान का अन्तर का पता पड़ा है। कितनी विशाल बुद्धि चाहिए। तुम्हारी कभी किसमें आंख नहीं जायेगी। ... दिल में कोई आश नहीं होगी।''

सा.बाबा 27.8.04 रिवा.

''बाप तो दाता है, सागर है। जो जितना लेना चाहे बापदादा के भण्डारे से ले सकता है। बापदादा के भण्डारे में ताला-चाबी नहीं है, पहरेदार नहीं है। बाबा कहा, जी हाजिर। दाता भी है और सागर भी है तो क्या कमी होगी। कमी दो बातों की होती है - एक सच्ची दिल, साफ दिल और बुद्धि की लाइन सदा क्लीयर और क्लीन।''

अ.बापदादा 30.3.2000

''सतयुग में तो सभी हर्षित होंगे तो यह हर्षितमुख है, यह भी कहेगा कौन ? यह तो अभी ही कहेंगे ना! जो सदा हर्षित नहीं रहते, वे ही वर्णन करेंगे कि यह हर्षितमुख है।''

अ.बापदादा 21.4.73

''सहयोगी आत्मायें बापदादा की अति स्नेही हैं। ऐसी आत्मायें सदा सरलयोगी व सहजयोगी व स्वत: योगी होती हैं। उनकी मूर्त में सदा ऑलमाइटी अथॉरिटी की समीप सन्तान की खुमारी और खुशी स्पष्ट दिखाई देती है अर्थात् सदा सर्व-प्राप्ति सम्पन्न के लक्षण उनके मस्तक से,

नैनों से और हर कर्म में अनुभव होते है।''

अ.बापदादा 21.6.74

''आर्डर हो कि अपनी वर्तमान सर्वशिक्तिमान स्थिति से किसी अन्य आत्मा की परिस्थिति-वश स्थिति को परिवर्तन करो तो क्या आप कर सकते हो ? आर्डर हो कि मास्टर रचयिता बन अपनी रचना को शुभ भावना से व शुभ-चिन्तक बन, भिखारियों को उनकी माँग प्रमाण सन्तुष्ट करो तथा महादानी और वरदानी बनो तो क्या सर्व को संतुष्ट कर सकते हो ? ... सर्वशक्तियों के भण्डारे से क्या स्वयं को भरपूर अनुभव करते हो ?''

अ.बापदादा 30.5.74

''ऐसा साथी जो निष्काम हो, निष्पक्ष हो, अविनाशी हो व समर्थ हो। ऐसा सम्पर्क कभी मिला अथवा मिल सकता है क्या ? अविनाशी और सच्चा श्रेष्ठ साथ व संग कौन-सा गाया हुआ है ? पारसनाथ जो लोहे को सच्चा सोना बनाये, ऐसा सत्संग अथवा सम्पर्क मिला है या कुछ अप्राप्ति है ?''

अ.बापदादा 20.5.74

''जो कहावत है कि देवताओं के खजाने में अप्राप्त कोई भी वस्तु नहीं होती है - कहावत ब्राहमणों की गाई हुई है या देवताओं की ? सर्व संस्कार ब्राहमण जीवन में ही अनुभव करते हो क्योंकि अभी सर्व संस्कार अपने में भर रहे हो।''

अ.बापदादा 2.5.74

''सन्तुष्टता का बीज सर्व प्राप्तियाँ है। असन्तुष्टता का बीज है स्थूल वा सूक्ष्म अप्राप्ति है। जब ब्राह्मणों का गायन है - 'अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्माणों के खजाने में अथवा ब्राह्मणों के जीवन में', फिर असन्तुष्टता क्यों ?... दाता के भण्डार भरपूर हैं।''

अ.बापदादा 5.10.87

''सदा अपने आपको चेक करो कि बाप द्वारा सर्व शक्तियों के खजानों से सम्पन्न वरदान को प्राप्त किया है ? सर्व खजानों के मालिक अनुभव करते हो अर्थात् अप्राप्त कोई भी शक्ति नहीं आप ब्रह्मणों के खजानें में। अप्राप्त कोई वस्तु नहीं देवताओं के खजानें में।''

अ.बापदादा 27.1.76

''सदैव एक ही संकल्प स्मृति में रहता है कि 'पाना था सो पा लिया, पाने के लिये अब कुछ नहीं रहा। ऐसे संकल्प में स्थित रहने वाले की,... निशानी क्या होगी ? सदा हर्षित रहने वाला होगा और मन, वाणी और कर्म से सर्व आत्माओं को सदा खुशी का दान देता रहेगा।''

अ.बापदादा 27.1.76

''जो होगा, वह देखने और सुनने का लक्ष्य है वा ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता बनने का है? ... आप अपनी स्थिति की तैयारी में लगे हुए हो वा क्या होगा, क्या होगा - इस सोचने में लगे हो? ... यह हो गया - आप इन्हीं नज़ारों के समाचारों में बिज़ी होंगे वा सम्पन्नता की स्थिति में स्थित हो किसी भी प्रकृति की हलचल को चलते हुए बादलों के समान अनुभव करेंगे?''

अ.बापदादा 12.12.98

''मेरी एरिया - यह भी देह का अभिमान है। देह का भान फिर भी हल्की चीज़ है लेकिन देह का अभिमान - यह बहुत सूक्ष्म है। ... जहाँ मेरा होगा, वहाँ अभिमान जरूर होगा। मेरी विशेषता, मेरा गुण ... यह अभिमान छोड़ना ही सम्पन्न बनना है।''

अ.बापदादा 12.12.98

''रॉयलिटी की और विशेषता है - उस आत्मा में कभी किसी भी प्रकार के स्थूल-सूक्ष्म मांगने के संस्कार नहीं होंगे। क्योंकि रॉयल आत्मा सदा सम्पन्न भरपूर रहती है। ... जिसका मन भरपूर नहीं होता, वह आत्मा बाहर से कितनी भी वस्तु और साधन से भरपूर होते भी वह कभी भी अपने को भरपूर नहीं समझेगा।''

अ.बापदादा 11.12.91

''पहले स्वयं अपना साक्षी बनकर चेक करो - स्व के चार्ट से, स्वयं सच्चे मन, सच्चे दिल से सन्तुष्ट हैं? दूसरा जिस विधिपूर्वक बापदादा याद के परसेन्ट को चाहते हैं, उस विधिपूर्वक मन-वचन-कर्म और सम्बन्ध-सम्पर्क में सम्पूर्ण चार्ट रहा अर्थात् बाप भी सन्तुष्ट हो, तीसरा ब्राह्मण परिवार हमारे श्रेष्ठ योगी जीवन से सन्तुष्ट रहा?''

अ.बापदादा 31.12.91

''ब्राह्मण परिवार के निश्चय में अगर कोई संशय आ जाता है, व्यर्थ संकल्प आ जाता है तो वह निश्चय को डगमग कर देता है। ... व्यर्थ संकल्प प्रसन्नचित्त बुद्धि रहने नहीं देता।''

अ.बापदादा 15.4.92

''रॉयल आत्मायें सदा ही एक तो भरपूर अर्थात् सम्पन्न रहती हैं और सम्पन्नता की निशानी, वे सदा तृप्त आत्मा रहती हैं। ... हर परिस्थिति में, सम्बन्ध-सम्पर्क में सन्तुष्ट रहती है। ... सम्पन्न, तृप्त आत्मा असन्तुष्ट करने वाले को भी सन्तुष्टता का गुण सहयोग के रूप में देगी।''

अ.बापदादा 3.11.92

''सतयुग में अप्राप्ति का नाम-निशान नहीं। लेकिन इसका आधार क्या है? इस समय सम्पन्न बनते हो, इसलिए परमात्म-सम्पत्ति की सम्पन्नता के फलस्वरूप सतयुग-त्रेता के अनेक जन्म सम्पन्नता प्राप्त होती है। इसलिए कहा जाता है - नम्बरवन राज्य है स्वराज्य, फिर है विश्व का

राज्य और तीसरा है द्वापर-कलियुग का अलग-अलग स्टेट का राज्य।''

अ.बापदादा 12.11.92

''भाग्यविधाता बाप अपना बन गया है। तो जब भाग्यविधाता के बच्चे बन गये तो इससे बड़ा भाग्य और क्या होगा। ... कैसी भी परिस्थिति आये लेकिन अपनी स्थिति को नीचे-ऊपर नहीं करो।''

अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 1

''ब्राह्मण अर्थात् सब-कुछ मिला। प्राप्ति की निशानी है खुशी। खुश रहने वाले भी हो और खुशी बांटने वाले भी। बांटेगा कौन ? जिसके पास स्टॉक होगा। ... तो सदैव अपना स्टॉक चेक करो कि इतना भरपूर है ?''

अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 2

''साधारणता में महानता समाई हुई हो। जितने ही साधारण हो, उतने ही अन्दर महान हो। तो यह नशा रहता है कि बाप ने क्या से क्या बना दिया और क्या-क्या दे दिया। ... गरीब को साहूकार बनाना - यह है कमाल। ... विनाशी धन के साहूकारों का भाग्य नहीं है। भाग्य है ही गरीबों का।''

अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 6

''प्रसन्नचित्त आत्मा के संकल्प में हर कर्म को करते, देखते, सुनते, सोचते यही रहता है कि जो हो रहा है, वह मेरे लिए अच्छा है और सदा अच्छा ही होना है। ... बेफिकर आत्मा बुराई को भी अच्छाई में परिवर्तन कर लेती है, इसलिए वह सदा प्रसन्न रहती है।''

अ.बापदादा 21.11.92

''अगर किसी की कोई बुराई चित्त पर है तो उसका चित्त सदा प्रसन्नचित्त नहीं रह सकता और चित्त पर धारण की हुई बातें वाणी में जरूर आयेंगी। ... लेकिन कर्मों की गति का गुह्य रहस्य सदा सामने रखो। ... कर्मों का यह पक्का नियम है अथवा कर्मों की फिलॉसाफी है कि आज आपने किसकी ग्लानि की तो आपकी कल कोई दुगुनी ग्लानि करेगा।''

अ.बापदादा 21.11.92

''यह छोटे-छोटे सूक्ष्म पाप श्रेष्ठ सम्पूर्ण स्थिति में विघ्नरूप बनते हैं ... ये अति सूक्ष्म व्यर्थ कर्म बुद्धि को, मन को ऊंचा अनुभव करने नहीं देते। ... अल्पकाल के मनमौजी नहीं बनो, सदाकाल की रुहानी मौज में रहो। ... कर्मों की गुह्य गति के ज्ञाता बनो।''

अ.बापदादा 21.11.92

''अगर बाप का और ब्राह्मण परिवार का सच्चा प्यार प्राप्त करना है तो न्यारे बनो। सभी हद की बातों से, अपनी देह से भी न्यारा। जो अपनी देह से न्यारा बन सकता है, वही सबसे न्यारा

बन सकता है। ... परमात्म प्यार अखुट है लेकिन प्राप्त करने की विधि है - न्यारा बनना। विधि से सिद्धि मिलती है।''

अ.बापदादा 21.11.92 पार्टी 4

''कोई भी बात हो जाये 'दाता' शब्द याद रखना। इच्छामात्रम्-अविद्या। न सूक्ष्म लेने की इच्छा, न स्थूल लेने की इच्छा। दाता का अर्थ ही है - इच्छामात्रम्-अविद्या, सदा सम्पन्न।''

अ.बापदादा 23.10.99

''आखरीन जब रियल पार्ट बजेगा, उसमें साक्षी और निर्भय होकर देखें भी और पार्ट भी बजायें। कौनसा पार्ट ? दाता के बच्चे दाता बनकर आत्माओं को जो चाहिए, वह देते रहें। ... एक तो अपने पास शुभ भावना, शुभ कामना का स्टॉक सदा भरपूर हो और दूसरा - जो विशेष शक्तियाँ हैं, उनसे जिस समय जिसको जो शक्ति चाहिए, वह दे सको।''

अ.बापदादा 15.11.99

भौतिक साधनों के आधार पर प्रसन्नता नश्वर अर्थात् अल्पकालिक होती है क्योंकि साधन परिवर्तनशील है तो उनसे प्राप्त प्रसन्नता भी परिवर्तनशील ही होगी। परमात्मा अविनाशी है, उनके द्वारा प्राप्त अविनाशी साधन ज्ञान-गुण-शक्तियाँ भी अविनाशी हैं, इसलिए उनके आधार पर प्राप्त होने वाली सम्पन्नता-सन्तुष्टता भी अविनाशी होती है, जिसके फलस्वरूप प्राप्त होने वाली प्रसन्नता ही अविनाशी अर्थात् दीर्घकालिक हो होती है।

कलियुग के अन्त में भी थोड़ी धन-सम्पत्ति, साधन, शक्ति, पद के आधार पर मनुष्य प्रसन्नता अनुभव करते हैं परन्तु आदि सनातन देवी-देवता धर्म की आदि में आने वाली आत्मायें ऐसे साधनों से प्रभावित नहीं होती हैं, इसलिए सतयुग-त्रेता में आत्मायें सदा सम्पन्नता-सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव करती हैं और जब वे द्वापर से भक्ति मार्ग में आते हैं तो भी बहुत समय तक सम्पन्नता और प्रसन्नता का अनुभव करते हैं क्योंकि उन्होंने परमात्मा से सदा काल की प्रसन्नता के साधन पाये थे, उनसे प्रसन्नता अनुभव की थी, इसलिए वे उन अविनाशी साधनों को ही भक्ति मार्ग में खोजते हैं और प्राप्त करना चाहते हैं। जैसे साकार ब्रह्मा बाबा अपने लौकिक जीवन में अपने समय के अनुसार सबकुछ प्राप्त होते भी उनसे प्रभावित नहीं हुए अर्थात् उनसे सन्तुष्ट नहीं हुए और उनका प्रयत्न जाने-अन्जाने अविनाशी अर्थात् सदाकाल की सम्पन्नता के लिए ही रहा और जैसे ही उनको परमात्मा से वे साधन प्राप्त हुए, उन्होंने उन भौतिक विनाशी साधनों की सम्पन्नता से मुख मोड़ लिया और अविनाशी साधनों की सम्पन्नता को स्वीकार कर लिया, जिससे उनको सदा काल की प्रसन्नता का अनुभव हुआ और उन्होंने हमको भी कराया और अभी भी अपने सम्पूर्ण-सम्पन्न स्वरूप से करा रहे हैं।

''आज बापदादा अपने सर्व खज़ानों से सम्पन्न बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चे को अनेक प्रकार के अविनाशी अखुट खज़ाने मिले हैं ... खज़ानों से सम्पन्न आत्मा सदा भरपूरता के नशे में रहती है। सम्पन्नता की झलक उनके चेहरे में चमकती है और हर कर्म में सम्पन्नता की झलक स्वत: नज़र आती है।''

अ.बापदादा 30.11.92

''हर एक बच्चे को बापदादा ने अनेक खज़ाने दिये हैं। सबसे श्रेष्ठ पहला खज़ाना है - ज्ञान रत्नों का खज़ाना। ... ज्ञान खज़ाने द्वारा अभी भी मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति कर रहे हो। ... दूसरा खज़ाना है याद अर्थात् योग द्वारा सर्व शक्तियों का खज़ाना अनुभव कर रहे हो। ... तीसरा धारणा की सब्जेक्ट द्वारा दिव्य गुणों का खज़ाना। ... चौथा है सेवा द्वारा सदा खुशी के खज़ाने की अनुभूति करते हो। ... पांचवां सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा सर्व की दुआओं का खज़ाना मिलता है।''

अ.बापदादा 30.11.92

''ज्ञान खज़ाने द्वारा अभी भी मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति कर रहे हो। मुक्तिधाम में जायेंगे वा जीवनमुक्त देव पद प्राप्त करेंगे - वह तो भविष्य की बात हुई लेकिन अभी भी मुक्त जीवन का अनुभव कर रहे हो। ... कितनी बातों से मुक्त हो गये हो। तो अभी मुक्ति भी प्राप्त की है और जीवनमुक्ति भी अनुभव कर रहे हो।''

अ.बापदादा 30.11.92

''सबसे बड़ा खज़ाना इस संगमयुग के समय का खज़ाना है। ... सर्व खज़ानों को अपने अन्दर समाने की शक्ति धारण करो तो सदा ही सम्पन्न होने के कारण ज़रा भी हलचल नहीं होती। हलचल तब होती है, जब खाली है। भरपूर आत्मा कभी हिलेगी नहीं। तो इन खज़ानों को चेक करो कि सर्व खज़ाने स्वयं में समाये हैं?''

अ.बापदादा 30.11.92

''खज़ाने सभी को एक द्वारा, एक जैसे मिले हैं। ... एक हैं मिला और खाया-पिया मौज किया और खत्म। दूसरे हैं मिले हुए खज़ानों को खाया-पिया और जमा भी किया। तीसरे हैं बाप द्वारा मिले खज़ाने को खाया-पिया, जमा भी किया और बढ़ाया भी ... जितना खज़ाने को स्व के कार्य और अन्य की सेवा के कार्य में यूज करते हो, उतना खज़ाना बढ़ता है।''

अ.बापदादा 30.11.92

''खज़ाना यूज़ करने से अनुभवी बन जाते हो। ... सुनना माना लेना नहीं है लेकिन समाना और समय पर कार्य में लगाना - यह है लेना। ... समाने वाले जैसे कोई परिस्थिति या समस्या

सामने आती है तो त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित हो स्व-स्थिति द्वारा परिस्थिति को ऐसे पार कर लेते जैसे कि कुछ था ही नहीं।''

अ.बापदादा 30.11.92

''खज़ाना भरपूर है, सब मिला है लेकिन कार्य में लगाना, उससे स्वयं को भी प्राप्ति कराना और दूसरों को भी प्राप्ति कराना - उसमें नम्बरवार बन जाते हैं। नहीं तो नम्बर क्यों बने ? ... भरपूरता का लाभ नहीं लेते।''

अ.बापदादा 30.11.92

''दुआयें किसको मिलती हैं? जो सन्तुष्ट रह सबको सन्तुष्ट करे। ... सब बातें छोड़ दो लेकिन एक बात यह धारण करो कि दुआयें सबको देनी हैं और सबसे दुआयें लेनी हैं।''

अ.बापदादा 30.11.92

''स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन है या अन्य के परिवर्तन से स्व-परिवर्तन है। ... खज़ानों को स्वयं प्रति भी कार्य में लगाओ और दूसरों को भी गुण-दान, ज्ञान-दान, शक्तियों का दान करो। अगर कोई निर्बल है तो शक्ति देकर उसको भी सम्पन्न बनाओ। इसको कहा जाता है भरपूर आत्मा।''

अ.बापदादा 30.11.92

''याद से सर्व कार्य स्वत: ही सफल हो जाते हैं, कहने की आवश्यकता नहीं। सफलता जन्मसिद्ध अधिकार है। अधिकार मांगने से नहीं मिलता, स्वत: ही मिलता है। ... अधिकारी आत्मायें स्वप्न में भी मांग नहीं सकती। बालक सो मालिक हो।''

अ.बापदादा 3.10.92 पार्टी 3

''आप बच्चे हाइएस्ट अर्थात् इन दि कल्प हैं। सारे कल्प में आप श्रेष्ठ रहे हैं। जानते हो ना! अपना अनादि काल देखो तो अनादि काल में भी आप सभी आत्मायें बाप के नज़दीक रहने वाले हो। ... आदि काल में भी सभी बच्चे देव-पदधारी देवता रूप में हो। ... सदा सम्पन्न हो और सर्व प्राप्ति स्वरूप हो। ऐसा देव-पद और किसी भी आत्माओं को प्राप्त नहीं होता है।''

अ.बापदादा 15.12.99

Q. संगमयुग पर परमात्मा से क्या2 खज़ाने मिले हैं, क्या-क्या प्राप्तियां हुई हैं, जो हमारी सम्पन्नता का आधार हैं?

परमात्मा से हमको अभी ज्ञान, गुण, शक्तियाँ, स्वमान, वरदान, खुशी, संगमयुग का समय, संकल्प आदि खज़ाने मिले हैं, जो हमारी खुशी का आधार हैं। अभी इन सभी खज़ानों को जमा करेंगे, तब हम सदा सम्पूर्णता, सम्पन्ता, सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव कर सकेंगे।

इसलिए यथार्थ पुरुषार्थ करके इनको जमा करना है। जमा करने की बाबा ने विधि बताई है तीन बिन्दियां अर्थात् आत्मिक स्थिति में स्थित होकर परमात्मा बिन्दी की स्नेहयुक्त याद होगी और विश्व-नाटक का ज्ञान बुद्धि में इमर्ज रूप में होगा तब ही इन खज़ानों को जमा कर सकेंगे अर्थात् ये खज़ाने सदा जमा होते रहेंगे और आत्मा सदा प्रसन्नता का अनुभव करेगी। जिसके पास जितने अधिक खज़ाने जमा होते हैं, उनको उतना ही अधिक नशा और खुशी रहती है, जो उनके चलन और चेहरे से दिखाई पड़ती है। कहना नहीं पड़ता है। तीनों बिन्दियां याद होगी तो खज़ाने स्वत: जमा होते रहेंगे।

''बापदादा से जो खज़ाने मिले हैं, उनको जमा करने की बहुत सहज विधि है। विधि कहो या चाबी कहो ... तीन बिन्दियां। सभी के पास है ना यह चाबी ? तीन बिन्दियां लगाओ और खज़ाने जमा होते जायेंगे।'' अ.बापदादा 18.3.08

''चेक करो - निमित्त और निर्मान बनने की विधि से हमारे खाते में कितने खज़ाने जमा हुए हैं। जितने खज़ाने जमा होंगे, भरपूर होगा, उनके चलन और चेहरे से भरपूर आत्मा का रुहानी नशा स्वत: ही दिखाई देगा। उसके चेहरे पर सदा रुहानी फखुर चमकता है और जितना ही रुहानी फखुर होगा, उतना ही वह बेफिकर बादशाह होगा।''

अ.बापदादा 18.3.08

''समय प्रमाण अभी बापदादा सभी बच्चों को सर्व खज़ानों से सम्पन्न देखना चाहते हैं क्योंकि ये खज़ाने सिर्फ अभी एक जन्म के लिए नहीं हैं लेकिन ये अविनाशी खज़ाने अनेक जन्म साथ चलने वाले हैं। इस समय के खज़ानों को सभी बच्चे जानते ही हो कि बापदादा ने क्या2 खज़ाने दिये हैं।'' अ.बापदादा 18.3.08

''बेफिकर बादशाह का संकल्प यही होगा कि जो हो रहा है, वह बहुत अच्छा है और जो होने वाला है, वह और ही अच्छे ते अच्छा होगा। इसको कहा जाता है रुहानी फखुर अर्थात् स्वमानधारी आत्मा।'' अ.बापदादा 18.3.08

''जो खज़ानों के मालिक और परमात्म बालक हैं, वे सदा ही स्वप्न में भी बेफिकर बादशाह हैं क्योंकि उनको निश्चय है कि यह ईश्वरीय खज़ाने इस जन्म में तो क्या लेकिन अनेक जन्म साथ हैं, साथ रहेंगे, इसलिए वे निश्चयबुद्धि निश्चिन्त हैं।''

अ.बापदादा 18.3.08

''सभी कर्मेन्द्रियों के ऊपर राज्य करने वाले बादशाह हो। पवित्रता लाइट का ताजधारी बनाती है ... बेफिकर बादशाह की निशानी है - सदा स्वयं भी सन्तुष्ट और औरों को भी सन्तुष्ट करने वाले। कभी भी कोई अप्राप्ति है ही नहीं, जो असन्तुष्ट हों। जहाँ अप्राप्ति है, वहाँ असन्तुष्टता है

और जहाँ प्राप्ति है, वहाँ सन्तुष्टता है।''

अ.बापदादा 15.12.04

''बाप ने कितने खज़ानो से भरपूर किया है। अगर प्राप्तियों को स्मृति में रखें तो भरपूर हो जायें। पहला खज़ाना दिया है ज्ञान का, जिससे जीवन में रहते दुख-अशान्ति से मुक्त हो जाते हैं।''

अ.बापदादा 4.9.05

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और विश्व-नाटक

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान पर हम विचार करें तो देखेंगे - इस विश्व-नाटक में हर आत्मा को सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अधिकार मिला है, जिसके विधि-विधान अनुसार परमात्मा सर्वात्माओं को इसकी अनुभूति कराता है परन्तु उसको स्थाई या दीर्घकालिक बनाने के लिए हर एक को अपना पुरुषार्थ करना पड़ता है। परमात्मा विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है और वह निराकार है, इसलिए वह सदा भरपूर और सम्पन्न है। हम आत्माओं को भी अपने इस अनुभव को दीर्घकालिक बनाने के लिए परमात्मा ने इस विश्व-नाटक का ज्ञान दिया है।

विश्व-नाटक को यथार्थ रीति से जानने से आत्मा स्वत: ही सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की स्थिति का अनुभव करती है क्योंकि आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है और ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी परमानन्दमय है। सम्पूर्णता की स्थिति की पुरुषार्थी आत्मा की बुद्धि में विश्व-नाटक का ज्ञान होना अति आवश्यक है। बिना विश्व-नाटक के ज्ञान के आत्मा सम्पूर्णता की स्थिति का यथार्थ रीति अनुभव नहीं कर सकती। अन्य धर्मवंश की सभी आत्मायें भी सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता सम्पन्न बनती हैं, परन्तु वे अन्त समय थोड़े समय के लिए बनती हैं। उनकी बुद्धि में विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है। विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान हमको ही परमात्मा से मिलता है, इसलिए हम उस ज्ञान को यथार्थ रीति समझकर धारण कर सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अभी अनुभव करते हैं और ये सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव ही सतयुग में साथ जाता है।

ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान दिया है, वह जीवन की परम-प्राप्ति है और आत्मा को परमानन्द का देने वाला है। जो आत्मा इस विश्व-नाटक के ज्ञान को समझकर साक्षी होकर इसको नाटक अर्थात् खेल की दृष्टि से देखता है, उसको यह अति आनन्दमय अनुभव होता है। यह विश्व-नाटक का ज्ञान हम आत्माओं के लिए परमात्मा का परम वरदान है। जो आत्मा अपनी इस परम-प्राप्ति अर्थात परमात्मा के वरदान को साथ रखता है, वह सदा ही जीवन में सम्पूर्णता, सम्पन्ता, सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव करता

है। ये विश्व-नाटक विविधतापूर्ण है, इसलिए सर्व भौतिक प्राप्तियाँ न एक व्यक्ति को हैं और न सबको एक समान प्राप्तियाँ हो सकती हैं परन्तु इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को धारण कर हर आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता को अनुभव कर सकती है क्योंकि हर आत्मा का अपना निजी स्वरूप सम्पूर्ण और सम्पन्न है और विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। दूसरों की प्राप्तियों को न देख अपनी प्राप्तियों को देखने वाला अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा सदा सम्पन्नता का अनुभव करती है। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को न समझने वाला ही दूसरों की प्राप्तियों को देखता है या उनका चिन्तन करता है, इसलिए वह सदा ही ईर्ष्या-द्वेष की अग्नि में जलता रहता है, दुखी होता रहता है, जिससे वह कभी भी सम्पन्नता का अनुभव नहीं कर पाता। विश्व-नाटक के ज्ञान को समझने वाला सदा ही अपनी प्राप्तियों को देखता है, उनका चिन्तन करता है और उनका उपयोग करता है, इसलिए वह सदा ही अपने जीवन में सदा भरपूरता और प्रसन्नता का अनुभव करता है। विविधता इस विश्व-नाटक का विधि-विधान है तथा विविधता से ही इसकी शोभा है।

यद्यपि सारे कल्प में सम्पूर्ण-सम्पन्न-सन्तुष्ट और प्रसन्न आत्मायें रहती हैं परन्तु हर आत्मा व्यक्तिगत रूप से कल्प में एक ही बार इस स्थिति का अनुभव करती है, जब वह परमात्मा के द्वारा सर्व प्राप्तियों का अनुभव करके परमधाम जाती है और दुबारा नये कल्प में पार्ट बजाने इस धरा पर आती है। फिर तो विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार जन्म लेने के बाद आत्मा अपूर्णता की ओर अग्रसर होती है। भल सतयुग-त्रेता में उतरती कला का अनुभव नहीं होता है, इसलिए वहाँ आत्मायें सदा सम्पन्नता का अनुभव करती हैं और सदा प्रसन्न रहती हैं। वहाँ सभी आत्मयें सदा प्रसन्न रहती हैं, किसी भी आत्मा को अप्रसन्नता की अनुभूति नहीं होती है परन्तु अपूर्णता तो हर आत्मा में समय की गति के साथ आती ही है, जिसके कारण उसकी प्रसन्नता की डिग्री में अन्तर जरूर पड़ता है परन्तु अप्रसन्नता का कारण पाप-कर्म न होने के कारण वहाँ अप्रसन्नता और दुख की अनुभूति नहीं होती है।

''अभी तुमको ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का मालूम पड़ा है, तो सारा चक्र बुद्धि में फिरना चाहिए। तुम्हारा नाम कितना बाला है। अभी स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो तब भविष्य में चक्रवर्ती राजा बन जाते हो। ... तुम्हारी बुद्धि में ज्ञान की पराकाष्ठा चाहिए।''

सा.बाबा 9.10.07 रिवा.

''जो पास्ट हो चुका है वह फिर से होना है। बनी बनाई ...अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा राज़ है।

किसको भी दोष नहीं दे सकते। ड्रामा में पार्ट है। तुमको सिर्फ बाप का पैग़ाम सुनाना है। ... कल्प पहले भी जो निमित्त बने होंगे, वे ही अब बनेंगे और बनाते जायेंगे। बच्चों को विचार सागर मन्थन करना है।''

सा.बाबा 26.9.06 रिवा.

''विघ्न-विनाशक नाम क्यों रखा है। ... विघ्नों का काम है आना और आपका काम है विघ्न-विनाशक बनना। इसकी परवाह नहीं करो। यह खेल है। खेल में खेल है और खेल देखने में तो मज़ा आता है ना।''

अ.बापदादा 23.2.97

''ऐसे-ऐसे विचार-सागर मन्थन करना चाहिए। ... बाप तुमको आप समान नॉलेजफुल बनाते हैं। अभी तुम नॉलेजफुल बन रहे हो। ... कल्प पहले भी ऐसे हुआ है। पुरानी दुनिया का विनाश होना है। कोई अफसोस की बात नहीं।''

सा.बाबा 30.9.06 रिवा.

''इस बाबा के सामने कितने हंगामें हुए। बाबा को कभी रंज हुआ देखा। ... नथिंग न्यु। यह तो कल्प पहले मुआफिक होता है, इसमें डर की बात क्या है। ... डरने से इतना ऊंच पद पा नहीं सकेंगे।''

सा.बाबा 9.10.06 रिवा.

''बाप कहते हैं - बच्चे चिन्ता उसकी की जाये, जो अनहोनी हो। हो गया सो ड्रामा में था, फिर उनका चिन्तन काहे को करें। ... तुमको कोई दुख के आंसू नहीं आना चाहिए। साक्षी होकर तुमको सारा खेल देखना है। जानते हो यह ड्रामा है, इसमें रोने की क्या दरकार है। पास्ट इज पास्ट। कब किसका विचार भी नहीं करना चाहिए। तुम आगे बढ़ते बाप को याद करते रहो और सबको रास्ता बताते रहो।''

सा.बाबा 27.10.06 रिवा.

''नई दुनिया में यह पता नहीं रहता है कि पुरानी दुनिया में क्या होगा। वहाँ सब कुछ भूल जाता है। यहाँ तुमको सब कुछ बताया जाता है कि नई दुनिया कब और कैसे स्थापन होगी, पुरानी कब विनाश होगी। ... तुम बच्चों को तो अथाह खुशी होनी चाहिए। तुम अभी क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य एक्टर्स, ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो।''

सा.बाबा 18.11.06 रिवा.

''अबलाओं पर अत्याचार होते, चित्र फाड़ देते, कोई समय आग लगाने में भी देरी नहीं करेंगे। हम क्या करेंगे। अन्दर में समझते हैं भावी, बाहर से पुलिस आदि को रिपोर्ट करनी पड़ेगी। अन्दर जानते हैं कल्प पहले जो हुआ था सो होगा। इसमें दुख की कोई बात नहीं।''

सा.बाबा 27.11.06 रिवा.

''यह सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है। यह सब राज़ शिवबाबा ही समझाते हैं, ब्रह्मा नहीं। ... अभी तुम जानते हो कि यह बेहद का बड़ा खेल है। सेकण्ड-सेकण्ड जो पास होता है, मनुष्य जो एक्ट करता है, वह ड्रामा के आधार पर एक्ट करता है।''

सा.बाबा 12.2.07 रिवा.

''इस खेल को भी अच्छी रीति समझना चाहिए ना। ... अभी यह नाटक पूरा होता है। ... बाप में भी ज्ञान के संस्कार हैं ना। उनमें सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान है। वह आकर तुमको भी त्रिकालदर्शी बनाते हैं।''

सा.बाबा 27.2.07 रिवा.

''ये बड़ी गुह्य बातें हैं। जो अच्छी रीति पढ़ेंगे, उनकी बुद्धि में ही यह बातें बैठेंगी। ... बच्चों की बुद्धि में ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान होना चाहिए। ... तकदीरवान ही ये बातें धारण कर औरों को भी समझायेंगे।''

सा.बाबा 21.3.07 रिवा.

''तपस्या वर्ष अर्थात् तपस्या के वायब्रेशन्स विश्व में और तीव्र गति से फैलाओ। ... विघ्नों का आना यह भी ड्रामा में आदि से अन्त तक नूँध है। यह विघ्न भी असम्भव से सम्भव की अनुभूति कराते हैं। ... फुटबाल के खेल में बाल आती है तब तो ठोकर लगाते हो। बाल ही न आये तो ठोकर कैसे लगायेंगे।''

अ.बापदादा 26.10.91

''यह भी फुटबाल का खेल है। खेल खेलने में मजा आता है। ... नथिंग न्यू। ड्रामा खेल भी दिखाता है और सम्पन्न सफलता भी दिखाता है।''

अ.बापदादा 26.10.91

''हमको यह निश्चय है क्योंकि यह अनादि ड्रामा है। हार-जीत का खेल है। जो होता है, वह ठीक है। क्या क्रियेटर को ड्रामा पसन्द नहीं होगा। जरूर पसन्द होगा। क्रियेटर को पसन्द होगा तो क्रियेटर के बच्चों को भी पसन्द होगा। हम घृणा कोई से नहीं कर सकते हैं क्योंकि समझते हैं कि भक्ति का भी ड्रामा में पार्ट है।''

सा.बाबा 26.4.07 रिवा.

''ड्रामा का राज़ बुद्धि में है, जो तुमको समझाते हैं। ... इसमें घृणा की तो बात ही नहीं है। यह ईश्वरीय सम्प्रदाय और आसुरी सम्प्रदाय का खेल है। भक्ति वाले भी कोई अपने को दुखी समझते थोड़ेही हैं। ... बाप समझाते हैं - यह ड्रामा अनादि-अविनाशी बना हुआ है। बहुत ही

सुन्दर नाटक बना हुआ है। ड्रामा में सुख-दुख का पार्ट नूँधा हुआ है, जिसे देखकर बहुत खुशी होती है।''

सा.बाबा 26.4.07 रिवा.

''यह बेहद का खेल बड़ा फाइन बना हुआ है, सो तो सबको पसन्द ही आना चाहिए। दिन भी अच्छा है तो रात भी अच्छी है। ... नाराज़ क्या होंगे। ड्रामा में जो पार्ट मिला हुआ है, वह तो बजाना ही है। ... यह खेल कब बन्द होता ही नहीं है, बहुत फर्स्टक्लास खेल है, इसको जानने से बुद्धि भरपूर हो गई है।''

सा.बाबा 26.4.07 रिवा.

''यह खेल कब बन्द होता ही नहीं है, बहुत फर्स्टक्लास खेल है, इसको जानने से बुद्धि भरपूर हो गई है। ... इसको जानने से मज़ा ही मज़ा आता है। भक्ति में सतयुगी राजाई का पता भी नहीं है और सतयुगी राजाई में फिर भक्ति का पता ही नहीं रहता है।''

सा.बाबा 26.4.07 रिवा.

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और संगमयुग

विश्व-नाटक की यथार्थता को देखें तो यथार्थ रीति सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव करने का समय ये पुरुषोत्तम संगमयुग ही है, जब हमको परमात्मा से सम्पूर्णता का ज्ञान मिलता है, परमात्मा हमको सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव कराते हैं और सदा काल उस स्थिति को प्राप्त करने का विधि-विधान बताते हैं। संगमयुग पर आत्माओं की सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की कलायें चढ़ती कला की होती हैं और समग्र विश्व की चढ़ती कला होती है क्योंकि सारे कल्प में संगमयुग ही चढ़ती कला का युग है, और तो सारे कल्प उतरती कला का ही समय होता है। जो इस संगमयुग पर सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का जितना गहरा, यथार्थ और अधिक समय तक अनुभव करता है, वह उतना ही भविष्य नये कल्प में उतरती कला होते भी अधिक समय तक सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की अनुभूति में रहता है। ये संगमयुग सारे कल्प सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का बीज है। जैसे बीज पर वृक्ष का आधार होता है, वैसे ही अगले कल्प में इस अनुभूति का आधार भी ये संगमयुग की अनुभूति है। इसलिए बाबा बार-बार कहते हैं कि संगमयुग पर इस अनुभूति को बढ़ाते रहो।

''बापदादा को भी ऐसे निश्चयबुद्धि विजयी रत्नों को देखकर हर्ष होता है। ... कितनी खुशियाँ हैं - बाप की खुशी, अपने भाग्य की खुशी, ईश्वरीय परिवार की खुशी। ... हर समय अपनी प्राप्तियां याद रहें तो कभी भी कोई व्यक्ति या वस्तु आकर्षित नहीं कर सकती और सहज

मायाजीत बन जायेंगे।''

अ.बापदादा 3.11.92 ग्रुप 6

''अगर राज्य-भाग्य बहुत काल का लेना है तो स्व-परिवर्तन भी बहुत काल का चाहिए। अभी से स्व-परिवर्तन का संस्कार नेचुरल बनाओ। ... ब्रह्मा बाप ने अपना संस्कार क्या बनाया, जो साकार शरीर के अन्त में भी याद दिलाया - निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी। ... तो ये श्रेष्ठ संस्कार सदा सामने रखो। ... समय के पहले अपने को सम्पन्न बनाना है।''

अ.बापदादा 12.11.92 ग्रुप 3

''अनेक मेरे-मेरे को एक 'मेरा बाबा' में बदल दो, यह है सदा खुश रहने का सहज पुरुषार्थ। ... अगर खुशी नहीं तो ब्राह्मण जीवन नहीं। ब्राह्मण जीवन का स्वांस है खुशी। ... खुश रहने वाले भी हो और खुशी बांटने वाले भी हो। बांटेगा कौन ? जिसका स्टॉक भरपूर होगा।''

अ.बापदादा 12.11.92 ग्रुप 2

''बापदादा को कहते हैं - समय पर सम्पन्न हो जायेंगे। लेकिन बापदादा ने बार-बार कहा है कि जमा बहुत समय का चाहिए। ऐसे नहीं कि जमा खाता अन्त में सम्पन्न करेंगे, समय आने पर बन जायेंगे। बहुत समय का जमा हुआ बहुत समय चलता है। ... 'करना ही है' - यह है दृढ़ता। ... सिर्फ वायदा नहीं करो लेकिन जो भी वायदे करते हो, वे मन-वचन और कर्म में लाओ।''

अ.बापदादा 30.11.99

''समय का खज़ाना, ज्ञान का खज़ाना, बोल का खज़ाना, गुणों का खज़ाना ... एक-एक खज़ाने को चेक करो। ... इन सर्व खज़ानों का खाता भरपूर हो तब कहेंगे फुल मार्क्स अर्थात् पास विद् ऑनर। ... पास विद् ऑनर बनने के लिए सर्व खज़ानों में खाता भरपूर हो।''

अ.बापदादा 30.11.99

''आप हाईएस्ट भी हो क्यों हाइएस्ट हो ? क्योंकि ऊंचे ते ऊंचे भगवान को पहचान लिया। ऊंचे ते ऊंचे बाप द्वारा ऊंचे ते ऊंची आतमयें बन गये। साधारण स्मृति, वृत्ति, दृष्टि, कृत्ति सब बदलकर श्रेष्ठ स्मृति स्वरूप, श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ दृष्टि बन गई।''

अ.बापदादा 11.11.2000

''लकीएस्ट भी कितने हो ? कोई ज्यातिषी ने आपके भाग्य की लकीर नहीं खींची है। स्वयं भाग्य विधाता ने आपके भाग्य की लकीर खींची है और 21 जन्मों के लिए तकदीर की गॉरण्टी दी है। एक जन्म नहीं लेकिन 21 जन्म कभी दुख और अशान्ति की अनुभूति नहीं होगी।''

अ.बापदादा 11.11.2000

''रिचेस्ट भी हो। ... ब्राह्मण हैं तो रिचेस्ट इन दि वर्ल्ड हैं क्योंकि ब्राह्मण आत्मा के लिए परमात्म याद से हर कदम में पदम हैं। ... मैं ब्राह्मण आत्मा क्या हूँ, यह याद रहना ही भाग्य

है। ... यह प्रभु-मिलन, यह परमात्म-प्यार, यह परमात्म-वर्सा, यह परमात्म-प्राप्तियां अभी ही प्राप्त होती हैं। 'अब नहीं तो कब नहीं'।''

अ.बापदादा 11.11.2000

''मालूम है आपका संगम का सम्पूर्ण रूप कौनसा है? शक्तियों और पाण्डवों के रूप में यह संगम का जो सम्पूर्ण स्वरूप है, वह अब आप सभी को अपने में प्रत्यक्ष महसूस होगा। आपको मालूम पड़ेगा हमारे कौन से भक्त हैं और कौन सी प्रजा है। जो प्रजा होगी, वह तो नज़दीक आयेंगे और जो भक्त होंगे, वे आखरीन पिछाड़ी में चरणों पर झुकेंगे।''

अ.बापदादा 16.7.69

''समय प्रमाण सबसे अमूल्य श्रेष्ठ खज़ाना है - पुरुषोत्तम संगमयुग का समय क्योंकि इस संगम पर ही सारे कल्प की प्रालब्ध बना सकते हो। इस छोटे से युग का एक सेकेण्ड प्राप्तियों और प्रालब्ध के प्रमाण एक सेकेण्ड की वेल्यू एक वर्ष के समान है। इस समय के लिए ही गायन है - 'अब नहीं तो कब नहीं' क्योंकि इस समय ही परमात्म पार्ट नूँधा हुआ है। इसलिए इस समय को हीरे तुल्य कहा जाता है। ... आप सब बच्चे भी हीरे तुल्य जीवन के अनुभवी आत्मायें हो।''

अ.बापदादा 15.12.07

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और संगमयुग एवं सतयुग

संगमयुग और सतयुग की सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता में अन्तर

संगमयुग पर आत्मा पुरुषार्थ से सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का जो अनुभव करती है, वह चढ़ती कला का होता है अर्थात् वह शून्य से आरम्भ होकर सम्पूर्णता उच्चतम स्थिति तक जाता है। जैसे-जैसे आत्मा ज्ञान की यथार्थता को समझकर पुरुषार्थ करती है, वैसे-वैसे उसके अनुभव की डिग्री और समय बढ़ता जाता है, जिसको आत्मा स्वयं भी अनुभव करती है और उसका प्रभाव वातावरण में भी फैलता है, जिससे अन्य आत्मायें भी उसे अनुभव करती हैं। सतयुग में सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का जो अनुभव होता है, वह उतरती कला का होता है। समय की गति के साथ आत्मा की स्थिति गिरती जाती है परन्तु यथार्थ ज्ञान न होने के कारण आत्मा उसको अनुभव नहीं करती है, इसलिए त्रेता अन्त तक आत्मायें जीवन में सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव करती हैं। फिर भी आत्माओं को गिरती कला की जाने-अन्जाने उनको महसूसता तो अवश्य आती होगी।

''ब्राह्मण जीवन में भी अगर मेहनत करनी पड़ती है, युद्ध करनी पड़ती है तो मौज कब बनायेंगे। सतयुग में तो पता ही नहीं होगा कि मौज भी मना रहे हैं। वहाँ कन्ट्रॉस्ट नहीं होगा। अभी कन्ट्रॉस्ट का पता है कि मेहनत क्या है और मौज क्या है, उसका अनुभव होता है। मौज तो अभी है, सतयुग में तो कॉमन बात होगी।''

अ.बापदादा 12.11.92 ग्रुप 4

संगमयुग और सतयुग की सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता में अन्तर

संगमयुग	सतयुग
चढ़ती कला की होती है।	उतरती कला की होती है।
यथार्थ ज्ञान से अनुभव होता है।	यथार्थ ज्ञान तो नहीं होता है परन्तु अनुभव होता है।
उसी जीवन के पुरुषार्थ से होता है।	पूर्व जन्म में किये पुरुषार्थ से होता है।

संगमयुग, सतयुग एवं कलियुग की सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का तुलनात्मक अध्ययन

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता हर आत्मा के जीवन का अभीष्ट लक्ष्य है क्योंकि कोई भी आत्मा जब भी इस धरा पर पहले पार्ट बजाने आती है तो वह अपनी सम्पूर्ण स्थिति में आती है, जिसके कारण वह यहाँ पूर्ण सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव करती है, इसलिए वह अनुभव उसको सारे कल्प अप्रसन्नता के समय अवश्य खींचता है और आत्मा उसके लिए अपनी शक्ति, सामर्थ्य, ज्ञान के आधार पर पुरुषार्थ भी करती है और अन्त में उसको पाती भी है परन्तु हर एक की सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता देश-काल के अनुसार अपनी-अपनी होती है। संगमयुग, सतयुग एवं कलियुग की सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता में क्या अन्तर है, उसको जानना भी अति आवश्यक है, इसके लिए ही यहाँ इस विषय में विचार करते हैं अर्थात् तीनों का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं।

जो भी आत्मायें परमधाम से इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाने आती हैं, वे पहले

सतोप्रधान होने के कारण सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव अवश्य करती हैं। सतयुग-त्रेता में आत्माओं को इसकी अनुभूति होती है परन्तु उस समय सभी आत्मायें इस स्थिति का अनुभव करती हैं भल पहले से पार्ट बजाने आई आत्माओं की सतोप्रधानता की कलायें कम हो जाती हैं, नई आने वाली आत्मायें अपने पूर्ण सतोप्रधान स्वरूप में होती हैं। फिर भी सभी आत्मायें प्रसन्नता की अनुभूति में होती हैं, किसको भी किसी प्रकार की भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, रोग-शोक आदि नहीं होता है परन्तु वहाँ हर आत्मा की उतरती कला अवश्य होती है, जिसका भी जाने-अन्जाने आत्मा को आभास तो होता होगा परन्तु वह प्रत्यक्ष नहीं होता है, इसलिए सभी प्रसन्नता का अनुभव करती हैं।

द्वापर-कलियुग में भी जो नई आत्मायें परमधाम से विश्व-नाटक में पार्ट बजाने आती हैं, वे सतोप्रधान होने के कारण जीवन में सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव करती हैं परन्तु पहले से आई हुई आत्मायें देहाभिमान के वशीभूत विकर्मों के कारण दुख-अशान्ति में आ जाती हैं अर्थात् वे अप्रसन्नता की अनुभूति भी करती हैं, इसलिए वहाँ दोनों प्रकार की आत्मायें होती है और दोनों ही प्रकार की आत्मओं की उत्तरोत्तर उतरती कला होती है, इसलिए उत्तरोत्तर अप्रसन्नता का वातावरण, अनुभूति बढ़ती जाती है। इसलिए ही द्वापर-कलियुग में आत्मायें मुक्ति-जीवनमुक्ति अर्थात् सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता को पाने के लिए पुरुषार्थ भी करती हैं अर्थात् तपस्या-भक्ति आदि करती हैं परन्तु सतयुग में उतरती कला होते भी वे आत्मायें इस तरह का कोई पुरुषार्थ नहीं करती हैं क्योंकि वहाँ आत्माओं को अप्रसन्नता का अनुभव नहीं होता है। वहाँ वे जो हैं, जैसे हैं, उसमें सन्तुष्ट रहती हैं, इसलिए सदा प्रसन्न रहती हैं।

पुरुषोत्तम संगमयुग पर परमात्मा आकर इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान देते हैं और आत्माओं को उनकी सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव भी कराते हैं, जिससे आत्मायें जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति अर्थात् यथार्थ सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव करती हैं और उस अनुभव को स्थाई बनाने के लिए सफल पुरुषार्थ करती हैं, जिससे आत्माओं की चढ़ती कला होती है और पुरुषार्थ करते-करते अपनी मूल सम्पूर्णता की स्थिति को पूर्ण और सदाकाल के लिए प्राप्त करती हैं, जिसके आधार पर सभी आत्मायें परमधाम घर वापस जाती हैं। संगमयुग पर भल चारो तरफ अपूर्णता-असन्तुष्टता-अप्रसन्नता, दुख-अशान्ति, भय-चिन्ता का वातावरण होता है परन्तु आत्मा को यथार्थ ज्ञान और परमात्मा का साथ होने के कारण जीवन में भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति का ज्ञान, उसकी परिस्थितियाँ होते और उसकी अनुभूति होते भी जीवन में चढ़ती कला की अनुभूति होने के कारण सहनशक्ति रहती है, जिससे वे

दुख-अशान्ति का अनुभव न करके प्रसन्नता का ही अनुभव करती है। परमात्मा ने उनको जो सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव कराया, उसको चिर-स्थाई बनाने के लिए प्रयत्नशील रहती हैं। सदा सम्पूर्ण परमात्मा का साथ, यथार्थ ज्ञान और चढ़ती कला के कारण संगमयुग पर आत्मायें अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का पुरुषार्थ करने के कारण जो प्रसन्नता का अनुभव करती हैं, उसको आनन्द, अतीन्द्रिय सुख के रूप में याद किया जाता है, जो सम्पूर्णता के अनुभव की सवोच्च स्थिति है। वास्तव में सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का यथार्थ अनुभव संगमयुग पर ही होता है, जब आत्मा को तीनों कालों का ज्ञान होता है, सम्पूर्णता-अपूर्णता, सन्तुष्टता-असन्तुष्टता, प्रसन्नता-अप्रसन्नता दोनों का अनुभव होता है।

''इस ब्राह्मण जीवन में कई बन्धनों से तो मुक्त हुए हो लेकिन सर्व बन्धनों से मुक्त हैं या कोई बन्धन अभी भी अपने बन्धन में बांधता है? इस ब्राह्मण जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करना ही ब्राह्मण जीवन की श्रेष्ठता है क्योंकि सतयुग में जीवनमुक्ति और जीवनबन्ध दोनों का ज्ञान ही नहीं होगा। अभी अनुभव कर सकते हो कि जीवनबन्ध क्या है और जीवनमुक्त क्या है।'' (परमधाम में शरीर ही नहीं होगा तो मुक्ति का अनुभव भी कैसे होगा?)

अ.बापदादा 15.10.07

''अपने से पूछो - क्या मुक्तिधाम में मुक्ति का अनुभव करना है वा सतयुग में जीवनमुक्ति का अनुभव करना है वा अब संगमयुग में मुक्ति-जीवनमुक्ति का संस्कार बनाना है? ... कहते हो - ईश्वरीय संस्कार से नया दैवी संसार बना रहे हैं। तो अब संगम पर ही मुक्ति-जीवनमुक्ति के संस्कार इमर्ज चाहिए ना। तो चैक करो - सर्व बन्धनों से मन और बुद्धि मुक्त हुए हैं?''

अ.बापदादा 15.10.07

सम्पूर्णता को प्राप्त हुई आत्मा जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव अवश्य करेगी और जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव में स्थित आत्मा सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता के अनुभव में अवश्य होगी और ये अनुभव आत्माओं को परमधाम में जाने से पहले और परमधाम से आने पर प्रथम जन्म में अवश्य होगा।

''बोझ क्या है और डबल लाइट का अनुभव क्या है! दोनों का अन्तर सामने रखो। समय की समीपता प्रमाण बापदादा हर एक बच्चे में क्या देखने चाहते हैं? जो कहते हैं, वह करके दिखाना है। जो सोचते हो, वह स्वरूप में लाना है क्योंकि बाप का वर्सा है, जन्मसिद्ध अधिकार है - मुक्ति और जीवनमुक्ति।''

अ.बापदादा 15.10.07

''पहले-पहले है श्रीकृष्ण फर्स्ट पावन मनुष्य, उनकी महिमा ज्यादा है। लक्ष्मी-नारायण की इतनी महिमा नहीं है क्योंकि बच्चे पवित्र सतोप्रधान होते हैं।''

सा.बाबा 12.5.08 रिवा.

''मैं जानता हूँ - यह माया के साथ युद्ध है, इसमें कभी चढ़ेंगे और कभी गिरेंगे। ... परीक्षायें सब पर आती हैं। कुछ भी माया का वार न हो, फिर तो शरीर ही छूट जाये। अभी सम्पूर्ण कोई बना नहीं है।''

सा.बाबा 13.5.08 रिवा.

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और विश्व-नाटक का ज्ञान एवं आत्मा-परमात्मा

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और उसकी अनुभूति

''बाप तुमको मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन और सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की फुल नॉलेज देते हैं, जिससे तुम फुल बनते हो। देवी-देवतायें हैं ही फुल ... तुम सर्वशक्तिवान बाप से योग लगाकर, शक्ति लेकर माया पर विजय पाते हो। समझते हो - अभी हमारा 84 जन्मों का ड्रामा पूरा होता है।''

सा.बाबा 8.5.08 रिवा.

परमात्मा ज्ञान का सागर है और सदा सम्पूर्ण है, वही आकर आत्माओं को सम्पूर्णता का ज्ञान देता है और आत्माओं को सम्पूर्ण बनाकर सच्ची सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव कराता है, जिस अनुभव को करके ही आत्मायें अभीष्ट पुरुषार्थ करके उसको स्थाई बनाते हैं। परमात्मा हर आत्मा को उसकी सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव अवश्य कराता है, उसके बाद उसको स्थाई बनाना हर आत्मा का अपना पुरुषार्थ होता है। इस अनुभव के लिए ही परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, उसके मुख्य-मुख्य बिन्दुओं का अंशमात्र में यहाँ वर्णन करते हैं।

परमात्मा के द्वारा उद्घाटित विश्व-नाटक के गुह्य राज़

आत्मा, परमात्मा, विश्व-नाटक,

त्रिलोक, कल्प-वृक्ष, योग,

कर्मों की गहन गति, पवित्रता,

आदि आदि का ज्ञान परमात्मा ने अभी संगमयुग पर दिया है, जिसको पाकर ही आत्मायें

सम्पूर्ण बनती हैं और जीवन में सच्ची सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की अनुभूति करती हैं।

''ज्ञान रत्न जो अभी तुम लेते हो, वह फिर सच्चे हीरे-जवाहर बन जाते हैं। 9 रत्न की माला कोई हीरे-जवाहरों की नहीं है। इन रत्नों की ही माला है। मनुष्य लोग फिर यह रत्न समझ अंगूठियां पहन लेते हैं। इन ज्ञान रत्नों की माला इस संगम पर ही मिलती है। ये रत्न ही तुमको भविष्य 21 जन्म मालामाल बनाते हैं।''

सा.बाबा 10.1.69

''तुम जानते हो इस रथ द्वारा बाप हमको सब राज़ समझाते हैं। रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाया है। ... नई दुनिया स्थापन करना उनका ही काम है। ऐसे नहीं कि वहाँ बैठे स्थापना करते हैं।''

सा.बाबा 22.12.04 रिवा.

सत्य ज्ञान जीवन की परम प्राप्ति है क्योंकि सत्य ज्ञान आत्मा को निर्भय, निचिन्त बनाकर परम सुख को देने वाला है। सत्य ज्ञान का दाता ज्ञान सागर परमात्मा है, वह अभी सत्य ज्ञान दे रहा है। ज्ञान की इस सत्यता को समझकर और धारण कर परम सुख को अनुभव करना और कराना हम आत्माओं का परम कर्तव्य है।

''यह बना-बनाया खेल है ना। यह बेहद का बाप समझाते हैं, उनको ही सत्य कहा जाता है। सत्य बातें तुम संगम पर ही सुनते हो, फिर तुम सतयुग में जाते हो। ... तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में उतना ही टाइम लगता है, जितना टाइम बाप यहाँ रहते हैं।''

सा.बाबा 17.10.04 रिवा.

''आज सर्व खज़ानों के दाता, ज्ञान, शक्तियों, सर्व गुणों, श्रेष्ठ संकल्पों का खज़ाना देने वाला बापदादा अपने चारो ओर के खज़ाने के बालक सो मालिक अधिकारी बच्चों को देख रहे हैं। अखुट खज़ानों के मालिक बाप सभी बच्चों को सर्व खज़ानों से सम्पन्न कर रहा है। बाप हर एक को सर्व खज़ाने देते हैं।''

अ.बापदादा 15.12.07

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता आत्मा का मूल स्वरूप है परन्तु उसकी अनुभूति देह के साथ ही होती है या हो सकती है। परमात्मा निराकार हैं, उनको अपनी देह नहीं है, इसलिए उनके लिए उसकी अनुभूति का प्रश्न ही नहीं उठता है अर्थात् वे इसका अनुभव नहीं करते हैं और न उनको अनुभव करने की आवश्यकता अनुभव होती है। परमात्मा तो सदा सम्पूर्णता और सम्पन्नता का सागर है अर्थात् सदा सम्पूर्ण और सम्पन्न हैं। सम्पूर्णता-सम्पन्नता-

सन्तुष्टता-प्रसन्नता की अनुभूति का प्रश्न आत्माओं के लिए उठता है क्योंकि आत्माओं को निराकार होते भी उनको अपनी देह है, इसलिए उन पर देह के धर्म भी प्रभावित होते हैं अर्थात् इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाते हुए आत्मायें उतरती कला में आती हैं, जिससे उनको अपूर्णता-असम्पन्नता-असन्तुष्टता-अप्रसन्नता का अनुभव होता है। विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार जब आत्माओं की कला इतनी गिर जाती है कि देहाभिमान उन पर प्रभावित हो जाता है, जिससे वे विकर्मों में प्रवृत्त हो जाती हैं, विकर्मों के फलस्वरूप आत्मायें अपूर्णता, असम्पन्नता, असन्तुष्टता और अप्रसन्नता की अनुभूति करती हैं। परमात्मा जो सदा सम्पूर्ण है, वह कल्पान्त में आकर आत्माओं को विश्व-नाटक का, उनके वास्तविक स्वरूप और स्थिति का ज्ञान देते हैं और आत्मिक स्वरूप का अनुभव कराते हैं तब आत्मायें सच्ची सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का पुरुषार्थ करती हैं और उसका अनुभव करती हैं। जो अपूर्णता, असम्पन्नता, असन्तुष्टता और अप्रसन्नता का अनुभव करती हैं, वे ही सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता, प्रसन्नता का भी अनुभव कर सकती हैं। इसलिए बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है कि खुशी-नाखुशी या मौज का अनुभव आत्माओं को संगमयुग पर ही होता है जब उनके सामने खुशी-नाखुशी या मौज-नामौज दोनों प्रकार की बातें होती है, दोनों की अनुभूति संस्कार रूप में उनमें होती है।

किसी स्थिति का अनुभव उसके विपरीत स्थिति के अनुभव अर्थात् कन्ट्रॉस्ट में ही होता है। परमात्मा में विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान सम्पूर्ण रीति है, जिसको वे कल्पान्त में आकर आत्माओं को देते हैं परन्तु आत्माओं में उसकी धारणा उनके पार्ट के अनुसार होती है अर्थात् जिन आत्माओं का विश्व-नाटक में जितना और जितने समय का पार्ट है, उसके अनुसार ही वे इस ज्ञान को धारण करती हैं। जो आत्माओं का आदि से पार्ट है, वे आत्मायें उसको अच्छी रीति धारण करती हैं परन्तु उनमें भी उसकी धारणा नम्बरवार होती है और जिसमें जितनी धारणा होती है, वह उतना ही साक्षी होकर इस विश्व-नाटक का परमानन्द अनुभव करता है। भल आत्मायें सम्पूर्ण पवित्र बनकर ही परमधाम जाती हैं अर्थात् सम्पूर्ण पवित्र अर्थात् देहाभिमान से मुक्त होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर ही जाती हैं परन्तु उनमें भी ज्ञान-गुण-धक्तियों की धारणा नम्बरवार होती है।

‘‘‘वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य’- यह गीत सदा बजता रहता है?... भाग्यविधाता बाप अपना बन गया। ... ऐसा अटल-अखण्ड भाग्य पा लिया! तो स्थिति भी अभी ऐसी अटल बनाओ।... अविनाशी बाप है, अविनाशी प्राप्तियां हैं तो स्थिति भी अविनाशी होनी चाहिए।’’

अ.बापदादा 12.11.92 ग्रुप 1

परमात्मा पिता सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव अपने सानिध्य से, दृष्टि-वृत्ति से, संकल्प और वातावरण से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी न किसी रूप से सर्व आत्माओं को कराते अवश्य हैं। इसलिए ही आत्मायें दुख-अशान्ति के समय परमात्मा को याद करती हैं।

Q. सम्पूर्णता सन्तुष्टता का और सन्तुष्टता प्रसन्नता का आधार है। तो हमारी सम्पूर्णता और परमात्मा की सम्पूर्णता में क्या अन्तर है और क्या सामन्जस्य है ?

परमात्मा से क्या-क्या प्राप्तियां हुई हैं, उनका स्पष्ट ज्ञान होगा और जीवन में धारणा होगी, तब आत्मा अपने में भरपूरता अर्थात् सम्पूर्णता का अनुभव अवश्य करेगी और जहाँ भरपूरता है, वहाँ सम्पन्नता है ही है। सम्पन्नता ही सन्तुष्टता का आधार है और जब जीवन में सन्तुष्टता होगी तो प्रसन्नता अवश्य होगी क्योंकि सन्तुष्टता प्रसन्नता की जननी है। परमात्मा निराकार है और सदा सम्पूर्ण और सम्पन्न सागर है, इसलिए उनके लिए सन्तुष्टता और प्रसन्नता है या नही है, इसका प्रश्न नहीं उठता। सन्तुष्टता-प्रसन्नता का प्रश्न देहधारियों के लिए उठता है और परमात्मा सर्व आत्माओं को सम्पूर्ण बनाने आता है, इसलिए परमात्मा को पाकर सभी आत्मायें प्रसन्नता का अनुभव करती हैं।

''बाप हर बात में सम्पन्न है। ऐसे हर एक बच्चे के नयन, हर एक बच्चे का मुखड़ा बाप समान है, सदा मुस्कराता हुआ चेहरा है ? कभी सोच वाला, कभी व्यर्थ संकल्पों की छाया वाला, कभी उदास, कभी बहुत मेहनत वाला चेहरा तो नहीं है ?''

अ.बापदादा 5.3.08

''लास्ट नम्बर वाला बच्चा भी बाप का प्यारा है। तो बाप लास्ट नम्बर वाले बच्चे को भी सदा गुलाब देखना चाहते हैं। खिला हुआ गुलाब। ... अभी समय की समपीता का और अचानक होने का इशारा तो बापदादा ने दे ही दिया है। ऐसे समय के लिए एवर-रेडी और अलर्ट होना आवश्यक है।''

अ.बापदादा 5.3.08

''बापदादा यही चाहते हैं कि जो प्रतिज्ञा की है - बाप समान बनने की तो हर एक बच्चे की सूरत में बाप की मूरत दिखाई दे। हर एक बोल बाप समान हो। बापदादा के बोल वरदान रूप बन जाते हैं। ... तो चेक करो - हमारी सूरत में बाप की मूरत दिखाई देती है ? बाप की मूरत क्या है - हर बात में सम्पन्न।''

अ.बापदादा 5.3.08

''समय प्रमाण अभी बापदादा सभी बच्चों को सर्व खज़ानों से सम्पन्न देखना चाहते हैं क्योंकि ये खज़ाने सिर्फ अभी एक जन्म के लिए नहीं हैं लेकिन ये अविनाशी खज़ाने अनेक जन्म साथ चलने वाले हैं। इस समय के खज़ानों को सभी बच्चे जानते ही हो कि बापदादा ने क्या-2

खज़ाने दिये हैं।''

अ.बापदादा 18.3.08

''सबके सामने खज़ानों की लिस्ट इमर्ज हो गई है क्योंकि बापदादा ने पहले भी बताया कि खज़ाने तो मिले हैं लेकिन जमा करने की विधि क्या है? जो जितना निमित्त और निर्मान बनता है, उतना ही खज़ाने जमा होते हैं।''

अ.बापदादा 18.3.08

''एक है - अपने पुरुषार्थ प्रमाण खज़ाने जमा करना, दूसरा है - दुआओं का खाता। ... सन्तुष्टता दुआओं का खाता बढ़ाती है और तीसरा खाता है - पुण्य का खाता। पुण्य का खाता जमा करने का साधन है ... मन, वाणी, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते सदा निस्वार्थ और बेहद की वृत्ति, स्वभाव, भाव और भावना से सेवा करना।''

अ.बापदादा 18.3.08

''यह जो कुछ देखते हो, वह सब खत्म होना है। बाकी आत्मा अविनाशी है, आत्मा को ही शान्तिधाम जाना है। ... अपनी बुद्धि से काम लो। भूत तो सभी में हैं ना। ... अब तुम बच्चों को तो एकदम सम्पूर्ण पावन बनना है। अपना शरीर भी याद न रहे, तब पद पा सकेंगे।''

सा.बाबा 19.2.08 रिवा.

''बाप ने अपने समान बनाने के लिए बुलाया है। अपने समान अर्थात् जीरो बनाने। जीरो में बीज वा बिन्दी दोनों आ जाते हैं और फिर साथ-साथ कोई ऐसा कार्य हो जाता है तो उसको भी जीरो बनाना है। ... जीरो को याद रखेंगे तो हीरो बनेंगे। (हीरो अर्थात् मुख्य एक्टर और हीरो अर्थात् रतन) ... दो शब्द याद रखना - जीरो और हीरो। ये दो बातें याद रखेंगे तो बाप के समान सर्व गुणों से सम्पन्न हो जायेंगे।''

अ.बापदादा 19.7.69

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और त्रिलोक

मूलवतन में सभी आत्मायें सम्पूर्ण और सम्पन्न स्थिति में होती हैं परन्तु वहाँ देह और कर्म न होने के कारण सन्तुष्टता-असन्तुष्टता, प्रसन्नता-अप्रसन्नता का प्रश्न ही नहीं उठता है। प्रसन्नता-अप्रसन्नता का प्रश्न इस साकार लोक में ही उठता है, जहाँ आत्माओं को देह होती है और पार्ट बजाती हैं अर्थात् कर्म करती हैं। सूक्ष्मवतन में भी आत्मायें अपने विकर्मों का हिसाब-किताब पूरा करके ही जाते हैं, इसलिए वहाँ अप्रसन्नता का तो प्रश्न नहीं उठता है परन्तु वहाँ कुछ हद तक प्रसन्नता की अनुभूति अवश्य होती है क्योंकि आत्मायें इस साकार दुनिया के अनुभवों को लेकर वहाँ जाती हैं और ईश्वरीय कर्तव्य के लिए ठहरती हैं तथा साकार लोक

की आत्माओं को सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता अनुभव कराने के लिए दिव्य कर्तव्य करती हैं। जैसे ब्रह्मा बाबा अव्यक्त फरिश्ता रूप में ठहरे हुए हैं और अपना दिव्य कर्तव्य कर रहे हैं।

''अभी प्रालब्ध देखते हो वा वर्तमान सौभाग्य का सितारा चमकता हुआ देखते हो वा और कुछ? ... एक तो भविष्य प्रालब्ध के भाग्य का, दूसरा वर्तमान सौभाग्य का और तीसरा जो परमधाम में आपकी आत्मा की सम्पूर्ण अवस्था होनी, वह आत्मा की सम्पूर्ण स्थिति का सितारा। इन तीनों सितारों को सदा देखते रहना।'' अ.बापदादा 13.3.69

''विनाश होगा, शरीर तो सबके यहाँ खत्म हो जायेंगे। यह होलिका, रक्षाबन्धन आदि सब उत्सव अभी के हैं। ... अभी तुम समझते हो - वापस घर जाना है, इसलिए देहाभिमान छोड़ना है। ... सारी दुनिया को पावन बनाकर वापस ले जाता हूँ। वहाँ परमधाम में सब आत्मायें पवित्र ही रहती हैं, फिर यहाँ सतो, रजो, तमो से पास करते हैं।''

सा.बाबा 5.6.08 रिवा.

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और कल्प-वृक्ष

ब्राह्मण आत्मायें कल्प-वृक्ष की जड़ में बैठी हैं अर्थात् उनकी स्थिति पर ही सारे कल्प-वृक्ष का आधार है। जब ब्राह्मण आत्मायें सम्पूर्णता को पाती हैं तो सारा वृक्ष सम्पूर्णता को पाता है। जब ब्राह्मण आत्मायें जीवन में सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता अनुभव करेंगी तो उनके आधार सारा कल्प-वृक्ष सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता को पायेगा अर्थात् सर्व आत्मायें मुक्ति-जीवनमुक्ति को पायेंगी अर्थात् सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव करेंगी।

हम ब्राह्मण आत्मायें कल्प-वृक्ष की जड़ में बैठे हैं और भविष्य में तने के रूप में होंगे। सारे वृक्ष का आधार हमारे ऊपर है। हम सन्तुष्ट और प्रसन्न होंगे तो हमारी प्रसन्नता से उत्पन्न तरंगे सारे वृक्ष को प्रसन्नता का अनुभव करायेंगी, उनको प्रसन्न मिलेगी। हमारे द्वारा बाबा इस कल्प-वृक्ष की कलम लगा रहा है, इसलिए हम सम्पूर्ण और सम्पन्न बनेंगे तो इस कल्प-वृक्ष की कलम का कार्य सम्पन्न हो जायेगा।

''मैं विशेष आत्मा, स्वमानधारी आत्मा, बापदादा की पहली रचना श्रेष्ठ आत्मा, बापदादा के दिल तख्तनशीन हूँ। साथ में परमात्म रचना इस वृक्ष के जड़ में बैठी हुई पूर्वज और पूज्य आत्मा हूँ - इस स्मृति का तिलकधारी हूँ। साथ में बेफिकर बादशाह, सारा फिकर का बोझ बापदादा को अर्पण कर डबल लाइट की ताजधारी हूँ ... परमात्म-प्यारी आत्मा हूँ।''

अ.बापदादा 18.3.08

''बाप बच्चों को समझाते हैं। जो समझते हैं, उनका फर्ज है अलौकिक कार्य करना। तुमको खुशी होनी चाहिए। अथाह खज़ाना मिलता है तो दान भी देना है। ... अपना और दूसरों का कल्याण करना है। शिवबाबा तो सभी का कल्याण करने वाला है। तुमको भी कल्याणकारी बनना है।''

सा.बाबा 12.10.07 रिवा.

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता और प्रसन्नता के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ

हर आत्मा के जीवन की प्रसन्नता, उसके जीवन की सफलता पर आधारित होती है और सफलता का आधार उसका पुरुषार्थ अर्थात् उसके अपने ही कर्मे होते हैं। किसी आत्मा की सफलता और प्रसन्नता किसी दूसरे की असफलता या अप्रसन्नता पर आधारित नहीं होती है। दूसरी आत्मायें तो निमित्त कारण होते हैं, मूल कारण हर आत्मा का अपना ही कर्म होता है। इस सत्य को जानकर आत्मा को अपनी असफलता या अप्रसन्नता के लिए किसी अन्य आत्मा को दोषी नहीं समझना चाहिए और किसी आत्मा के पतन में या असफलता के समय उसमें खुश नही होना चाहिए। दूसरों की असफलता या अप्रसन्नता में प्रसन्न होना आत्मा की अज्ञानता को प्रदर्शित करता है। ज्ञानी आत्मा किसी आत्मा की असफलता या पतन के समय उसके प्रति रहमदिल बनकर उसके प्रति शुभ-भावना रखकर उसके शुभ की कामना करके उसको सहयोग प्रदान करते हैं और अपने अभीष्ट लक्ष्य के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ करते हैं।

ज्ञान-योग-धारणा-सेवा चारो की सम्पन्नता ही आत्मा को अविनाशी प्रसन्नता अनुभव कराती है। सेवा से दुआओं का खाता जमा होता है और वह जमा का खाता आत्मा को प्रसन्नता का अनुभव कराता है और समय पर बहुत मदद करता है। ऐसे ही ज्ञान-योग-गुण-शक्तियों का जमा का खाता भी भरपूर होगा, तब ही आत्मा सदा काल सम्पूर्णता, सम्पन्नता-सन्तुष्टता और उसके फलस्वरूप प्रसन्नता का अनुभव करेगी।

सफलता भी आत्मा को प्रसन्नता प्रदान करती है परन्तु सच्ची सफलता क्या है, वह विचारणीय है। देह और देह की दुनिया से सेकेण्ड में न्यारे होकर अपने सम्पूर्ण आत्मिक स्वरूप बिन्दुरूप अर्थात् बीजरूप निर्संकल्प स्थिति में स्थित हो जाना ही जीवन की सच्ची सफलता है अर्थात् सच्चा पुरुषार्थ है। बीजरूप स्थिति सर्वप्राप्तियों से भरपूर अर्थात् सम्पन्न स्थिति है, जिसमें सदा काल की सन्तुष्टता और प्रसन्नता समाई रहती है। बीजरूप स्थिति ही आत्मा की सम्पूर्ण स्थिति है, जो हर आत्मा को समय पर प्राप्त होती ही है परन्तु जो अपने पुरुषार्थ से उस स्थिति को समय से पहले प्राप्त करता है, वह उसका सुख इस जीवन में ही अनुभव करता है।

सन्तुष्टता केवल स्थूल प्राप्तियों की नहीं होती है। देखने, करने, प्राप्तियों, आशाओं-इच्छाओं की पूर्ति आदि-आदि सब प्रकार की सन्तुष्टता होगी, तब सदा काल की प्रसन्नता होगी। इसीलिए बाबा ने इच्छा मात्रम् अविद्या की बात कही है। इच्छा मात्रम् अविद्या अर्थात् सम्पूर्णता को प्राप्त बीजरूप स्थिति में स्थित बिन्दुरूप आत्मा जहाँ जिस स्थिति में है, वहाँ ही स्वयं को सम्पन्न और सन्तुष्ट अनुभव करती है, जिसके कारण वहाँ ही वह प्रसन्नता का अनुभव करती है। इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति में आत्मा स्वयं सम्पन्न अनुभव करती ही है परन्तु दूसरों को भी सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव कराती है।

''बापदादा समझते हैं - अब खुश-खैराफत पूछने की भी आवश्यकता नहीं है।... ताजधारी खुद औरों से खुश-खैराफत पूछते हैं। ... राजा अर्थात् निराधार।... ईश्वरीय नियमों में पूरे पक्के रहें और निराधार भी पूरा रहे। साकार में सबने सबूत देखा। जितना ही नियमों में सम्पूर्ण, उतना ही निराधार।''

अ.बापदादा 22.7.69

''परिस्थितियाँ नहीं बदलेंगी ... ये तो दिन प्रतिदिन और विशाल रूप धारण करेंगे परन्तु इनमें रहते हुए भी अपनी स्थिति की परिपक्वता चाहिए।... यह प्रैक्टिस करो कि जहाँ बुद्धि को लगाना चाहता हूँ, वहाँ लगती है कि नहीं लगती है।''

अ.बापदादा 23.7.69

Q. क्या जीवन की सफलता और उसके फलस्वरूप सन्तुष्टता-प्रसन्नता आत्मा के अपने हाथों में है? यदि है तो किस हद तक और कैसे?

हमारे जीवन की सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का आधार योग है। योग जितना अच्छा होगा, सफलता उतनी ही अच्छी होगी। पुरुषार्थ और प्रालब्ध, कर्म और फल इस अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक का विधि-विधान है, जिसके अनुसार कर्म करना आत्मा का स्वभाव है और कर्म के अनुसार फल अवश्य मिलता है परन्तु विविधता इस विश्व-नाटक का धर्म है। सभी आत्मायें योग द्वारा सम्पूर्णता को प्राप्त करती हैं, फिर भी सब में विविधता अवश्य होती है, इसलिए अति महत्वाकांक्षी भी नहीं होना है और पुरुषार्थहीन भी नहीं होना है। जीवन में अनेक कार्यों की सफलता में योग का पुरुषार्थ सर्वश्रेष्ठ साधन है, इसलिए बाबा ने योग के प्रयोग के लिए कहा है। योग की सफलता अवश्य होती है परन्तु हर बात की एक सीमा होती है, इसलिए यथार्थ और आदर्श, ज्ञान और भावना दोनों को स्मृति में रखकर समझकर इच्छा-आकांक्षा करना, आशा रखना अति आवश्यक है।

''अपने सम्पन्न और समान बनने का प्लान आपही बनाओ। ... बापदादा जन्मदिन की विशेष

गिफ्ट वरदान रूप में दे रहे हैं। लेकिन वरदान काम में तब आयेगा, जब रोज़ अमृतवेले इस वरदान को रिवाइज़ करेंगे। ... गिफ्ट है - आपका एक कदम हिम्मत का तो बापदादा हजार कदम मदद का देगा। ऐसे नहीं कि देखें बाबा मदद करता है या नहीं। इम्तहान नहीं लेना। बाप बंधा हुआ है। आप भी बंधे हुए हो और बाप भी बंधा हुआ है।''

अ.बापदादा 5.3.08

''अभी बापदादा कौनसी ड्रिल कराने चाहते हैं . एक सेकेण्ड में शान्ति की शक्ति का स्वरूप बन जाओ। एकाग्र बुद्धि और एकाग्र मन। सारे दिन में एक सेकेण्ड बीच-बीच में निकाल यह अभ्यास करो। साइलेन्स का संकल्प किया और स्वरूप हुआ। इसके लिए समय की आवश्यकता नहीं है। एक सेकेण्ड का अभ्यास करो साइलेन्स का।''

अ.बापदादा 5.3.08

''अभी तुम जानते हो कि यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है। ऐसे नहीं कि सृष्टि-चक्र को जानने से सर्वगुण सम्पन्न बन जाते हैं। नहीं, यह तो पढ़ाई है। ... सर्वगुण सम्पन्न बनने में अच्छी ही मेहनत लगती है। नॉलेज के साथ इतना ही योगी भी बनना है।''

सा.बाबा 20.11.07 रिवा.

''जमा की विधि बहुत सहज है। सिर्फ बिन्दी लगाते जाओ। बिन्दी याद है तो जमा होता है। जैसे स्थूल खज़ाने में भी एक के साथ बिन्दी लगाते जाओ तो बढ़ता जाता है ना! ऐसे ही आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा में जो बीता वह भी फुल-स्टॉप अर्थात् बिन्दी। ... तो जमा का खाता बढ़ने की विधि है 'बिन्दी' और गँवाने का रास्ता है लम्बी लाइन, क्वेश्चनमार्क, आश्चर्य की मात्रा लगाना।''

अ.बापदादा 30.11.99

''अब हमारे 84 जन्म पूरे हुए, अब हम घर जा रहे हैं। यह भी याद रहे तो तुम बहुत प्रफुल्लित रहेंगे। ... रात को जागकर प्रैक्टिस करो फिर अवस्था स्थाई जम जायेगी।''

सा.बाबा 14.5.08 रिवा.

''बाप फिर भी बच्चों को कहते हैं - रात को अथवा अमृतवेले जागो, इसमें बहुत कमाई है। ... कमाई में नींद नहीं आती है। कमाई में बहुत खुशी होती है। ... यह तो वण्डरफुल कमाई है। चलते-फिरते बाप को याद करो तो बहुत भारी कमाई है।''

सा.बाबा 15.5.08 रिवा.

जब आत्मा का खाता जमा होता रहेगा तो आत्मा को प्रसन्नता अवश्य होगी और वह सम्पूर्णता की ओर बढ़ती रहेगी।

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की स्थिति और उसका प्रभाव - अन्य आत्माओं पर, प्रकृति पर

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और आत्माओं का परस्पर व्यवहार

सम्पूर्णता की स्थिति और उस स्थिति का प्रभाव जीवात्मा की स्थिति पर उसका क्या होता है ?

सम्पूर्णता अर्थात् पावन आत्मा का प्रभाव अन्य आत्माओं और प्रकृति पर भी पड़ता है। सम्पूर्ण आत्मा की स्थिति इच्छा मात्रम् अविद्या की होती है और जिसकी अपनी कोई इच्छा नहीं, उसकी किसी आत्मा से कोई इच्छा-आपेक्षा नहीं होगी, इसलिए उसकी सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके फलस्वरूप अन्य आत्माओं की भी उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना होती है। प्रकृति भी दासी बनकर उसकी सहयोगी रहती है। सम्पूर्णता की स्थिति में स्थित प्रसन्नचित्त आत्मा का प्रभाव जड़, जंगम और चेतन तीनों पर पड़ता है और तीनों उसके सहयोगी बनकर रहते हैं। सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की स्थिति वाली आत्मा की कोई अच्छा-आकांक्षा नहीं होती है, इसलिए उसकी किसी आत्मा से कोई अपेक्षा नहीं होती, इसलिए उसका सर्व आत्माओं के प्रति व्यवहार अच्छा होता है और जब उसका व्यवहार अच्छा होता है तो औरों का व्यवहार भी उसके साथ अच्छा होता है। जब एक-दूसरे के साथ व्यवहार अच्छा होता है तो दोनों ही खुश होती हैं। सदा काल की प्रसन्नता के लिए आत्मा को तन, मन, धन के साथ जन का भी अच्छा सहयोग चाहिए।

''सारे विश्व में समय प्रति समय होलीएस्ट आत्मायें आती रही हैं। आप भी होलीएस्ट हो लेकिन आप श्रेष्ठ आत्मायें प्रकृतिजीत बन, प्रकृति को भी सतोप्रधान बना देती हो। आपकी पवित्रता की पॉवर प्रकृति को भी सतोप्रधान पवित्र बना देती है। इसलिए आप सभी आत्मायें प्रकृति का यह शरीर भी पवित्र प्राप्त करती हो। आपकी पवित्रता की शक्ति विश्व के जड़, चेतन, सर्व को पवित्र बना देती है।''

अ.बापदादा 11.11.2000

Q. सम्पूर्णता की स्थिति में स्थित आत्मा का अन्य आत्माओं के प्रति कैसा व्यवहार होगा और अन्य आत्माओं का उसके प्रति कैसा व्यवहार होगा ?

''स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन है या अन्य के परिवर्तन से स्व-परिवर्तन है।... खज़ानों को स्वयं प्रति भी कार्य में लगाओ और दूसरों को भी गुण-दान, ज्ञान-दान, शक्तियों का दान करो। अगर कोई निर्बल है तो शक्ति देकर उसको भी सम्पन्न बनाओ। इसको कहा जाता है भरपूर आत्मा।''

अ.बापदादा 30.11.92

''संकल्प शक्ति को जमा करना है, व्यर्थ नहीं गंवाना है। व्यर्थ गंवाने का मुख्य कारण है - व्यर्थ संकल्प। ... जैसे स्थूल धन को एकॉनामी से यूज़ करने वाले सदा ही सम्पन्न रहते हैं और व्यर्थ गंवाने वाले कहाँ न कहाँ धोखा खा लेते हैं। ऐसे ही ये श्रेष्ठ शुद्ध संकल्प में इतनी ताक़त है। इससे आपकी कैचिंग पॉवर बढ़ जाती है।''

अ.बापदादा 15.12.99

''एक है दिमाग़ तक तीर लगना और दूसरा है दिल पर तीर लगना। अगर सेवा की और स्व की सन्तुष्टता नहीं ... दिल माने कि स्व की और सर्व की भी सेवा की। दूसरी बात ... सेवा की और स्वीकार किया कि 'मैंने किया' अर्थात् सेवा का फल खा लिया, जमा नहीं हुआ।''

अ.बापदादा 31.12.2000

यह खेल याद रखना कि कहाँ भी आंख झुके नहीं, बस बाबा नयनों में हो। तो बेदाग़ हीरा बनना है, आशाओं का दीपक सदा एकरस रखना है और नयनों में एक बाबा को बसाना है - यही बाबा का बच्चों प्रति सन्देश है।

अ.बापदादा 21.7.99 सन्देश

''बाप समान बनना है, अपने इस लक्ष्य के स्वमान में रहो और सम्मान देना अर्थात् सम्मान लेना। सम्मान मांगने से नहीं मिलेगा लेकिन देना अर्थात् लेना। ... ब्राह्मण जीवन का स्वमान, श्रेष्ठ आत्मा का स्वमान - सम्पन्नता का स्वमान है।''

अ.बापदादा 25.11.2000

''कोई भी सेवा करते हो चाहे देश में चाहे विदेश में तो बापदादा यही कहते हैं कि पहले एकमत, एक बल, एक भरोसा और एकता साथियों, वायुमण्डल में हो। ... पहले इन चार बातों की रिबन काटो और फिर सर्व के सन्तुष्टता, प्रसन्नता का नारियल तोड़ो। ... सेवा सब करते हैं लेकिन नम्बर बापदादा के पास रजिस्टर में नोट उसका होता है, जो निविघ्न सेवाधारी है।''

अ.बापदादा 19.3.2000 डबल विदेशी

''बापदादा भाषण करने वाला उसको कहता है, जो पहले भासना दे, फिर भाषण करे। भाषण तो आजकल स्कूल-कॉलेज के लड़के-लड़कियां भी बहुत अच्छा करते, तालियां बजती रहती हैं लेकिन बापदादा के पास लिस्ट वह है, जो निविघ्न सबकी सन्तुष्टता, प्रसन्नता वाले हों।''

अ.बापदादा 19.3.2000 डबल विदेशी

''बापदादा सदा ही बच्चों को सम्पन्न स्वरूप में देखने चाहते हैं। ... ब्राह्मणों के जीवन में मैजारिटी विघ्न रूप बनता है - संस्कार। चाहे अपना संस्कार, चाहे दूसरों का संस्कार।... इसके लिए दो बातों का अटेन्शन रखो। एक - सच्ची दिल और दूसरा - बुद्धि की लाइन

क्लीयर हो। ... सच्ची दिल पर साहेब राज़ी।''

अ.बापदादा 30.3.2000

''बेहद का बाप है तो प्राप्ति भी बेहद की करायेगा ना। ... हर कर्म में यह रुहानी नशा अनुभव होना चाहिए। स्वयं को भी और औरों को भी अनुभव हो। ... आप सबके सम्बन्ध-सम्पर्क में अनुभव करें कि ये अलौकिक आत्मायें हैं, भरपूर आत्मायें हैं।''

अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 6

ज्ञान को सुनना, समझना, अनुभव करना, धारण करना, उसका सुख अनुभव करना - ऐसी धारणा करने वाला कभी दुखी नहीं हो सकता।

दादी जानकी 25.10.07 ओम् शान्ति भवन

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता की स्थिति वाली आत्मा का न कोई अपना होता है, न पराया; उसका न कोई मित्र होता है, न कोई शत्रु होता है; उसके सब अपने हैं परन्तु कोई विशेष अपना नहीं होता है, इसलिए उसके सबका व्यवहा अच्छा होता है और उसका सर्व के साथ अच्छा व्यवहार होता है, इसलिए वह सदा खुश रहता है।

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता वाला कब अपने शत्रुओं के पतन में या उनको दुखी देखकर खुश नहीं होगा। वास्तव में तो हमारा कोई शत्रु है ही नहीं, जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है। इसलिए वह किसी भी दुखी आत्मा को देखकर उसके दुख को दूर करने का पुरुषार्थ अवश्य करेगा। जो स्वयं में खाली होता है, वही दूसरों को शत्रु-मित्र की दृष्टि से देखता है और शत्रु या पराये के दुख में या उनके पतन में खुश होता है।

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता, ब्रह्मचर्य और दैवी गुण

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा

अपने पार्ट के समय अनुसार सभी आत्मायें सम्पूर्णता को पायेंगी और सम्पूर्ण पवित्र बनकर ही घर वापस जायेंगी। जो आत्मायें अपने पुरुषार्थ से सम्पूर्णता और पवित्रता को प्राप्त करती हैं, वे संगमयुग के परम सुख को अनुभव करती हैं और जो आत्मायें अपने पुरुषार्थ से पवित्र नहीं बनती हैं, वे अन्त में विनाश के समय सजायें भोगकर अपने पाप कर्मों का पश्चाताप करके पावन बनेंगी और सम्पूर्ण पवित्र बनकर ही घर वापस जायेंगी। इस प्रकार हम देखें तो सम्पूर्णता और पवित्रता तो आत्मायें अपने पुरुषार्थ और पश्चाताप दोनों से प्राप्त कर सकती हैं परन्तु दैवी गुणों की धारणा के लिए आत्माओं को पुरुषार्थ करना ही होगा। जो आत्मायें पुरुषार्थ करके सम्पूर्णता, पवित्रता को पायेंगी और दैवी गुणों को धारण करेंगी, वे संगमयुग के परम-सुख अर्थात् परमानन्द को अनुभव करेंगी और भविष्य में दैव-पद पाकर अनन्त भौतिक सुखों का उपभोग करेंगी। दैवी गुणों की धारणा सजायें खाकर, विनाश के समय पश्चाताप करके नहीं हो सकती। दैवी-गुणों की धारणा के लिए पुरुषार्थ अवश्य करना होता है, उसके लिए ही बाबा ज्ञान दे रहा है, पढ़ाई पढ़ा रहा है और अनेक प्रकार से शिक्षा-सावधानी देकर पुरुषार्थ करा रहा है। जो जितना दैवी गुणों की धारणा करता है, वह उस अनुसार दैव-पद पाता है। विश्व-नाटक का अटल सिद्धान्त है कि जो करेगा सो पायेगा।

''अगर राज्य-भाग्य बहुत काल का लेना है तो स्व-परिवर्तन भी बहुत काल का चाहिए। अभी से स्व-परिवर्तन का संस्कार नेचुरल बनाओ। ... ब्रह्मा बाप ने अपना संस्कार क्या बनाया, जो साकार शरीर के अन्त में भी याद दिलाया - निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी। ... तो ये श्रेष्ठ संस्कार सदा सामने रखो। ... समय के पहले अपने को सम्पन्न बनाना है।''

अ.बापदादा 12.11.92 ग्रुप 3

ज्ञान-गुण-शक्तियां की सम्पूर्णता ही आत्मा की सम्पूर्णता का दर्पण है अर्थात् ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा से ही आत्मा की सम्पूर्णता का आभास होता है। ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा के लिए ज्ञान का चिन्तन और अभ्यास आवश्यक है। इसलिए ही ज्ञान सागर परमात्मा पिता ने आकर हमको ये सब ज्ञान दिया है, जिससे हम सम्पूर्ण बनें और सम्पूर्ण बनकर घर वापस जा सकें। जिसके जीवन में ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा होती है, उसके जीवन में सदा सम्पन्नता-सन्तुष्टता और प्रसन्नता रहती है।

''आपका यादगार है विघ्न-विनाशक। ... विघ्न-विनाशक वही बन सकता है, जो सदा सर्व शक्तियों से सम्पन्न होगा। ... मास्टर सर्वशक्तिवान कहलाते हो तो सर्व शक्तियाँ मेरा वर्सा है। यह खुशी रहती है ना।''

अ.बापदादा 3.11.92 ग्रुप 4

''आज बापदादा ने विशेष सभी बच्चों का जमा का खाता देखा। पुरुषार्थ तो सभी ने किया लेकिन योग से, सेवा से और सम्बन्ध-सम्पर्क में स्वयं की और सर्व की सन्तुष्टता से अर्थात् तीनों बातों में जमा का खाता कितना हुआ ?''

अ.बापदादा 31.12.2000

''सेवा तो सब कर रहे हैं और अपने को बिज़ी रखने का पुरुषार्थ भी अच्छा कर रहे हैं। सेवा का बल भी मिलता है और फल भी मिलता है। बल है स्वयं के दिल की सन्तुष्टता और फल है सर्व की सन्तुष्टता। ... अच्छा-अच्छा कहकर चले जायें, ऐसे नहीं लेकिन उनकी दिल में सन्तुष्टता की लहर अनुभव हो।''

अ.बापदादा 31.12.2000

''समय फास्ट जा रहा है। ... अतीन्द्रिय सुख साधनों के आधार पर नहीं है। ... सर्व सम्पत्ति है ? गुण, शक्तियाँ, ज्ञान - यह सम्पत्ति है। उसकी निशानी क्या होगी ? अगर मैं सम्पत्ति में सम्पन्न हूँ तो उसकी निशानी क्या ? सन्तुष्टता। ... अभी के संस्कारों के आधार पर ही भविष्य का संसार बनेगा। ... यह चेकिंग एक दर्पण है, इस दर्पण से अपने वर्तमान और भविष्य को देखो।''

अ.बापदादा 05.3.04

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और पवित्रता / सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और सतोप्रधानता

पवित्रता और सम्पूर्णता वास्तव में दोनों शब्द एक ही स्थिति के पर्यायवाची हैं। हर आत्मा सम्पूर्ण पवित्र बनकर ही घर वापस जाती है और वही उसकी सम्पूर्णता की स्थिति है, जो सम्पन्न है, जिसमें आत्मा सन्तुष्टता का अनुभव करती है और जहाँ सन्तुष्टता है, वहाँ प्रसन्नता होगी ही। पावन तो सर्व आत्मायें बनती हैं, पावन बनकर ही घर वापस जा सकती हैं परन्तु ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा में नम्बरवार होती हैं अर्थात् सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की स्थिति की डिग्री नम्बरवार होती है, जो हर एक के पार्ट के समय अनुसार होती है।

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता आत्मा की मंजिल है, जिसकी आधार-शिला परमात्मा की प्राप्ति, ईश्वरीय ज्ञान और ब्रह्मचर्य है अर्थात् सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता रूपी मंजिल की यात्रा परमात्मा की प्राप्ति, उनसे प्राप्त ज्ञान और ब्रह्मचर्य की धारणा के संकल्प से आरम्भ होता है और यात्रा करते-करते अपनी मंजिल तक जाता है। इसलिए परमात्मा ने इसको रुहानी यात्रा की सज्ञा दी है। जैसे बिना आधार-शिला के कोई भवन नहीं बन सकता है, वैसे ही परमात्मा की याद, उनसे प्राप्त ईश्वरीय ज्ञान और ब्रह्मचर्य की धारणा के बिना सम्पूर्णता रूपी भवन का निर्माण नहीं हो सकता है। कहीं-कहीं परमात्मा ने ब्रह्मचर्य को भी पवित्रता की संज्ञा दी है और कहीं-कहीं पवित्रता को ब्रह्माचारी कहा है और कहीं-कहीं कहा है - पवित्रता सिर्फ विकार में न जाने को नहीं कहा जाता है लेकिन पवित्रता अर्थात ब्रह्मचारी अर्थात् ब्रह्मलोक जैसी स्थिति। जैसे ब्रह्मलोक में आत्मायें सम्पूर्ण पवित्र रहती हैं, उस स्थिति को धारण करने को सम्पूर्णता अर्थात पवित्रता कहा जाता है और उस स्थिति को धारण करने का पुरुषार्थ करना है।

परमधाम में सभी आत्मायें सतोप्रधान बनकर ही जा सकती हैं परन्तु हर एक में ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा अर्थात् सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की स्थिति नम्बरवार होती है, जो हर एक के पार्ट के समय अनुसार होती है। सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की स्थिति वाली आत्मा सदा आत्मिक स्थिति ह्योगी, आत्मिक स्मृति होगी और आत्मिक दृष्टि-वृत्ति होगी। जिसके लिए बाबा ने कहा है कि उसकी दृष्टि सदा निशान पर अर्थात् आत्मा पर जायेगी, देह पर नहीं।

''बाप कहते हैं - अब मैं आया हूँ तुम्हारी जन्म-जन्मान्तर की पाप की गठरी को उतारने की राय देने, श्रीमत पर चलाने। ... यह है पतित से पावन बनने का मार्ग। ... और कोई मनुष्य मुक्ति-जीवनमुक्ति का मार्ग बता न सके ... देह सहित देह के सर्व धर्म छोड़ निरन्तर मेरे को याद करने का पुरुषार्थ करो।''

सा.बाबा 22.5.08 रिवा.

''सम्पूर्ण पवित्रता की परिभाषा बहुत श्रेष्ठ है और सहज भी है। सम्पूर्ण पवित्रता का अर्थ ही है - स्वप्न मात्र भी अपवित्रता मन और बुद्धि को टच नहीं करे। ... हिम्मत बच्चों की और मदद सर्वशक्तिवान बाप की, इसलिए मुश्किल वा असम्भव भी सम्भव हो गया है।''

अ.बापदादा 7.3.93

''सबसे अविनाशी रंग है - बाप के संग का रंग। जैसा संग होता है, वैसा रंग लगता है।... बाप के संग का रंग जितना पक्का लगता है, उतना ही होली बन जाते हो, सम्पूर्ण पवित्र बन

जाते हो।''

अ.बापदादा 7.3.93

''ब्राह्मणों के लिए पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं लेकिन पांचो ही विकारों पर विजय हो, उसको कहते हैं पवित्रता का व्रत। ... तो पवित्रता का व्रत अर्थात् सम्पूर्ण पवित्रता का व्रत। ... तो सम्पूर्ण पवित्रता अर्थात् रोशनी अर्थात् लाइट और माइट स्वरूप।''

अ.बापदादा 18.2.93

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता एवं स्थापना का सम्बन्ध / सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता एवं विनाश का सम्बन्ध

परमात्मा सदा सम्पूर्ण है, वही आकर आत्माओं को सम्पूर्ण बनाता है और जब आत्मायें सम्पूर्ण बनती हैं तो जीवन में सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव करती हैं। हम कहाँ तक सम्पूर्ण बने हैं, वह हम अपनी सन्तुष्टता-प्रसन्नता से देख सकते हैं। जब आत्मायें सम्पूर्ण बनेंगी अर्थात् स्थापना का कार्य पूरा होता है तो पुरानी दुनिया का विनाश भी शुरू हो जायेगा। बाबा ने यह भी कहा है कि सतयुग की आदि की जनसंख्या 9,16,108 होगी और आदि में उन सभी की स्थिति सम्पूर्ण-सम्पन्न-सन्तुष्ट होगी तथा वह आदि का समय भी कल्प के हिसाब सम्पूर्णता का होगा। उसके बाद तो पहले वाली आत्माओं में अपूर्णता आती जायेगी और नई आने वाली आत्मायें अपनी सम्पूर्णता की स्थिति में आयेंगी, इसलिए दोनों के अनुभवों में अन्तर अवश्य होगा।

इस प्रकार हम देखें तो हमारी सम्पूर्णता से स्वर्ग अर्थात् नई दुनिया की स्थापना की सम्पूर्णता होगी और नई दुनिया की सम्पूर्णता से पुरानी दुनिया के विनाश का सम्बन्ध है। स्थापना पूरी होगी तो विनाश आरम्भ होगा और विनाश होता तो सभी आत्मायें अपने-अपने पार्ट के अनुसार सम्पूर्णता को अवश्य प्राप्त हो जायेंगी क्योंकि सभी आत्मायें सम्पूर्ण होकर ही घर परमधाम में वापस जायेंगी तथा अभी विनाश के समय प्राप्त हुई सम्पूर्णता के आधार पर ही नये कल्प में आकर जन्म लेंगी और सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव करेंगी। विनाश से जड़ प्रकृति भी सम्पूर्ण और सम्पन्न बन जाती है अर्थात् अपने सतोप्रधान स्वरूप में आ जाती है।

''आपने संकल्प किया था कि बाबा जायेंगे तो हम भी साथ जायेंगे, फिर ऐसा क्यों नहीं किया?... छोड़ सकते हो? अभी छूट भी नहीं सकता है क्योंकि जब तक हिसाब-किताब है, अपने शरीर से, तब तक छूट नहीं सकता। योग से या भोग से हिसाब-किताब चुक्तू जरूर

करना पड़ता है।''

अ.बापदादा 25.1.69

''कोई कहते हैं जल्दी विनाश हो तो हम स्वर्ग में चलें। परन्तु अभी तो बाप से बहुत खज़ाना लेना है। अभी राजधानी कहाँ बनी है, फिर जल्दी विनाश कैसे करायेंगे। बच्चे अभी लायक कहाँ बने हैं, अभी तो बाप पढ़ाने के लिए आते रहते हैं।''

सा.बाबा 7.1.08 रिवा.

''जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं तो धरती की उथल-पाथल भी होती है। सोने-हीरे के महल सब नीचे चले जाते हैं। ... अभी इसका विनाश होना है। तुम देखेंगे अर्थक्वेक आदि होती रहेगी। ... राजाई स्थापन होगी और विनाश आरम्भ होगा। अन्त में तुम बहुत मज़े देखेंगे, आदि से भी जास्ती।''

सा.बाबा 21.12.07 रिवा.

मम्मा मुस्कराती रही। फिर मैंने बाबा से पूछा, बाबा आखिर पर्दा कब खुलेगा ? तो बाबा ने मुझसे पूछा कि आपकी सम्पूर्णता का पर्दा कब खुलेगा ? आप सब सम्पूर्णता के समीप पहुँचे हो, सेवा का कार्य पूरा हो गया है ? तो मैं चुप हो गई। फिर बाबा ने कहा - बच्ची, बाबा तो बार-बार बच्चों को इशारा देता रहता है कि सारा मदार बच्चों के पुरुषार्थ पर है। जितना जल्दी बच्चे सम्पन्न और सम्पूर्ण बनेंगे, उतना जल्दी यह पार्ट खुलेगा।

अव्यक्त बापदादा का सन्देश 24.6.2000

प्रकृति तो आपके ऑर्डर का इन्तजार कर रही है कि आप सम्पन्न बनकर आर्डर करो तो वह अपना कार्य आरम्भ करे। ... जितना बच्चे सम्पन्न और सम्पूर्ण प्रत्यक्ष होंगे, उतना दुनिया परिवर्तन की ओर जायेगी। स्व-परिवर्तन से ही विश्व-परिवर्तन का कार्य होना है।

अव्यक्त बापदादा का सन्देश 24.6.2000

''सदा संगमयुग की मौज मनाओ लेकिन रहो एवर-रेडी क्योंकि फाइनल विनाश की डेट कभी भी पहले से मालूम नहीं होगी, अचानक होना है। एवर-रेडी नहीं होंगे तो धोखा हो जायेगा। ... जैसे बाप सम्पन्न है, वैसे साथ रहने वाले भी सम्पन्न हो जायेंगे। जब सदा साथ का अनुभव करेंगे तो निरन्तर योगी सहज बन जायेंगे।''

अ.बापदादा 9.1.93 पार्टी 5

''जब तक विनाश हो तब तक पुरुषार्थ चलना ही है। किसकी भी ताक़त नहीं जो कहे कि मैं 16 कला सम्पूर्ण बन गया हूँ। बन ही नहीं सकते। वह अवस्था होगी अन्त में। ... इस समय कोई कर्मातीत बन जाये तो शरीर छोड़ना पड़े। ... ब्राइडग्रूम से पहले ब्राइड्स मूलवतन में जा न सकें।''

सा.बाबा 25.9.07 रिवा.

''एडवान्स पार्टी वाले भी अपने-अपने पुरुषार्थ की प्रालब्ध प्रमाण भिन्न-भिन्न पार्ट बजा रहे हैं। ... वे भी आप लोगों का आवाह्न कर रहे हैं कि सम्पूर्ण बन दिव्य जन्म द्वारा नई सृष्टि के निमित्त बनो। उनमें दिव्यता है, पवित्रता है, परमात्म-लगन है लेकिन ज्ञान क्लीयर इमर्ज नहीं है। यह स्मृति नहीं है कि हम संगमयुग से आये हैं। अगर ज्ञान इमर्ज हो जाये तो सभी भागकर मधुवन में आ जायें। ... ज्ञान की शक्ति है, शक्ति कम नहीं हुई है। ... महसूस करते हैं कि हमारा पूर्व जन्म और पुनर्जन्म महान रहा है और रहेगा।''

अ.बापदादा 19.3.2000

मैंने बाबा को कहा - दादी तो कहती है कि अभी बाबा बताये कि कितनी आत्मायें ऊपर हैं, बाबा सबको नीचे भेजे तो परमधाम का गेट खुले और हम सब जायें। तो बाबा ने कहा - अभी तो कितने ऐसे स्थान हैं, जहाँ पर बाबा का सन्देश गया ही नहीं है। अनेक आत्माओं को बाप का सन्देश ही नहीं मिला। अ.बापदादा 24.6.99 सन्देश

''बापदादा यह सेरीमनी देखने चाहते हैं - हर एक ब्राह्मण बच्चे के दिल में सम्पन्नता और सम्पूर्णता का झण्डा लहराया हुआ दिखाई दे। जब हर ब्राह्मण के अन्दर सम्पूर्णता का झण्डा लहरायेगा तब ही विश्व में बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेगा।''

अ.बापदादा 11.11.2000

ये तो सभी चाहते हैं कि बस अभी-अभी बाबा की प्रत्यक्षता हो जाये लेकिन पहले ब्राह्मणों में सम्पन्नता की प्रत्यक्षता हो तब तो बाप की प्रत्यक्षता हो। नई दुनिया के हीरो एक्टर्स और साथी तैयार हों, तब तो बाप प्रत्यक्ष हो और समाप्ति की सेरीमनी हो। तो अभी सभी को जल्दी-जल्दी तैयार करो। ... अपने में सम्पन्नता की प्रत्यक्षता लाओ।

अव्यक्त बापदादा का सन्देश 9.10.2000

''बहुत ऐसे हैं जो इन्तजार बहुत करते हैं लेकिन इन्तजाम को भूल जाते हैं। ... इन्तजार को निकाल इन्तजाम में लग जायेंगे तो 75 परसेन्ट रिजल्ट सहज हो जायेगी। ... जो हैं, जैसे हैं, जो भी सामने हैं, वैसी ही हालतों में इस ही शरीर में हमको सम्पूर्ण बनना है, यह लक्ष्य रखना है।'' अ.बापदादा 17.4.69

Q. आत्माओं की सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और विश्व की सम्पूर्णता से क्या सम्बन्ध है?

जब आत्मायें सम्पूर्ण-सम्पन्न-सन्तुष्ट-प्रसन्न होंगी तो उनके लिए विश्व अर्थात् प्रकृति भी सम्पूर्ण अवश्य होगी अर्थात् जब आत्मायें सम्पूर्ण पावन बन जायेंगी तो विनाश भी अवश्य होगा। जड़ प्रकृति का आधार चेतन आत्माओं पर है क्योंकि जड़ प्रकृति तो चेतन आत्माओं को सुख देने

के लिए साधन है। परन्तु ये सत्य भी बुद्धि में अवश्य रखना है कि जब आत्मायें अपने मूल गुणों को छोड़कर पतित हो जाती हैं और विकारों के वशीभूत विकर्म करती हैं तो यही प्रकृति उनको उनके कर्मों के अनुसार दुख का कारण भी बनती है अर्थात् उनको उनके कर्मों का फल देने के निमित्त बनती है।

''अभी यह साइलेन्स की शक्ति ही विश्व परिवर्तन करेगी। यह चारों ओर की हलचल मिटाने वाले कौन हैं? जानते हो ना! सिवाए परमात्म पालना के अधिकारी आत्माओं के और कोई नहीं कर सकता। तो आप सभी को यह उमंग-उत्साह है कि हम ब्राह्मण आत्मायें ही बापदादा के साथ भी हैं और परिवर्तन के कार्य के साथी भी हैं।'' अ.बापदादा 18.2.08

''बाप ज्ञान का सागर है। वह सदा भरपूर है। थोड़े से ज्ञान रतन दे देते हैं, जिससे सारी सृष्टि सद्गति को पाती है। ... अब तुम बच्चे जानते हो बाप हमको यह ज्ञान स्नान कराये, ऐसा सुन्दर शोभनीक ज्ञान परी बनाते हैं।'' सा.बाबा 23.2.08 रिवा.

''तुम जानते हो हम ज्ञान से कैसे पारसबुद्धि बनते हैं। जब तुम पारसबुद्धि बन जायेंगे तब यह दुनिया भी पत्थरपुरी से बदल पारसपुरी बन जायेगी, जिसके लिए बाबा पुरुषार्थ कराते रहते हैं।'' सा.बाबा 8.1.08 रिवा.

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और अहंकार-हीनता / सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और विभिन्न प्राप्तियां

सम्पूर्णता को प्राप्त हुई आत्मा सर्व प्राप्तियों से भरपूर होती है। उसको दुनिया की कोई भी प्राप्ति आकर्षित नहीं कर सकती है। इसीलिए गाया हुआ है - गोधन, गजधन, बाजिधन और रतन धन खानि, जो आवे सन्तोष धन सब धन धूरि समान। सन्तोष धन का आधार ईश्वरीय ज्ञान है, जो बाबा ने अभी हमको दिया है। जो आत्मा उसके महत्व को जानता है, वह कभी भी किसी वस्तु या व्यक्ति से प्रभावित नहीं होता है। जो सम्पूर्णता को प्राप्त होता है, वह कभी अहंकार और हीनता में नहीं आ सकता है क्योंकि वह ज्ञान से भरपूर होता है, ज्ञान की सर्व प्वाइन्ट् का अनुभवी होता है, जीवन में ज्ञान की यथार्थ रीति धारणा होती है। सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता वाले में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशानति, इर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा आदि हो नहीं सकती और जिसमें ये सब नहीं है, तो उसमें अहंकार-हीनता कैसे आ सकती है।

विश्व-नाटक के ज्ञान को जानने वाली भरपूर आत्मा में अहंकार-हीनता कभी हो नहीं सकती क्योंकि उसको ज्ञान है कि सभी आत्मायें एक परमात्मा की सन्तान हैं और सभी इस विश्व-नाटक में पार्टधारी हैं। उसके वह कभी भी अशुभ भविष्य की कल्पना करके आशंकित नहीं होता है क्योंकि वह वर्तमान में सदा शुभ कर्म में प्रवृत्त होता है और जो वर्तमान में शुभ कर्म में प्रवृत्त है, उसका भविष्य अशुभ हो नहीं सकता। अहंकार और हीनता के वशीभूत आत्मा कभी शुभ कर्म कर नहीं सकती, इसलिए उससे सदा ही अशुभ कर्म होते हैं, जिससे वह सदा ही अपूर्णता-असम्पन्नता-असन्तुष्टता और अप्रसन्नता की ओर जाता है क्योंकि अहंकार-हीनता के वशीभूत संकल्प-विकल्पों के कारण आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है।

अपनी प्राप्तियों के मूल्य को अधिक समझना और दूसरे की प्राप्तियों के मूल्य को कम देखने वाले में अहंकार आता है तथा अपनी प्राप्तियों के मूल्य को कम समझना और दूसरे की प्राप्तियों के मूल्य को अधिक समझने वाले में हीनता आती है। इन सब स्थूल प्राप्तियों का आधार ईश्वरीय प्राप्तियां हैं, जो परमात्मा पिता से सबको समान मिली हुई हैं। इसलिए ईश्वरीय प्राप्तियों से सम्पन्न आत्मा में अहंकार-हीनता नहीं हो सकती है।

''समर्थ बाप ने हर एक बच्चे को सर्व समर्थियों का खज़ाना अर्थात् सर्व शक्तियों का खज़ाना ब्राह्मण जन्म होते ही जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में दे दिया है ... सेकेण्ड में स्मृति दिलाई और स्मृति ही सर्व समर्थियों की चाबी बन गई। ... मेरा बाबा माना और सर्व जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त हुआ।''

अ.बापदादा 18.1.93

''ऐसे ही पुरुषार्थ में सदा स्नेह में खोये हुए रहो, लवलीन रहो। तो सहज साधन है स्नेह, दिल का स्नेह। बाप के परिचय की स्मृति सहित स्नेह, बाप की प्राप्तियों के स्नेह सम्पन्न स्नेह। स्नेह बहुत सहज साधन है क्योंकि स्नेही आत्मा मेहनत से बच जाती है।''

अ.बापदादा 18.1.08

Q. एक साधारण आत्मा, राजा और परमपिता परमात्मा की सम्पूर्णता में क्या समानता है, जिसके कारण साधारण आत्मा और राजा में अहंकार और हीनता का बीज अंकुरित नहीं हो सकता क्योंकि अहंकार और हीनता दोनों नहीं होंगे तब ही आत्मा सच्ची प्रसन्नता का अनुभव कर सकेगी ?

आत्मा और परमात्मा एक ही वंश के हैं, इसलिए आत्मिक स्वरूप परमपिता परमात्मा के समान ही ज्ञान-गुण-शक्तियों से सम्पन्न और सम्पूर्ण है, इसलिए जब आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है तो अपने को परमात्मा के समान ही ज्ञान-गुण-शक्तियों से सम्पन्न और

सम्पूर्ण अनुभव करती है। इसलिए ही बाबा कहते - मैं तुमको अपने समान बनाता हूँ। परमात्मा इस विश्व-नाटक का जो ज्ञान हमको देता है, उस ज्ञान की धारणा कर जो आत्मा एक एक्टर के समान इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाती है और साक्षी होकर इसको देखती है, वह सदा सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव करती है। उस स्थिति में राजा और साधारण आत्मा दोनों अपने को एक समान अनुभव करते हैं क्योंकि दोनों अपने को पार्टधारी समझते हैं और एक ही वंश के अर्थात् ईश्वरीय सन्तान अनुभव करते हैं। जहाँ समानता है, वहाँ अहंकार और हीनता का प्रश्न ही नहीं उठता है।

आत्मिक स्वरूप में राजा-प्रजा, साधारण आत्मा का कोई प्रश्न नहीं है। ये प्रश्न तो तब उठता है, जब यहाँ पार्ट बजाते हैं। इसलिए पार्ट बजाते भी जो आत्मा अपने मूल स्वरूप की स्मृति में होगी, तो उसके सामने अहंकार-हीनता दोनों हो नहीं सकते क्योंकि आत्मिक स्वरूप अहंकार और हीनता दोनों से मुक्त है। आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा अपने को परमात्मा की सन्तान अनुभव करती है और उनके समान सम्पन्न और सम्पूर्ण अनुभव करती है।

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और देह से न्यारी स्थिति

देह में रहते देह से न्यारी स्थिति परमानन्दमय है। सम्पूर्णता को प्राप्त हुई या सम्पूर्णता की स्थिति के निकट पहुँची आत्मा सहज ही देह से न्यारी स्थिति में स्थित हो सकती है या ऐसे कहें कि वह सदा ही देह से न्यारी स्थिति में स्थित रहती है। उसको देह से न्यारा होने में न कोई मेहनत लगती है और न समय लगता है। देह से न्यारा आत्मिक स्वरूप सर्व गुणों और शक्तियों से सम्पन्न है, इसलिए ऐसी स्थिति वाली आत्मा सदा ही सन्तुष्ट और प्रसन्न रहती है। इसलिए बाबा हमको देह से न्यारा होने का अभ्यास कराते हैं। इस अभ्यास से ही हम अपनी सम्पूर्णता को पाते हैं और ये स्थिति ही हमारी सम्पूर्णता की स्थिति का मापदण्ड है।

जैसे विश्व-नाटक में अन्य सब बातें चक्रवत् हैं वैसे ये भी चक्रवत् है अर्थात् देह से न्यारी स्थिति का सफल अभ्यास करेंगे तो आत्मा सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव सहज कर सकेगी और सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की स्थिति में रहेंगे तो देह से न्यारे होने का सहज अभ्यास कर सकेंगे, जो कि आत्मा का निजी स्वरूप है और सम्पन्न और सम्पूर्ण है।

''बिन्दुरूप में स्थित रहने की कमी का कारण है कि पहला पाठ ही कच्चा है। कर्म करते हुए

अपने को अशरीरी आत्मा महसूस करें। यह प्रैक्टिस सारे दिन में बहुत चाहिए। प्रैक्टिकल में न्यारा होकर कर्म में आना - यह जितना-जितना अनुभव करेंगे, उतना ही बिन्दुरूप में स्थित होते जायेंगे। ... विशेष काम समझकर बीच-बीच में समय निकाल कर यह अभ्यास करो।''

अ.बापदादा 23.7.69

''जितना-जितना न्यारा बनेंगे तो बिन्दुरूप तो है ही न्यारा। निराकार भी है तो न्यारा भी है। जब आप निराकारी और न्यारी स्थिति में स्थित होंगे तब ही बिन्दुरूप का अनुभव करेंगे। ... एक सेकेण्ड के अनुभव से कितनी शक्ति अपने में भर सकते हो, वह भी अनुभव करेंगे और ब्रेक देने तथा मोड़ने की शक्ति भी अनुभव करेंगे।''

अ.बापदादा 23.7.69

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और कर्म

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और कर्मतीत स्थिति

ये सृष्टि कर्मक्षेत्र है, जहाँ आत्मायें परमधाम से अपनी कर्मातीत स्थिति से कर्म करने अर्थात् पार्ट बजाने आती हैं और कल्पान्त में जब नाटक पूरा होता है, सारे कल्प के कर्मों का खाता पूरा करके कर्मातीत स्थिति में परमधाम वापस जाती हैं। जब आत्मायें इस धरा पर पार्ट बजाने आती हैं तो उनकी स्थिति सम्पूर्ण होती है इसलिए वे सदा सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की अनुभूति में होती हैं, इसलिए उनमें देहाभिमान नहीं होता है और उनके कर्म बहुत कम होते हैं। उनके कर्मों को अकर्म कहा जाता है अर्थात् उनके कर्म न सुकर्म होते हैं और न ही विकर्म होते हैं क्योंकि उनमें आत्मिक शक्ति होती है। सारे कल्प में आत्मा जो भी कर्म करती है, वह उसकी सथिति को प्रभावित अवश्य करता है और उसके फलस्वरूप आत्मा अपूर्णता अर्थात् असम्पन्नता-असन्तुष्टता-अप्रसन्नता की ओर बढ़ती जाती है और अन्त में पूर्ण रूप से दुखी-अशान्त हो जाती है, तब कल्पान्त में परमात्मा आकर आत्माओं को श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञान देते हैं और श्रेष्ठ कर्म का विधि-विधान बताते हैं, जिससे आत्मायें श्रेष्ठ कर्म करके सम्पूर्णता को पाती हैं और जीवन में सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता को अनुभव करती हैं।

आत्माओं की सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता भी उनके कर्मों को प्रभावित करती है और कर्म का प्रभाव आत्मा की सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता पर पड़ता है। हमको अपनी सम्पूर्णता को पाने के लिए अपने कर्मों पर अवश्य ध्यान देना होगा क्योंकि कर्म ही आत्मा के उत्थान और पतन का आधार है। इसीलिए कहा गया है - कर्म प्रधान विश्व रचि

राखा, जो जस कीन्ह तासु फल चाखा। सम्पूर्णता को प्राप्त कर लेती है, कर्मातीत स्थिति को प्राप्त कर लेती है या उसके निकट पहुँच जाती है, वह सदा सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव करती है, जिससे उसके कर्म सदा ही सुकर्म होते हैं।

''साकार तन द्वारा पढ़ाने का पार्ट था, वह पढ़ाई का कोर्स तो पूरा हुआ। अब पढ़ाई पढ़ाने के लिए नहीं आते हैं। वह कोर्स, उसी तन द्वारा पार्ट पूरा हो चुका है। अभी तो आते हैं मिलने के लिए, बहलाने के लिए। मुख्य बात है अशरीरी बनने की। कर्मातीत बनकर क्या किया ? एक सेकेण्ड में पंछी बन उड़ गया। ... पढ़ाई तो पूरी हुई, बाकी एक कार्य रहा हुआ है, वह है साथ ले जाने का।''

अ.बापदादा 26.6.69

''मम्मा सूक्ष्मवतन में पवित्र फरिश्ता है ना। ... अन्त में जब कर्मातीत अवस्था होगी, तब लाइट दे सकते हैं। परन्तु तुम सम्पूर्ण बनते ही चले जायेंगे सूक्ष्मवतन में। जैसे बुद्ध, क्राइस्ट को दिखाते हैं। पहले-पहले पवित्र आत्मा धर्म स्थापन करने आती है, उनको लाइट दे सकते हैं, ताज नहीं।''

सा.बाबा 7.11.06 रिवा.

''जितना अव्यक्त स्थिति में स्थित होंगे, उतना उस अव्यक्त स्थिति से कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म ऐसा होगा, जैसे श्रीमत राय दे रही है। ... जब तक भविष्य नई दुनिया न बनी है, तब तक यह अटूट स्नेह रहेगा। स्नेह आत्मा के साथ है और कर्तव्य के साथ है। ... जिसका बाप के साथ स्नेह है, वे अन्त तक स्थापना के कार्य में मददगार रहेंगे।''

अ.बापदादा 23.1.69

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता एवं एवर-रेडी स्थिति

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और अचानक की परीक्षा

सम्पूर्णता ही एवर-रेडी स्थिति का आधार है अर्थात् जब आत्मा सम्पूर्णता को प्राप्त कर लेती है तो वह सदा आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है। उसको कुछ सोचने-विचारने की आवश्यकता नहीं होती है। समय पर उसको कृत्य का संकल्प स्वत: आता है और उसकी अकृत्य में अरुचि और कृत्य में अभिरुचि स्वत: होती है। उसके जीवन में राग-द्वेष, भय-चिन्ता का नाम-निशान नहीं होता है, इसलिए वह सदा एवर-रेडी रहती है अर्थात् उसको परमात्मा का जो भी आदेश या श्रीमत मिलती वह उसे सहज और सहर्ष स्वीकार कर उस अनुसार कर्म करने में समर्थ होती है।

जब हम सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की स्थिति में होंगे तब ही एवर-रेडी स्थिति में स्थित हो सकेंगे और अचानक के पेपर में पास हो सकेंगे। बाबा ने कहा है - पेपर अचानक आना है और उसमें एवर-रेडी आत्मा ही पास हो सकेगी। वैसे भी देखा जाये तो दुनिया में प्राय: सभी घटनायें अचानक ही होती हैं।

''अन्त समय बाप भी रहम करना चाहे तो भी नहीं कर सकते। ... अटेन्शन रखना है लेकिन नेचुरल अटेन्शन आदत बन जाये। अटेन्शन का टेन्शन नहीं। ... तो सदैव अलर्ट माना सदा एवर-रेडी। ... विनाश आपका इन्तजार करे, आप विनाश का इन्तजार नहीं करो।''

अ.बापदादा 21.11.92 पार्टी 1

''यह बता देते हैं। आर्डर होगा, पूछकर नहीं, तारीख फिक्स नहीं करेंगे। अचानक आर्डर देंगे कि आ जाओ, बस। आर्डर हुआ और चला - इसको कहा जाता है डबल लाइट फरिश्ता।''

अ.बापदादा 12.12.98

Q. बाबा सदा कहते हैं - सब अचानक होना है अर्थात् विनाश किसी भी समय हो सकता है, शरीर किसी भी समय छूट सकता है, इसलिए सदा एवर-रेडी रहो - एवर-रेडी स्थिति क्या है और कैसी है ?

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की स्थिति में रहना ही एवर-रेडी स्थिति है। आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, इसलिए अपने परमानन्दमय आत्मिक स्वरूप में सदा स्थित रहना ही एवर-रेडी स्थिति है।

विनाशी वस्तु और व्यक्तियों से नष्टोमोहा और अपने अविनाशी आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर अविनाशी परमात्मा की मधुर स्मृति में स्थित रहना ही एवर-रेडी स्थिति है।

इस तमोप्रधान विश्व में किसी भी समय कोई भी परीक्षा आ सकती है, उसका सामना करने और उस पर विजयी बनने के लिए तैयार रहना ही एवर-रेडी स्थिति है।

हम ईश्वरीय सेवा पर हैं, इसलिए हमारे सामने कोई भी आये और जिस आशा से आये, उसको परखकर उसकी आशा पूर्ण करने की स्थिति में सदा स्थित रहना एवर-रेडी स्थिति है।

बाबा ने हमको सारा ज्ञान दिया है, उसकी धारणा स्वरूप बनकर रहना एवर-रेडी स्थिति है, जिससे हम किसी के प्रश्न का समय पर यथोचित उत्तर देकर उसे सन्तुष्ट कर सकें।

सतयुग के आदि में आने के लिए उसके अनुरूप ज्ञान-गुण-शक्तियों से सम्पन्न बनना ही एवर-रेडी स्थिति है।

यथार्थ आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को मृत्यु-भय, मृत्यु-दुख, कर्मभोग प्रभावित नहीं कर सकता, इसलिए उनके प्रभाव से मुक्त रहना एवर-रेडी स्थिति है, इसलिए देह से न्यारा होने का सफल अभ्यास चाहिए, जिसके लिए अव्यक्त बापदादा भी अभ्यास कराते हैं। संकल्प करते ही उस स्थिति में स्थित होने का सफल अभ्यास ही एवर-रेडी स्थिति है।

''ऐसे वृद्धि कर जल्दी-जल्दी सम्पन्न और सम्पूर्ण बन बाप के साथ चल सकेंगे। साथ चलना है - यह भूलना नहीं। बापदादा ने पहले भी कहा है कि प्यार से नहीं चलेंगे तो जबरदस्ती भी ले चलेंगे।''

अ.बापदादा 15.2.2000

''अपनी दादी को देखा हर स्वभाव में, हर कार्य में इज़ी रहे। सम्पर्क में, स्वभाव में, सेवा में, सन्तुष्ट करने और सन्तुष्ट रहने में इज़ी। इसलिए बापदादा समय की समीपता का बार-बार इशारा दे रहा है। स्व-पुरुषार्थ का समय बहुत थोड़ा है।''

अ.बापदादा 15.12.07

''मैजारिटी बच्चे सेवा में एवर-रेडी रहते हैं, हिम्मत भी रखते हैं ... लेकिन अभी बाबा का एक संकल्प, जो बच्चों के कानों तक पहुँचा है लेकिन दिल तक नहीं पहुँचा है। ... हर एक के मन की स्थिति 'सन्तुष्टता और प्रसन्नता' सम्पन्न हो। हर एक के चलन और चेहरे से सन्तुष्टता और प्रसन्नता ही दिखाई दे।''

अव्यक्त बापदादा का सन्देश 18.3.2001

''कुछ भी याद नहीं आये, देह भी अपनी नहीं तो और क्या अपना है।। ... जब संकल्प किया कि सबकुछ तेरा तो एवर-रेडी हो गये ना। सभी ने दृढ़ संकल्प कर लिया है कि मैं बाप की और बाप मेरा। ... समय आप मालिकों का इन्तजार कर रहा है। कम से कम 9 लाख तो तैयार होने चाहिए ना।''

अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 5

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और योग

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता के लिए योग ही एकमात्र आधार है। कल्पान्त में जब सभी आत्मायें तमोप्रधान बन जाती हैं, जिससे जीवन में असम्पूर्णता-असम्पन्नता-असन्तुष्टता-अप्रसन्नता का अनुभव करती हैं और उससे मुक्त होने के लिए परमात्मा को याद करती हैं, तब उनको सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता में जाने के लिए परमात्मा पिता का अवतरण होता है और वे उनको यथार्थ योग का ज्ञान देते हैं और विधि-विधान सिखलाते हैं, तब उस योग के द्वारा आत्मायें जीवन में सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की

अनुभूति करते हैं। द्वापर से जब आत्मायें जीवन में अपूर्णता और दुश-अशान्ति का अनुभव करने लगती हैं, तब परमात्मा के द्वारा सिखायें गये योग की यादगार में भक्ति मार्ग में अनेक प्रकार की योग साधनायें करते हैं परन्तु उस समय योग का यथार्थ ज्ञान न होने आत्मा की चढ़ती कला नहीं होती है अर्थात् आत्मा सम्पूर्णता की ओर न जाकर अपूर्णता की ओर ही जाती है। भक्ति मार्ग की योग साधनाओं के द्वारा आत्मा चढ़ती कला में तो नहीं जाती है परन्तु उस साधना से भी गिरती कला की गति मन्द अवश्य ही होती है। अभी परमात्मा जो यथार्थ योग सिखाते हैं, उससे ही आत्मा सम्पूर्णता को पाती है, जिसके फलस्वरूप सम्पन्नता-सम्पूर्णता और अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है।

''बेहद का राज्य-भाग्य प्राप्त करने वालों को पहले इस समय अपनी देह की हद से परे जाना पड़ेगा। अगर देहभान की हद से निकले तो और सभी हदों से निकल ही जायेंगे ... देह की हद कभी भी उड़ने नहीं देगी। ... सदा यह नशा रखो कि बेहद के बाप के बालक और बेहद के वर्से का मालिक हूँ अर्थात् बालक सो मालिक हूँ।''

अ.बापदादा 17.12.89 पार्टी

''योग का, शक्तियों का, गुणों का प्रयोग करो। ... पहले स्व के प्रति प्रयोग करो। जब स्व के प्रति प्रयोग में सफल हो जायेंगे तो दूसरी आत्माओं के प्रति प्रयोग करना सहज हो जायेगा और जब स्व के प्रति सफलता का अनुभव करेंगे तो आपके दिल में औरों के प्रति प्रयोग करने का उमंग-उत्साह स्वत: ही बढ़ता जायेगा।''

अ.बापदादा 01.2.94

''पहले-पहले तुम यह समझाओ कि ऊंच से ऊंच भगवान एक है, याद भी उनको करना चाहिए। ... भल देवतायें भी मनुष्य हैं परन्तु वे हैं दैवी गुणों वाले, इस समय सब मनुष्य हैं आसुरी गुणों वाले। सतयुग में काम महाशत्रु होता नहीं है। ... उसके लिए एक ही दवाई मिलती है - बाप कहते हैं - अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो जायेंगे और तुम सदा सुखी हो जायेंगे।''

सा.बाबा 7.12.05 रिवा.

योग के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त अनुसार जो जिसको याद करता है, उसके गुण-धर्म याद करने वाले पर अवश्य प्रभावित होते हैं। परमपिता परमात्मा सदा सम्पूर्ण और सम्पन्न है, इसलिए जो उनको याद करता है, वह भी सम्पूर्ण और सम्पन्न बन जाता है और सम्पूर्ण-सम्पन्न बनकर सन्तुष्टता और प्रसन्नता को अनुभव करता है, अतीन्द्रिय सुख को अनुभव करता है। सम्पूर्ण और सम्पूर्ण आत्मा को परमात्मा की याद स्वत: आती है, उसका आकर्षण परमात्मा की ओर अवश्य होता है। अन्त समय उसी आकर्षण के आधार पर

आत्मायें परमधाम जाती हैं।

जितना-जितना हम अपने सम्पूर्ण और सम्पन्न स्वरूप अर्थात् बिन्दुरूप स्थिति अर्थात् बीजरूप स्थिति में स्थित होकर सृष्टि के बीजरूप सम्पूर्णता और सम्पन्नता के सागर बाप के स्वरूप की स्मृति करेंगे, उसका मनन-चिन्तन करेंगे, उतना हमारा आत्मिक शक्ति का खाता जमा होगा और हम भी अपनी सम्पूर्ण और सम्पन्न स्थिति को प्राप्त करेंगे और उस स्थिति में सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव स्वत: होगा।

''बिन्दुरूप की स्थिति में ज्ञान अन्दर मर्ज हो जाता है ... बीज में विस्तार समाया हुआ होता है ना। तो बिन्दुरूप अर्थात् बीजरूप। ... इमर्ज तब होता जब नीचे आते हो। बिन्दुरूप में वह भरपूर अवस्था रहती है। ... यहाँ समाधि की बात नहीं है। उनको ज्ञान कुछ भी नहीं होता है, वह (समाधि) निल अवस्था है परन्तु यह निल नहीं है। यह ज्ञान स्वरूप हो जाना है।''

अ.बापदादा 19.4.69

''अभी वर्तमान समय के हिसाब से मन-बुद्धि को एकाग्र करने का अभ्यास ज्यादा बढ़ाओ ... यह अभ्यास आने वाले समय में बहुत सहयोग देगा। वायुमण्डल के अनुसार एक सेकेण्ड में कन्ट्रोल करना पड़ेगा। जो चाहें, वही हो। तो यह अभ्यास बहुत आवश्यक है, इसको हल्का नहीं करना क्योंकि समय पर यही अन्त सुहानी करेगा।''

अ.बापदादा 2.2.08

''अभी एक सेकेण्ड में सारी सभा जो भी जहाँ हैं, वहाँ मन को एक ही संकल्प में स्थित करो - मैं और बाप परमधाम में अनादि ज्योतिबिन्दु स्वरूप हूँ, परमधाम में बाप के साथ बैठ जाओ। ... अभी वर्तमान समय के हिसाब से मन-बुद्धि को एकाग्र करने का अभ्यास, जो कार्य कर रहे हो, उसी कार्य में एकाग्र करो, कन्ट्रोलिंग पॉवर को ज्यादा बढ़ाओ। मन-बुद्धि, संस्कार तीनों के ऊपर कन्ट्रोलिंग पॉवर।''

अ.बापदादा 2.2.08

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और विचार-सागर मन्थन

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और विचार-सागर मन्थन का गहरा सम्बन्ध है, जिसका शास्त्रों में सागर मन्थन के रूप में यादगार है परन्तु है ये ज्ञान-सागर मन्थन की बात। ज्ञान सागर परमात्मा, वह आकर सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त, कर्म के विधि-विधान आदि का सारा ज्ञान देते हैं और उसको धारण करने का विधि-विधान बताते हैं। जो आत्मायें जितना उन ज्ञान रतनों का मन्थन करके जीवन में धारण करते हैं, वे उतना ही सम्पूर्णता-सम्पन्नता को

पाते हैं और उससे उनके जीवन में उतनी ही सन्तुष्टता-प्रसन्नता आती है। भक्ति मार्ग में सागर मन्थन में असुरों और देवताओं दोनों का सहयोग दिखाया गया है। अभी भी दोनों प्रकार के संस्कार ज्ञान-सागर को मन्थन करने में सहयोगी बनते हैं और आसुरी संस्कारों से ही दैवी संस्कारों की कलम लगती है।

''तुमको कितनी अच्छी नॉलेज मिलती है। ... जिनकी बुद्धि में यह नॉलेज टपकती रहेगी, उनको अपार खुशी होगी। ... तुम कितना मर्तबा पाते हो तो कितनी खुशी होनी चाहिए। हम बेहद के बाप की सन्तान हैं। ... सदैव बुद्धि में यह ज्ञान टपकता रहे तो तुम खुशी में रहेंगे, फिकर से फारिग हो जायेंगे।''

सा.बाबा 3.10.01 रिवा.

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और बाबा की मुरली

बाबा की मुरली ही आत्मा की सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का आधार है। जो आत्मा जितना दिल से बाबा की मुरली का अध्ययन करेगा, उसका चिन्तन करेगा, वह उतना ही ज्ञान-धन से सम्पन्न बनेंगा और जो जितना सम्पन्न बनेगा, वह उतना ही जीवन में सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव करेगा। बाबा ने कहा - बाबा की मुरली से प्यार माना मुरलीधर से प्यार। जिसको जितना मुरली से प्यार होता है, वह उतना ही परमात्मा के प्यार का पात्र बनता है क्योंकि बाबा की मुरली से आत्मा को सम्पूर्ण और सम्पन्न बनने की विधियां मिलती है और सेवा की युक्तियाँ मिलती हैं।

''जिसके पास यह ज्ञान, योग, धारणा और सेवा का खज़ाना होता है, वह सदा भरपूर रहता है।... भरपूर नहीं तो हलचल होती है। ... खुशी कम रहती है तो उसका कारण क्या होता है? बाप ने तो खज़ाने दिये हैं लेकिन एक हैं सुनने वाले, दूसरे हैं समाने वाले। जो समाने वाले हैं, वे सदा नशे में रहते हैं।''

अ.बापदादा 4.9.05

''मुरली है लाठी। इस लाठी के आधार से कोई कमी भी होगी तो वह भर जायेगी। यह आधार ही अपने घर तक और अपने राज्य तक पहुँचायेगा। लेकिन लक्ष्य से, नियमपूर्वक नहीं लेकिन लगन से पढ़ना, धारण करना। मुरलीधर से स्नेह की निशानी मुरली है। जितना मुरली से स्नेह है, उतना ही समझो मुरलीधर से भी स्नेह है। सच्चे ब्राह्मण की परख मुरली से ही होगी।''

अ.बापदादा 23.10.75

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और विश्व-कल्याण

विश्व-कल्याण ब्राह्मण आत्माओं का कर्तव्य है। जब हमारे जीवन में खुशी होगी, हमको नशा चढ़ा हुआ होगा तो हमारे से जो वायब्रेशन प्रवाहित होगा, उससे विश्व-कल्याण अवश्य होगा। जो स्वयं ही अपूर्ण होगा, खाली होगा, असन्तुष्ट और अप्रसन्न होगा वह दूसरों को क्या सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता दे सकेगा। परमात्मा आकर हम आत्माओं को ही सम्पूर्ण-सम्पन्न बनाकर विश्व को सम्पूर्ण और सम्पन्न बनाने की सेवा कराते हैं अर्थात् विश्व-कल्याण का निमित्त बनाते हैं। इसलिए हमारा ये परम कर्तव्य है कि हम अपने जीवन में सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता को अनुभव करें।

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और भारत

विश्व की सम्पूर्णता और सम्पन्नता से भारत का विशेष सम्बन्ध है। भारत ही सम्पूर्णता और सम्पननता के सर्वोच्च शिखर पर होता है। जब नये कल्प में आत्मायें परमधाम से इस धरा पर आती हैं तो भारत में ही आती हैं। उस समय आत्मायें भी अपनी सम्पूर्ण और सम्पन्न स्थिति में होती हैं और विश्व भी अपनी सम्पूर्ण और सम्पन्न स्थिति में होता है। सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता के प्रतिरूप लक्ष्मी-नारायण का राज्य भारत में ही होता है, जिसके लिए गायन है - दैहिक-दैविक-भौतिक तापा, रामराज्य काहू नहिं व्यापा। बाबा कई बार कहते हैं - लक्ष्मी-नारायण के जड़ चित्रों को भी देखो तो वे कितने सम्पन्न ओर प्रसनन दिखाई देते हैं, जिनको देखकर भक्त सम्पननता ओर प्रसन्नता को अल्प काल के लिए अनुभव करते हैं। सच्चे भक्त कब किसी के सामने हाथ नहीं फैलाते हैं, उनकी सर्व मनोकामनायें परमात्मा स्वयं ही पूरी करते हैं। फिर भारत ही सबसे अधिक दुखी-अशान्त बनता है तो सम्पूर्णता और सम्पन्नता के सागर परमात्मा भारत में ही आकर सम्पूर्णता और सम्पन्नता का पाठ पढ़ाकर सन्तुष्ट और प्रसन्न बनाते हैं। जो आत्मायें उस पाठ को पढ़ती हैं, वे ही सच्ची सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव करती हैं।

हम सदा सम्पूर्णता और सम्पन्नता के सागर बाप के डायरेक्ट बच्चे हैं, सम्पूर्णता और सम्पन्नता की आदि भूमि भारत में जन्में हैं - ये नशा और खुशी सदा रहनी चाहिए। ये नशा और खुशी हमको भी सम्पूर्ण और सम्पन्न बनायेगी, बनने में मदद करेगी।

आत्माओं की सम्पूर्णता और सम्पन्नता का भारत भूमि से अति गहरा सम्बन्ध है। कल्प के आदि में भारत ही स्वर्ग बनता है, वहाँ प्रकृति अपने सम्पूर्ण और सम्पन्न स्वरूप में

होती है। आत्माओं को मनवांच्छित फल देती है, जिससे आत्मायें सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव करती हैं। सारे विश्व में भारत भूमि ही सम्पूर्णता और सम्पन्नता को पाती है।

''अभी हम ईश्वरीय गुण वाले बनते हैं। ईश्वर बैठ हमको गुणवान बनाते हैं। बाबा की शिक्षा से हम सर्वगुण सम्पन्न ... बनते हैं। भारत की महिमा है अर्थात् भारत में रहने वालों की महिमा है। ... तुमको बहुत रोशनी मिली है। तुमको बहुत हर्षित रहना है।''

सा.बाबा 17.10.07 रिवा.

''यह जो वर्ल्ड रिपीट होती है, उसकी पूरी नॉलेज चाहिए ना।... यह सारा खेल बना हुआ है। ... भारत कितना गोल्डन एज्ड था, अब फिर इसको आइरन एज्ड से गोल्डन एज में चेन्ज होना है, इसलिए उसकी स्थापना और इसका विनाश होना चाहिए।... भारत कितना धनवान था, प्योरिटी, पीस, प्रास्पेरिटी सब थी।''

सा.बाबा 10.8.07 रिवा.

''यह सारा खेल भी भारत पर ही बना हुआ है। भारत ही पावन और भारत ही पतित बनता है, बाकी सब हैं बाईप्लाट्स। ... सतयुग में अविनाशी खण्ड भारत ही रहेगा और सब खण्ड खत्म हो जायेंगे। उनका नाम-निशान ही गुम हो जाता है। यह नॉलेज अभी ही तुम बच्चों की बुद्धि में है।''

सा.बाबा 29.9.07 रिवा.

''भारत स्वर्ग था, वहाँ लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। लक्ष्मी-नारायण के राज्य को स्वर्ग कहा जाता है। ... देवताओं की महिमा गाते हैं - सर्वगुण सम्पन्न ... ऐसी महिमा और कोई धर्म वाले की नहीं है। कोई भी धर्म वाले अपने इष्टदेव की ऐसी महिमा नहीं गाते हैं।''

सा.बाबा 16.10.07 रिवा.

''देवतायें भी भारत के मनुष्य ही थे, उनके चित्र दिखाये जाते हैं कि ऐसे मनुष्य होकर गये हैं। भारत में लक्ष्मी-नारायण होकर गये हैं। भारत में बहुत मन्दिर बनाते हैं, ऐसे और कोई राजायें आदि नहीं हैं, जिनके मन्दिर बनें हों और मनुष्य उनकी महिमा गाते हों, पूजा करते हों।''

सा.बाबा 17.11.07 रिवा.

''भारत की बड़ी भारी महिमा है। क्रिश्चियन लोगों को भी भारत के लिए रिगार्ड है। ... गीता में अगर नाम न बदलते तो सब जानते कि हम मनुष्यात्माओं के बाप का यह भारत खण्ड जन्म स्थान है।''

सा.बाबा 5.6.08 रिवा.

''यूरोपवासी यादव जानते हैं कि हमने यह जो मूसल आदि बनाये हैं, इनसे जरूर अपने कुल का विनाश करेंगे। महाभारत लड़ाई भी मशहूर है।... योगबल से अभी हम फिर से अपना राज्य ले रहे हैं। सिवाए योगबल के कोई विश्व का मालिक बन नहीं सकता।''

सा.बाबा 5.6.08 रिवा.

''भारत बहुत धनवान था। इतना खज़ाना था, जो बाद में मुसलमानों ने भारत से हीरे-मणियां ले जाकर कब्रों आदि में लगाई हैं। ... अभी यह कब्रस्तान खत्म हो फिर परिस्तान बनना है। सतयुग में भारत में हीरे-जवाहरात की खानियां थी।''

सा.बाबा 5.6.08 रिवा.

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और प्रत्यक्षता

सभी चाहते हैं कि शीघ्रातिशीघ्र बाप की और यज्ञ की प्रत्यक्षता हो जाये और उसके लिए यथायोग्य पुरुषार्थ भी करते हैं परन्तु बाबा ने अनेक बार कहा है जब तुम बच्चे प्रत्यक्ष होंगे, तब बाप प्रत्यक्ष होगा। जब आपके जीवन में खुशी और नशा होगा, तब आपको देखकर लोग समझेंगे कि यह विशेष ज्ञान है। जब आप सब प्रसन्नता में होंगे तो उनको भी हिम्मत आयेगी कि हम भी इस ज्ञान के द्वारा प्रसन्नता और खुशी को प्राप्त करेंगे। जब ज्ञान प्रत्यक्ष होगा तब ज्ञान-दाता प्रत्यक्ष होगा। हमारी सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता ही इस ज्ञान के महत्व को प्रत्यक्ष करेगा और जब ज्ञान प्रत्यक्ष होगा तो ज्ञान-दाता स्वत: ही प्रत्यक्ष होगा अर्थात् लोग उनको पहचान लेंगे।

''जब आपके यह संगम के सम्पूर्ण स्वरूप की प्रत्यक्षता होगी, तब सभी अहो प्रभू का नारा लगायेंगे। ... आप सभी को अव्यक्त स्थिति का झण्डा दूर से देखने में आयेगा। आप सभी की अव्यक्त, एकरस स्थिति का झण्डा सारी दुनिया को लहराता हुआ देखने में आयेगा।''

अ.बापदादा 16.7.69

''सर्व आत्माओं के कल्याणकारी बनने वाले ही विश्व के राज्य अधिकारी बनते हैं। ... सदैव अपने को विजयी रतन समझकर हर संकल्प और कर्म करो। मास्टर सर्वशक्तिमान कभी हार नहीं खा सकते। ... अपने से प्रतिज्ञा करो, प्रयत्न नहीं। अब तो प्रतिज्ञा और सम्पूर्ण रूप की प्रत्यक्षता करनी है।''

अ.बापदादा 3.12.70

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और सेवा

सेवा ब्राह्मण जीवन का मुख्य कर्तव्य है क्योंकि परमात्मा ने हम ब्राह्मण आत्माओं को ज्ञान देकर और अपने संग से हमारे सम्पूर्ण स्वरूप का अनुभव कराकर अतीन्द्रिय सुख का

अनुभव कराया, तो हमारा कर्तव्य है अन्य आत्माओं को वह अनुभव कराना अर्थात् परमात्मा के साथ इस दिव्य कर्तव्य में सहयोगी बनना। इसलिए ब्राह्मण जीवन के चार सब्जेक्ट में सेवा एक मुख्य सब्जेक्ट है। सेवा भी हम आत्माओं को सम्पूर्ण बनने में सहायक होती है। सेवा करना दूसरों को देना नहीं है लेकिन अपने को ज्ञान-गुण-शक्तियों से भरपूर करना है, इसलिए बाबा सदा कहते हैं - सेवा, सेवा नहीं लेकिन मेवा खाना है। सेवा ही आत्मा को भरपूर करती है और शक्तिशाली बनाती है। सेवा से आत्मा को मनन-चिन्तन की प्रेरणा मिलती है, जो ज्ञान-गुण-शक्तियों को धारण करने का आधार है।

''बेहद का वर्सा लेना है तो हद का सब कुछ देना पड़े। परन्तु बाप तो दाता है, वह कब लेते नहीं हैं। शिवबाबा है देने वाला। डायरेक्शन देंगे - ऐसे-ऐसे करो। ... अभी बाप के पास बलि चढ़ने से ही तुम मेरी मत पर चलेंगे।'' सा.बाबा 6.5.08 रिवा.

''चारो ओर के डबल तख्तनशीन, बापदादा के दिल तख्तनशीन, साथ में विश्व-राज्य तख्त-अधिकारी, सदा अपने अनादि स्वरूप, आदि स्वरूप, मध्य स्वरूप, अन्तिम स्वरूप में जब चाहे तब स्थित रहने वाले, सदा सर्व खज़ानों को स्वयं प्रति कार्य में लगाने वाले और औरों को भी खज़ानों से सम्पन्न बनाने वाले सर्व आत्माओं को बाप से मुक्ति का वर्सा दिलाने वाले, ऐसे परमात्म-प्यार के पात्र आत्माओं को बापदादा का यादप्यार, दिल की दुआयें और नमस्ते।''

अ.बापदादा 2.2.08

''अटेन्शन प्लीज। मेहनत मुक्त, सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना। सिर्फ रहना नहीं लेकिन करना भी है। तब ही मेहनत मुक्त रहेंगे। नहीं तो रोज़ कोई न कोई बोझ की बातें, मेहनत की बातें क्या-क्यों की भाषा में आयेंगी।'' अ.बापदादा 18.1.08

''इस वर्ष गुणों की गिफ्ट देना, गुणों की टोली खिलाना, गुणों की पिकनिक करना क्योंकि बाप समान बनने के लिए, समय की समीपता प्रमाण और दादी के इशारे प्रमाण समय की सम्पन्नता अचानक कभी भी होना सम्भव है। इसलिए बाप समान बनना है वा दादी के प्यार का रिटर्न देना है तो आवश्यकता है मन्सा और कर्म द्वारा सहयोगी बनने का।''

अ.बापदादा 31.12.07

''बड़े से बड़ा दान है गुण-दान वा शक्तियों का दान ... निर्बल को शक्तिवान बनाना - यही श्रेष्ठ दान है वा सहयोग है। ... अभी तक लेने वाले हो या दाता के बच्चे देने वाले बने हो ? ... देने में लग जाओ तो लेना स्वत: ही सम्पन्न हो जायेगा। ... जो जितना देते जायेंगे, वे उतना ही सम्पन्नता का अनुभव करते जायेंगे।'' अ.बापदादा 9.1.93

''जिसके पास यह ज्ञान, योग, धारणा, सेवा का खज़ाना जमा है, वह सदा भरपूर रहता है। ... भरपूर नहीं तो हलचल होती है। ... खुशी कम रहती है तो उसका कारण क्या होता है? बाप ने तो खज़ाने दिये हैं लेकिन एक हैं सुनने वाले, दूसरे हैं समाने वाले। जो समाने वाले हैं वे सदा नशे में रहते हैं।''

अ.बापदादा 4.9.05

''रुहानी अनुभूति कराने की विधि है - पहले अपने में चेक करें कि सर्व शक्तियों का स्टॉक जमा है, दूसरी बात - सेकेण्ड में व्यर्थ संकल्प वा किसी के प्रति भी नेगेटिव भाव वा भावना को स्टॉप लगाये परिवर्तन कर सकें। इन दोनों का अभ्यास बार-बार अटेन्शन देकर करना चाहिए।''

अव्यक्त बापदादा का सन्देश 5.3.2001

''अब बीती को बीती कर स्व-परिवर्तन की गति को तीव्र बनाओ, बेहद की स्थिति से सेवा में भी रुहानियत की सेवा बढ़ाओ और अपनी जमा सर्व शक्तियों से शुभ संकल्प द्वारा कमजोर आत्माओं को मन से प्रसन्नता और सन्तुष्टता का सहयोग दो।''

अव्यक्त बापदादा का सन्देश 5.3.2001

''अपने पुरुषार्थ से सन्तुष्ट हो, सम्पूर्ण होने का क्या प्लेन बनाया है? जब अपने को बदलेंगे तब औरों की सर्विस करेंगे। ... स्व-पुरुषार्थ से सन्तुष्ट का, सर्व की सन्तुष्टता का, निमित्त बनी हुई आत्माओं से सनतुष्टता का ... ये सभी सर्टीफिकेट धर्मराजपुरी में काम आयेंगे। ... ट्रिबुनल में भी यही महारथी बैठते हैं।''

अ.बापदादा 21.1.71 पार्टी 2

''जो अपने से सन्तुष्ट होता है, वह दूसरों से भी सन्तुष्ट रहता है।... दूसरे की कमी को अपनी कमी समझकर चलेंगे तो खुद भी सम्पूर्ण बन जायेंगे।... मेरी कमजोरी है, ऐसा समझने से उन्नति जल्दी हो सकती है।''

अ.बापदादा 21.1.71

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और जमा का खाता

अभी संगमयुग है सारे कल्प के लिए खाता जमा करने का समय। जो आत्मायें परमात्मा की श्रीमत पर चलकर ज्ञान-गुण-शक्तियों का जितना खाता जमा करते हैं, उस अनुसार ही सारे कल्प में प्राप्ति करते हैं, सुख का अनुभव करते हैं और उसके अनुसार ही अपने संगमयुगी ब्राह्मणों के कर्तव्य को निभा सकते हैं। परमात्मा ने हमको आत्मिक शक्ति को जमा करने का रास्ता दिखाया है और अनुभव कराया है और साथ ही हमको समय और हमारे कर्तव्य का ज्ञान भी दिया है, उस कर्तव्य को हम सफलता पूर्वक निभा सकें, उसके लिए साधनों का ज्ञान भी दिया है और साधना भी सिखाई है।

''अपना बैंक बैलेन्स भी नोट करना है। ... जमा करने का समय भी नहीं है और अपने जमा के खाते से सन्तुष्ट भी नहीं हो तो फिर क्या होगा ? ... अपनी कमाई से खुद भी सन्तुष्ट न रहेंगे तो औरों को क्या करेंगे। ... ऐसा समय आयेगा जब सभी भिखारी रूप से आप लोगों से यह भीख मांगेगे। ... दाता के बच्चे तो सभी देने वाले ठहरे। जमा होगा तो दे सकेंगे।''

अ.बापदादा 17.7.69

''जब जमा होगा तब तो औरों को भी भीख दे सकेंगे। दाता के बच्चे तो सभी को देने वाले ठहरे। आप सभी की एक सेकेण्ड की दृष्टि के, अमूल्य बोल के भी प्यासे सामने आयेंगे। ऐसा अन्तिम दृश्य अपने सामने रखकर पुरुषार्थ करो। ऐसा न हो कि दर पर आयी हुई कोई भूखी आत्मा खाली हाथ जाये। साकार में क्या करके दिखाया ?''

अ.बापदादा 17.7.69

''देही-अभिमानी बन उपकार करने से भविष्य 21 जन्मों के लिए पूँजी जमा होती है। देहाभिमान में आकर अपकार करने जो जमा हुआ होता है, वह भी खत्म हो जाता है। ... जो उपकार करना नहीं जानते हैं, वे जरूर अपकार ही करेंगे, आसुरी मत पर।''

सा.बाबा 14.3.08 रिवा.

''स्व-पुरुषार्थ का समय बहुत थोड़ा है। इसलिए अपने जमा के खाते को चेक करो। जमा की तीन विधियां पहले भी बताई हैं ... एक है - स्वयं के पुरुषार्थ से प्रालब्ध का खज़ाना जमा करना, प्राप्तियों का खज़ाना जमा करना। दूसरा है सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना, इसमें सदा शब्द एड करो। इससे पुण्य का खाता जमा होता है ... तीसरा है सदा सेवा में अथक, निस्वार्थ और बड़ी दिल से सेवा करना, इससे दुआयें मिलती हैं।''

अ.बापदादा 15.12.07

''आज सर्व खज़ानों के मालिक अपने चारो ओर के सम्पन्न बच्चों को देख रहे हैं। बाप ने हर एक बच्चे को सर्व खज़ानों का मालिक बनाया है। ऐसा खज़ाना मिला है, जो और कोई दे नहीं सकता। तो हर एक अपने को खज़ानों से सम्पन्न अनुभव करते हो ? सबसे श्रेष्ठ खज़ाना है ज्ञान का खजाना, शक्तियों का खजाना, गुणों का खज़ाना, साथ-साथ बाप और सर्व ब्राह्मण आत्माओं द्वारा दुआओं का खज़ाना।''

अ.बापदादा 15.11.03

''आज अखुट अविनाशी खज़ानों के मालिक बापदादा अपने चारो ओर के सम्पन्न बच्चों का जमा का खाता देख रहे हैं। तीन प्रकार के जमा के खाते देख रहे हैं - 1. अपने पुरुषार्थ द्वारा श्रेष्ठ प्रालब्ध जमा का खाता, 2. सदा सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना - यह सन्तुष्टता द्वारा

दुआओं का खाता और 3. मन्सा, वाचा, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा बेहद के निस्वार्थ सेवा द्वारा पुण्य का खाता। ... तीनों खज़ानों के वृद्धि की विधि है - दृढ़ता।''

अ.बापदादा 30.11.06

''कहाँ-कहाँ पुरुषार्थ अच्छा करते हैं लेकिन पुरुषार्थ अच्छा करने के बाद उसकी प्रालब्ध यहाँ ही भोगने की अच्छा रखते हैं। तो इच्छा भी है और अच्छा भी है। ... अपने पुरुषार्थ की प्रालब्ध को यहाँ ही भोगने की इच्छा से जमा होने में कमी हो जाती है।''

अ.बापदादा 30.11.70

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का स्मरण और मनन-चिन्तन से सम्बन्ध

इस सृष्टि पर ज्ञान सागर परमात्मा का अवतरण होता ही है आत्माओं को सम्पूर्ण-सम्पन्न-सन्तुष्ट और प्रसन्न बनाने के लिए और सारी सृष्टि को सम्पूर्ण और सम्पन्न बनाने के लिए। इसलिए बाबा ने जो ज्ञान धन दिया है, उसका स्मरण और मनन-चिन्तन से ही उसकी धारणा होती है और आत्मा को अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है। जो सदा परमात्म-चिन्तन, ज्ञान-चिन्तन में रहता है, वह अपने को सदा भरपूरता अर्थात् सम्पन्नता का अनुभव करता है और अतीन्द्रिय सुख में रहता है।

''दीवाली पर लक्ष्मी का आवाह्न करते हैं तो कितनी सफाई करते हैं। अभी तो है बेहद की बात। सारी दुनिया की सफाई होनी है। पांच तत्व भी तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाते हैं।''

सा.बाबा 6.5.08 रिवा.

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और सफल करना एवं सफलता पाना

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता हर आत्मा का जीवन का अभीष्ट लक्ष्य है और इस विश्व-नाटक मे कर्म और फल का विधि-विधान अविनाशी नूँधा हुआ है। इसलिए हर आत्मा अपने कर्मानुसार उस लक्ष्य को पाने में सफल होता है। जो आत्मा अपनी शक्तियों और प्राप्तियों को जितना सफल करता है, वह इस लक्ष्य को पाने में उतना ही सफल होता है। तन-मन-धन, मन्सा-वाचा, समय-शक्ति, परमात्मा से प्राप्त ज्ञान-धन, स्वमान-वरदानों आदि-आदि सभी प्राप्तियों और शक्तियों को जो आत्मा जितना सफल करता है, वह आत्मा सम्पूर्णता-

सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता के लक्ष्य को पाने में उतना ही सफल होता है।

''आप सबका लक्ष्य है - बाप ब्रह्मा समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है। तो ब्रह्मा बाप ने सर्व खज़ाने आदि से अन्तिम दिन तक सफल किया, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण देखा। सम्पूर्ण फरिश्ता बन गया। अपनी प्यारी दादी को भी देखा सब सफल किया और औरों को भी सफल करने का सदा उमंग उत्साह बढ़ाया। तो ड्रामानुसार विशेष विश्व-सेवा के अलौकिक पार्ट के निमित्त बनी।''

अ.बापदादा 31.12.07

''आप सबका लक्ष्य है - बाप ब्रह्मा समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है। तो ब्रह्मा बाप ने सर्व खज़ाने आदि से अन्तिम दिन तक सफल किया, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण देखा। सम्पूर्ण फरिश्ता बन गया। अपनी प्यारी दादी को भी देखा सब सफल किया और औरों को भी सफल करने का सदा उमंग उत्साह बढ़ाया। तो ड्रामानुसार विशेष विश्व-सेवा के अलौकिक पार्ट के निमित्त बनी।''

अ.बापदादा 31.12.07

''चेक करो खज़ाने मिले, खजानों से सम्पन्न हुए हैं लेकिन स्व-प्रति वा विश्व के प्रति कितना सफल किया? ... सफल और व्यर्थ का चार्ट रखना। अमृतवेले ही दृढ़ संकल्प करना, स्मृति स्वरूप बनना कि सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। सफलता मेरे गले का हार है। सफलता स्वरूप ही समान बनना है।''

अ.बापदादा 31.12.07

''उम्मीदवार भी हो और हिम्मतवान भी हो, सिर्फ एक बात एड करनी है - सहन-शक्तिवान बनना है। फिर उम्मीदवार से सफलतामूर्त बन जायेंगे। ... सम्पूर्णता के समीपता की निशानी है सफलता। ... प्योरिटी ही संगमयुग की प्रास्पेरिटी है। ... प्योरिटी ही प्रास्पेरिटी है - यह है इस ग्रुप का स्लोगन।''

अ.बापदादा 30.11.70

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और साक्षी स्थिति

जो आत्मा यथार्थ ज्ञान की धारणा और आत्मिक स्वरूप के अभ्यास से साक्षी स्थिति को धारण करती है अर्थात् साक्षी स्थिति में रहती है, वह सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का सहज ही अनुभव करती है। परमात्मा आकर हमको यथार्थ ज्ञान देकर साक्षी भी बनाता है और अपना साथी भी बनाता है। बाप के साथ से आत्मा साक्षी सहज बन जाती हे, जिससे वह जीवन में बाप समान सम्पूर्णता-सम्पन्नता का अनुभव करती है, जिससे उसके जीवन में सन्तुष्टता ओर प्रसन्नता सदा रहती है।

''हिम्मतवान सपूत पात्र बच्चे सदा स्वयं को बाप के साथ हैं और साथी भी हैं। स्व की लगन में सदा बाप का साथ अनुभव करते और सेवा में सदा साथी स्थिति का अनुभव करते हैं। यह साथी और साथ का अनुभव स्वत: ही बाप समान साक्षी अर्थात् न्यारा और प्यारा बना देता है।''

अ.बापदादा 9.1.93

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और ब्राह्मण जीवन

अभी परमपिता परमात्मा ने ब्रह्मा मुख से अपना बनाया है अर्थात् हमको अपनी गोद का बच्चा बनाया है, इसलिए अभी हम ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण हैं। सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता ईश्वरीय वर्सा है, जो अभी इस ब्राह्मण जीवन में ही प्राप्त होता है अर्थात् इसकी सर्वश्रेष्ठ अनुभूति इस ब्राह्मण जीवन में ही होती है। इसलिए इस जीवन को चोटी कहा जाता है। बाबा ने अनेक बार कहा है - जीवन में अगर खुशी नहीं, प्रसन्नता नहीं तो ब्राह्मण जीवन नहीं अर्थात् उस समय हम जैसे कि शूद्र हैं। ईश्वर हमारा बाप है, जो अभी ही हमको मिलता है और जब बाप अभी मिला है तो वर्सा भी अभी ही मिलेगा।

''वतन में आने की दिल तो सभी को होती है लेकिन अपने आप से पूछो ब्राह्मणपन के जो कर्तव्य करने हैं, वे सभी किये हैं। ब्राह्मण जीवन के सर्व कर्तव्य सम्पन्न करने के बाद ही सम्पूर्ण बनेंगे। ... सर्व आत्मायें सुख और शान्ति का अनुभव करना चाहती हैं, ज्यादा सुनना नहीं चाहती हैं। अनुभव कराने के लिए जब स्वयं अनुभव स्वरूप बनेंगे, तब ही सर्वात्माओं को की इच्छा पूर्ण कर सकेंगे।''

अ.बापदादा 21.1.71

''ब्राह्मण जीवन के सर्व कर्तव्य सम्पन्न करने के बाद ही सम्पूर्ण बनेंगे।... अपने ब्राह्मणपन के कर्तव्य को सम्पन्न करने के लिए अपने को सम्पूर्ण बनाओ।... हिम्मते बच्चे मदद दे बाप। ... अब अपने सम्पन्न स्वरूप को अनुभव करने का जिद्द करो।''

अ.बापदादा 21.1.71

''अनेक सुख-शान्ति की भिखारी आत्मायें यह भीख मांगने के लिए आपके सामने आयेंगी। तो ऐसी तड़फती हुई भिखारी प्यासी आत्माओं की प्यास मिटाने के लिए अपने को अतीन्द्रिय सुख वा सर्व शक्तियों से भरपूर किया है, अनुभव करते हो ?''

अ.बापदादा 21.1.71

''सर्व शक्तियों का खजाना, अतीन्द्रिय सुख का खजाना इतना इकट्ठा किया है, जो अपनी स्थिति तो कायम रहे ही लेकिन अन्य आत्माओं को भी सम्पन्न बना सको ? सर्व की झोली भरने वाले दाता के बच्चे हो ना। ... सन्तुष्ट आत्मायें ही अन्य आत्माओं को सन्तुष्ट कर

सकती हैं। अब ऐसी सर्विस करने के लिए अपने को तैयार करो।''

अ.बापदादा 21.1.71

''गाया हुआ है - 'खुशी' सबसे बड़ी खुराक है। खुशी जैसी और कोई खुराक नहीं। ... खुशी है मन की खुराक। मन और बुद्धि सदा शक्तिशाली है तो स्थिति शक्तिशाली होगी। ... सबसे बड़ी खुशी की बात है - बाप ने अपना बना लिया।''

अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 3

'''भाग्यविधाता' बाप बन गया। ऐसा भाग्य सारे कल्प में अभी मिलता है। ... एक जन्म का पुरुषार्थ और अनेक जन्म की प्रालब्ध। तो जन्म-जन्म के लिए इसी एक जन्म में इकट्ठा करना है। अच्छा, सभी सन्तुष्ट हो ना। ब्राह्मण जीवन में अगर सन्तुष्ट नहीं तो कब रहेंगे। अभी ही सन्तुष्टता का मज़ा है। ब्राह्मण जीवन का लक्षण ही है सन्तुष्ट रहना। सन्तुष्ट हैं तो खुश हैं, अगर सन्तुष्ट नहीं तो खुश नहीं।''

अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 3

''जब तक कोई सूक्ष्म वा स्थूल कामना है तब तक सामना करने की शक्ति नहीं आ सकती। कामना सामना करने नहीं देती। इसलिए ब्राह्मणों का अन्तिम सम्पूर्ण स्वरूप क्या गाया जाता है - इच्छ मात्रम् अविद्या। ... जब ऐसी स्थति बनेंगी तब जयजयकार और हाहाकार दोनों साथ-साथ होगा।''

अ.बापदादा 3.12.70

''सभी बातों में फुल, नॉलेजफुल। तो जितना फुल बनते जायेंगे, उतना फीलिंग का फ्लू खत्म होता जायेगा। ... सभी मास्टर सर्वशक्तिमान है क्योंकि सर्वशक्तिमान बाप को सर्व सम्बन्धों से अपना बना लिया है।''

अ.बापदादा 30.11.70

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और ईश्वरीय वर्सा

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और ईश्वरीय प्राप्तियाँ

परमात्मा सदा सम्पूर्ण और सम्पन्न है, वह आकर आत्माओं को भी सम्पूर्ण और सम्पन्न बनाता है। जो आत्मायें उनके डायरेक्ट बच्चे बनते हैं, उनको यह सम्पूर्णता और सम्पन्नता वर्से के रूप में मिल जाती, जिसके फलस्वरूप उनके जीवन में सन्तुष्टता-प्रसन्नता आ जाती है। इस प्रकार हम देखें तो सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता आत्माओं को ईश्वरीय वर्सा है, जो संगमयुग पर परमात्मा आकर देते हैं।।

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता के लिए ईश्वरीय प्राप्तियों का ज्ञान, उनकी अनुभूति होना अति आवश्यक है। परमात्मा पिता से प्राप्त प्राप्तियों के आधार पर ही आत्मा सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता को प्राप्त करती है। ये सब ईश्वरीय प्राप्तियां आत्मा को ईश्वरीय वर्से के रूप में प्राप्त होती हैं।

''निराकार शिवबाबा इस रथ में आकर समझा रहे हैं - बच्चे, अब तुम हमारे बच्चे बने हो। तुमको बहुत खुशी चढ़ी हुई है कि हम बेहद के बाप से इस ब्रह्मा के द्वारा वर्सा ले रहे हैं। ... अभी तुम मीठे बच्चों ने हमारी गोद ली है।'' सा.बाबा 4.6.08 रिवा.

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और निश्चयबुद्धि

निश्चय अर्थात् आत्मा, परमात्मा, ड्रामा, ईश्वरीय परिवार और उसके विधि-विधानों में, साथ ही अपने कर्मों में भी निश्चय होना अति आवश्यक है।

जिस आत्मा को अपने में, परमात्मा में, ड्रामा में और इस दैवी परिवार अर्थात् यज्ञ के विधि-विधानों में निश्चय होगा और अपने कर्मों में निश्चय होगा कि अभी हम जो कर्म कर रहे हैं, वे श्रेष्ठ कर्म हैं और उनके आधार पर हमारा भविष्य अवश्य ही श्रेष्ठ होगा। ऐसी निश्चयबुद्धि आत्मा प्रसन्नता का अनुभव अवश्य करेगी और जो प्रसन्नचित्त रहेगा, वही सम्पूर्णता का यथार्थ रीति अभ्यास कर सकेगा।

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और विघ्न एवं विघ्न-विनाशक स्थिति

इस समय कलियुग का अन्त है, सारी दुनिया तमोप्रधान बन गई है। हर मनुष्य के जीवन में पापाचार, भ्रष्टाचार व्याप्त है, जिससे हर आत्मा दुखी-अशान्त है। ऐसे समय परमात्मा आकर हमको सम्पूर्णता और सम्पन्नता का पाठ पढ़ाते हैं, ज्ञान-यज्ञ की स्थापना करते हैं। तो यज्ञ में या धर्म-स्थापना के कार्य में विघ्न तो आयेंगे ही परन्तु परमात्मा ने हमको उन विघ्नों को पार करके सदा सन्तुष्ट और प्रसन्न रहने का विधि-विधान भी बताया है। जो आत्मायें परमात्मा के बताये गये विधि-विधानों पर चलते हैं, उनके बताये गये नियम-संयम को जीवन में दृढ़ता से अपनाते हैं, वे आने वाले सभी विघ्नों को पार करके विजयी बन जाते हैं, जिससे उनके जीवन में सदा सन्तुष्टता और प्रसन्नता रहती है।

''प्राप्ति तो की लेकिन ऐसी प्राप्ति की जो सर्व तृप्त हो जायें। जितना तृप्त बनेंगे, उतना ही इच्छामात्रम् अविद्या होगी और कामना के बजाये सामना करने की शक्ति आयेगी। ... सदैव यह स्मृति रखना कि मैं विजयी माला का विजयी रतन हूँ। इस स्मृति से कब हार नहीं होगी।''

अ.बापदादा 5.12.70

''विघ्न-विनाशक वही बन सकता है, जो सदा सर्व शक्तियों से सम्पन्न होगा। ... विघ्न-विनाशक के आगे कोई भी विघ्न आ नहीं सकता। ... बाप ने सभी को सर्व शक्तियां दी हैं, तब तो अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान कहलाते हो।''

अ.बापदादा 3.11.92 पार्टी 4

''विघ्न-विनाशक आत्मा सदा ही सर्व शक्तियों से सम्पन्न होती है। ... सदा स्मृति रखो कि विघ्न का काम है आना और हमारा काम है विघ्न-विनाशक बनना। जब नाम है विघ्न-विनाशक तो जब विघ्न आयेगा तब तो विनाश करेंगे ना।''

अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 4

''परमपिता परमात्मा की बहुत महिमा है। वह पतित सृष्टि को पावन बनाते हैं अथवा कौड़ी जैसे भारत को हीरे जैसा सिरताज बनाते हैं। ... भारत डबल सिरताज था, अथाह धन था, हीरे-जवाहरों के महल थे, जो बाद में मुसलमान लूटकर ले गये और मस्जिद-कब्रों आदि में लगाये हैं।''

सा.बाबा 28.5.08 रिवा.

''यह भारत की मातायें शिव शक्ति पाण्डव सेना हैं, जो अपने तन-मन-धन से इस भारत को स्वर्ग बना रहे हैं। ... तुम पावन बनकर औरों को पावन बनाने वाले शिवशक्ति पाण्डव सेना हो। तुम श्रीमत पर भारत का बेड़ा पार करने वाले हो।''

सा.बाबा 28.5.08 रिवा.

''मनुष्य बेहद के बाप और उनकी रचना के आदि-मध्य-अन्त को न जानने के कारण नास्तिक बन गये हैं। ... बरोबर लक्ष्मी-नारायण इस भारत के पहले-पहले मालिक थे। पांच हजार वर्ष की बात है। ... बाप आकर ज्ञान देते हैं, जिससे भारत फिर से सिरताज बनता है।''

सा.बाबा 29.5.08 रिवा.

''सारी सृष्टि की दिल लेने वाला आदि देव दिलवाला शिवबाबा है। ... सारी पतित सृष्टि को पावन बनाना तो बाप का ही काम है। कोई मनुष्य यह कार्य कर न सके। ... शिवबाबा कल्प-कल्प भारत को स्वर्ग का वर्सा देने आते हैं।''

सा.बाबा 29.5.08 रिवा.

प्रश्नावली

Q. सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता वाली आत्मा क्या कर्तव्य है और वह कर्तव्य कब और कैसे सम्पन्न कर सकेगा ?

अपने पास जब खज़ाना जमा होगा तो वह आत्मा राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा से मुक्त होगी और जो स्वयं सम्पन्न होगा, इच्छा-आकांक्षा से मुक्त होगा, वही दूसरी आत्माओं को दे सकेगा, उनको सम्पन्न कर सकेगा। हम दाता के बच्चे हैं तो अन्य आत्माओं को देकर सन्तुष्ट करना हमारा कर्तव्य है।

''सन्तुष्टता का आधार है - बाप द्वारा प्राप्त हुई सर्व प्राप्तियों में भरपूरता अर्थात् सम्पूर्णता। ... सन्तुष्टता की निशानी है प्रसन्नता अर्थात् वह स्वयं भी प्रसन्नचित्त होगी और दूसरे भी प्रसन्न होंगे।'' अ.बापदादा 17.3.91

Q. ईश्वरीय प्राप्तियां कौन-कौन सी हैं, जिनकी प्राप्ति से आत्मा सम्पन्नता का अनुभव करती है ?

ज्ञान-गुण-शक्तियां ईश्वरीय प्राप्तियां हैं, जो बाप समान सम्पूर्ण और सम्पन्न बनने का आधार हैं। सम्पन्नता ही सनतुष्टता का आधार है और सनतुष्टता की निशानी है प्रसन्नता अर्थात् सम्पूर्णता-सम्पन्नता- सन्तुष्टता-प्रसन्नता का विधि-विधान है। ज्ञान-गुण-शक्तियों का केवल ज्ञान लेकिन उनकी धारणा और अनुभव वाली आत्मा सदा ही जीवन में सम्पन्नता और प्रसन्नता का अनुभव करेगी।

''बापदादा ने रिजल्ट चेक की तो - ज्ञान, योग, धारणा, सेवा चारो ही सब्जेक्ट में अनुभव स्वरूप, अनुभव के अथॉरिटी हो, उसकी कमी दिखाई दी। ...अनुभवी मूर्त आत्मा में नॉलेज अर्थात् समझ है कि क्या करना है, क्या नहीं करना है। ... अनुभव की अथॉरिटी सब अथॉरिटी से श्रेष्ठ है।'' अ.बापदादा 2.4.08

Q. सम्पूर्णता से प्रसन्नता या प्रसन्नता से सम्पूर्णता आती है ?

सम्पूर्णता से सम्पन्नता और सम्पन्नता से सन्तुष्टता और सन्तुष्टता से प्रसन्नता का ही विधि-विधान है। जब तक आत्मा सम्पूर्ण नहीं है तो सम्पन्न कैसे हो सकती है और जब सम्पन्नता नहीं तो सन्तुष्टता कैसे हो सकती है और जिसके जीवन में सन्तुष्टता नहीं वह प्रसन्न कैसे रहेगा।

Q. ब्राह्मण जीवन का प्रयोजन क्या है ?

ब्राह्मण जीवन सारे कल्प में सर्वोत्तम जीवन है। ब्राह्मण जीवन का प्रयोजन है जीवन में

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता अर्थात् परमशान्ति, परमानन्द, परमसुख का अनुभव करना और कराना। आत्मिक स्वरूप सर्व गुणों, शक्तियों से सम्पन्न परमनन्दमय है, परमात्मा परमानन्द का सागर है और ये विश्व-नाटक परमानन्दमय और परम सुखमय है, जिसका यथार्थ ज्ञान अभी परमपिता परमात्मा ने हमको दिया है। जो आत्मा इन तीनों के यथार्थ राज़ को समझ लेता है, वह सदा ही अपने सम्पूर्ण स्व-स्वरूप अर्थात् बीजरूप स्थिति में स्थित होकर अपने में सर्व गुणों-शक्तियों की अनुभूति करती है और परमशान्ति, परमानन्द और परमसुख की अनुभूति में रहता है। आवश्यकता है इनके राज़ को समझना और अनुभव करना और उस स्थिति में स्थित होने का सफल अभ्यास करना। इसलिए ही अव्यक्त बापदादा प्राय: मुरली के अन्त में और बीच-बीच में ये ड्रिल कराते हैं और उस अनुभव को स्थाई बनाने के लिए सदा अभ्यास करने की प्रेरणा देते हैं। जो आत्मा इस सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता के अनुभव में रहती है, वह दूसरों को भी अवश्य वह रास्ता बताने का पुरुषार्थ करती है।

''सदा स्मृति में रहे कि हम सुखदाता के बच्चे मास्टर सुखदाता हैं।... जो बाप के पास है, वह बच्चों का है। भाग्य आपका वर्सा है। ... ऐसा भाग्य सारे कल्प में अभी मिलता है। जितना औरों को भाग्यवान बनायेंगे अर्थात् भाग्य बांटेंगे, उतना भाग्य बढ़ता जायेगा।''

अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 3

Q. ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य क्या है और जीवन की सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति क्या है?

बाप समान सम्पूर्ण और सम्पन्न बनकर इस विश्व-नाटक का परमानन्द अनुभव करना और कराना ही ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है। आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, जो आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इस विश्व-नाटक को देखती है, इसमें पार्ट बजाती है, वह इसका परमानन्द अनुभव करती है। ये परमानन्द की अनुभूति संगमयुग की परम-प्राप्ति है। इसके लिए ही अव्यक्त बापदादा हमको बार-बार कहते हैं कि तुम यह प्रैक्टिस करो कि संकल्प करते ही अपने आत्मिक स्वरूप अर्थात् बिन्दुरूप अर्थात् निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति में स्थित हो जायें। संकल्प करते ही अपने बिन्दुरूप में स्थित हो जाना, निर्संकल्प स्थिति में स्थित हो जाना ही हमारी सम्पूर्णता और सम्पन्नता की स्थिति की कसौटी है और बाप समान स्थिति है। ऐसी स्थिति वाला सदा सन्तुष्टता और प्रसन्नता की अनुभूति में रहेगा और ये सन्तुष्टता और प्रसन्नता उसके चलन और चेहरे से प्रगट होगी।

सम्पूर्णता और सम्पन्नता को प्राप्त हुई आत्मा के जीवन में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-

अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा आदि बातों का नाम-निशान नहीं होगा। उसकी मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, लाभ-हानि, आदि में समान अर्थात् एकरस स्थिति होगी।

विचार करो परमपिता परमात्मा ने तुमको क्या नहीं दिया है! परमात्मा से प्राप्त ज्ञान, गुण, शक्तियाँ ही जीवन की सर्वोत्तम प्राप्ति है और सर्व भौतिक प्राप्तियों का आधार हैं। जो आत्मा इनसे सम्पन्न होगा, वह जीवन में सदा सन्तुष्टता का अनुभव करेगा और जो सन्तुष्ट होगा, वह सदा प्रसन्न चित्त होगा ही। सम्पूर्णता को प्राप्त आत्मा सदा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होगी, वह सदा इन प्राप्तियों की अनुभूति करेगी और दूसरों को भी आत्मिक स्वरूप में स्थित कर जीवन में इस सच्ची प्राप्ति की अनुभूति करायेगी। जैसे साकार ब्रह्मा बाबा के जीवन से होती थी।

Q. सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की पहचान क्या है?

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता को प्राप्त आत्मा संकल्प करते ही अपने मूल स्वरूप में अर्थात् निर्संकल्प स्थिति में अर्थात् बिन्दुरूप स्थिति अर्थात बीजरूप स्थिति में स्थित हो जायेगी। इस स्थिति को प्राप्त हुई आत्मा जिस समय जिस स्थिति में स्थित होना चाहे, सहज स्थित हो सकती है। उसके जीवन में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा का नाम-निशान नहीं होगा; उसको मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, लाभ-हानि, जय-पराजय प्रभावित नहीं करेंगे, जिससे वह सदा समान स्थिति में स्थित साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखेगी।

Q. क्या अन्य योनि की आत्मायें भी सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता को प्राप्त करती हैं?

विश्व नाटक के विधि-विधान अनुसार सर्व आत्मायें इस स्थिति को अपने समय अनुसार अवश्य प्राप्त करती हैं और सम्पूर्णता को प्राप्त करके ही सभी आत्मायें परमधाम घर में जाती हैं क्योंकि परमधाम सर्वात्माओं का घर है।

Q. क्या अन्य योनि की आत्मायें भी परमात्मा को याद करती हैं या करती होंगी?

हर योनि की आत्मा किसी न किसी रूप में परमात्मा को अवश्य याद करती है परन्तु याद करने का विधि-विधान अपना-अपना है क्योंकि प्रकृति के नियमानुसार हर तत्व में अपने मूल तत्व का आकर्षण होता ही है अर्थात् वह अपने मूल तत्व की ओर आकर्षित होता है। इसलिए सभी चेतन आत्मायें परमात्मा को अवश्य याद करती होंगी क्योंकि आत्माओं का मूल परमात्मा है और वह कल्पान्त में आकर सर्वात्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति देता है। परमात्मा के महावाक्य हैं - आत्मायें तो क्या मैं तत्वों को भी पावन बनाता हूँ। वैसे तो देखा जाये तो सारे

विश्व की मनुष्यात्मायें भी डायरेक्ट में परमात्मा के नहीं बनते हैं, उनके सम्बन्ध-सम्पर्क में नहीं आते हैं, फिर भी उनको याद करते हैं।

Q. आत्माओं की सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और समय की सम्पूर्णता अर्थात् सम्पन्नता में क्या सामन्जस्य है ?

बाबा ने कहा है - जब तुम आत्मायें पावन बन जाओगी तो तुम्हारे लिए प्रकृति भी पावन चाहिए अर्थात् ये सृष्टि भी पावन चाहिए। बाबा ने कहा है - तुम्हारी सम्पूर्णता ही समय को सम्पूर्णता को समीप लायेगी। अपने पुरुषार्थ से सम्पूर्ण बनने वाले ही सम्पूर्ण सतोप्रधान प्रकृति का सुख अनुभव करते हैं, समय के आधार पर सम्पूर्ण बनने वाले सम्पूर्ण सतोप्रधान प्रकृति का सुख अनुभव नहीं कर सकते हैं। भूतकाल के चिन्तन और भविष्य की चिन्ता न कर वर्तमान की प्राप्तियों देखकर सम्पूर्णता के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ करना ही हमारा कर्तव्य है। वर्तमान ही हमारे हाथों में है। ये समय परमानन्द का है और आत्मिक स्वरूप भी परमानन्दमय है, जिसका यथार्थ रीति से अनुभव अभी ही होता है, अभी नहीं तो कभी नहीं।

Q. सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और एवर-रेडी स्थिति में क्या सामन्जस्य ?

जो आत्मा सम्पूर्ण अर्थात् कर्मातीत, उसमें वह शक्ति होती है, जो वह किसी भी स्थिति का सामना करने के लिए समर्थ होती है, इसलिए वह कभी किसी कार्य के लिए सोचता नहीं है। उसकी बुद्धि में विश्व-नाटक का ज्ञान स्पष्ट रहता है, इसलिए वह हर दृष्य को साक्षी होकर देखती है। जो एवर-रेडी का संकल्प रखता है, वह सम्पूर्णता का अवश्य प्राप्त करता है और वह सदा सम्पन्न, सन्तुष्ट और प्रसन्न रहता है।

Q. जीवन के सब प्रश्नों का उत्तर क्या है, जिससे सहज ही इस पढ़ाई में पास हो जायें ?

सम्पूर्ण स्थिति को पाये ब्रह्मा बाप को देखना और उनको फॉलो करना।

Q. क्या सर्वात्मायें बाप समान सम्पन्न बनेंगी ?

हाँ, अन्त में परमधाम जाने के समय हर आत्मा आत्मिक स्थिति में स्थित होगी और बाप समान सम्पूर्ण पावन होगी। उस समय हर आत्मा की इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति होगी, इसलिए हर आत्मा बाप समान सम्पन्न होगी। सम्पूर्णता ही सम्पन्नता का आधार है और जो सम्पन्न होगा, वह सन्तुष्ट और प्रसन्न अवश्य होगा क्योंकि सम्पन्नता ही सन्तुष्टता और प्रसन्नता की जननी है।

साराँश

सम्पूर्णता और सम्पन्नता का ये अर्थ नहीं कि किसके पास बहुत साधन-सम्पत्ति है तो वह सम्पन्न है। जिसके जीवन में सम्पूर्णता और सम्पन्नता होगी, उसके जीवन में सन्तुष्टता और प्रसन्नता अवश्य होगी। यदि सन्तुष्टता और प्रसन्नता नहीं है तो अवश्य ही सम्पूर्णता और सम्पन्नता की कमी है। साधन-सम्पत्ति को सम्पूर्णता और सम्पन्नता का एक अंगमात्र है। बाबा ने कहा है और अनुभव भी ऐसा ही है कि जीवन की सम्पूर्णता और सम्पन्नता के लिए तन-मन-धन-जन, स्थूल और सूक्ष्म सब प्रकार की भरपूर प्राप्तियों की आवश्यक हैं। जब ये सब प्राप्तियां होंगी होंगी तब ही आत्मा सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव करेगी। जब मनुष्य की इच्छाओं और प्राप्तियों में पूर्ण सन्तुलन होगा तब ही आत्मा जीवन में सच्ची प्रसन्नता का अनुभव करेगी। यदि जीवन में मुक्ति की भी इच्छा है तो भी सम्पूर्णता नहीं कही जा सकती। सम्पूर्णता अर्थात् इच्छामात्रम् अविद्या।

ऊपर लिखी सर्व बातों पर विचार करने के बाद प्रश्न उठना स्वभाविक है कि क्या अभी हम सम्पूर्ण बने हैं? यदि अभी सम्पूर्ण नहीं बनें हैं तो सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव कैसे कर सकते हैं? विचारणीय है कि हम देह नहीं, आत्मा हैं और हमारा अनादि स्वरूप अर्थात् आत्मिक स्वरूप सम्पूर्ण ही है और आदि स्वरूप भी सम्पूर्ण-सम्पन्न-सन्तुष्ट-प्रसन्नता से परिपूर्ण है। बाबा ने हमको जो ये ज्ञान दिया है, उस ज्ञान को समझकर हम आत्मा जब अपने अनादि-आदि स्वरूप में स्थित होते हैं तो अवश्य ही सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। बाबा ने अपनी शक्ति से हमको इसका अनुभव भी कराया है और ज्ञान से भी हमने इसकी सत्यता को अनुभव किया है। अब इस अनुभव को चिर-स्थाई बनाने के लिए बाबा हमको पुरुषार्थ करा रहे हैं। इसके लिए ही अव्यक्त बापदादा हमको मुरली के अन्त में और बीच-बीच में इसका अभ्यास कराते हैं और अपने कार्य व्यवहार में भी इसका अनुभव करने, इस अनुभव को बढ़ाने के लिए श्रीमत भी देते हैं और प्रेरणा भी देते हैं। इस सत्य को ही ध्यान में रखकर बाबा हमको बार-बार कहते हैं कि तुम्हारा शरीर भल चला जाये परन्तु तुम्हारी खुशी न जाये क्योंकि खुशी तुम्हारा ईश्वरीय वर्सा है अर्थात् आत्मा का निजी संस्कार है। तो बाबा के इन महावाक्यों में सत्यता तो अवश्य होगी। इस सन्दर्भ में बाबा ने ये भी कहा है - तुम अपने बीजरूप स्वरूप में अर्थात् स्वीट साइलेन्स की स्थिति में अर्थात् अपने ज्वाला स्वरूप स्थिति में स्थित रहो। ये सब शब्द एक ही आत्मिक स्वरूप के पर्यावाची हैं। इस स्थिति से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे, तुम पावन बनेंगे और तुम्हारा आत्मिक शक्ति

का खाता सबसे अधिक इस स्थिति में ही जमा होगा। जितना परमात्मा पिता द्वारा दिये गये ज्ञान, गुण, शक्तियों और अनुभवों के स्मृति-स्वरूप बनेंगे, उतना ही ये सम्पूर्णता का अनुभव बढ़ता रहेगा और जितना ये सम्पूर्णता का अनुभव बढ़ेगा, उतना ही जीवन में प्रसन्नता का अनुभव होगा। इन दोनों का अति घनिष्ट सम्बन्ध है।

सार रूप में विचार करें तो प्रसन्नता का आधार सन्तुष्टता है, सन्तुष्टता का आधार सम्पन्नता है और सम्पन्नता का मूल सम्पूर्णता है अर्थात् सम्पूर्णता को प्राप्त या सम्पूर्णता की स्थिति में स्थित आत्मा सदा ही सम्पन्नता का अनुभव करती है और ये अनुभव कराना ही परमात्मा पिता का कार्य है, जो अभी कर रहा है। जैसे बीज में वृक्ष के विकास की सर्व शक्तियाँ समाई हुई होती है, ऐसे ही सम्पूर्णता अर्थात् अपने मूल स्वरूप में स्थित आत्मा को सर्वशक्तियों का अनुभव होता है। वर्तमान समय अव्यक्त बापदादा यादप्यार देने से पहले और मुरली के बीच-बीच में भी अपने इस मूल स्वरूप का अनुभव कराते हैं और उसको स्थाई बनाने के लिए कार्य करते भी करते रहने की प्रेरणा देते हैं, फरमान देते हैं, राय देते हैं।

सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता पर विचार करें तो अनुभव होता है कि प्रसन्नता हर प्राणी की आन्तरिक चाहना है परन्तु प्रसन्नता का आधार सम्पूर्णता, सम्पन्नता और सन्तुष्टता है।

विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार सम्पूर्णता और सम्पन्नता हर आत्मा को प्राप्त होती है परन्तु एक होती है चढ़ती कला की सम्पूर्णता-सम्पन्नता, दूसरी होती है उतरती कला की सम्पूर्णता-सम्पन्नता और तीसरी स्थिर सम्पूर्णता-सम्पन्नता। सतयुग-त्रेता और सारे कल्प में आत्मायें सम्पूर्णता-सम्पन्नता का अनुभव करती हैं परन्तु वह अनुभव उतरती कला का होता है। संगमयुग पर आत्मा को सम्पूर्णता-सम्पन्नता का जो अनुभव होता है, वह है चढ़ती कला का अनुभव। तीसरी है स्थिर सम्पूर्णता-सम्पन्नता, जो आत्मा की परमधाम में होती है परन्तु उस समय और वहाँ आत्मा को उसका कोई अनुभव नहीं होता है क्योंकि आत्मा को कोई जो भी अनुभव होता है, वह देह के साथ ही होता है। बिना देह के आत्मा को कोई अनुभव नहीं होता है।

सम्पूर्ण बनने के लिए फॉलो उसे कर सकते हैं, जो सम्पूर्ण बन गया है। शिवबाबा तो सदा सम्पूर्ण है, ब्रह्मा बाबा ने पुरुषार्थ सम्पूर्णता को पाया है। इसलिए सम्पूर्णता को प्राप्त करना है तो इन दोनों को फॉलो कर सम्पूर्णता को पाना है।

सम्पूर्णता की कसौटी है प्रसन्नता। प्रसन्नता बाहर की नहीं लेकिन अन्दर की

प्रसन्नता। सच्ची प्रसन्नता स्वयं को भी प्रसन्नता का अनुभव कराती है तो अन्यों को भी प्रसन्नता का अनुभव कराती है।

सच्चा पुरुषार्थ वह है, जो दूसरों को दिखाने या सन्तुष्ट करने के लिए नहीं लेकिन स्वयं को भी सन्तुष्ट करे और दूसरों को भी सन्तुष्ट करे। जो दूसरों को दिखाने या सन्तुष्ट करने के लिए पुरुषार्थ करते हैं, वे स्वयं को धोखा देते हैं, स्वयं को ठगते हैं।

''आज की सभी में हर एक बच्चा हाइएस्ट और अविनाशी खज़ानों से रिचेस्ट है।... आप निश्चय और नशे से कहते हो कि हम अनेक जन्म रिचेस्ट रहेंगे क्योंकि आप सभी अविनाशी खज़ानों से सम्पन्न हो।''

अ.बापदादा 30.11.99

'''कदम में पदम' गाया हुआ है। ... एक दिन में बाप द्वारा, बाप की नॉलेज द्वारा, याद द्वारा हर कदम में पदम जमा होते हैं। ... सिवाए आपके इतना जमा कोई कर नहीं सकता। इसलिए बाप कहते हैं - इस श्रेष्ठ स्मृति में रहो कि हम आत्माओं का भाग्य परम-आत्मा द्वारा श्रेष्ठ बना है।''

अ.बापदादा 30.11.99

सम्पूर्णता अर्थात् हम आत्मायें सम्पूर्ण-सम्पन्न-सन्तुष्ट-प्रसन्न बनें, सतयुग की प्रथम जनसंख्या अर्थात् कम से कम 9,16,108 सम्पूर्ण-सम्पन्न-सन्तुष्ट-प्रसन्न बनें और सारी जड़ प्रकृति भी सम्पूर्ण बनें तब विनाश हो। प्रकृति तो विनाश की उथल-पाथल में सम्पूर्ण बनेंगी परन्तु उसका उपभोग करने वाले और उसके निमित्त बनने वाले कम से कम 9,16,108 तो अवश्य ही सम्पूर्ण-सम्पन्न-सन्तुष्ट-प्रसन्न बनने चाहिए।

विविध ईश्वरीय महावाक्य

''परमपिता परमात्मा आकर तुमको स्वदर्शन चक्रधारी बनाते हैं। यह नई-नई बातें हैं, हर एक बात धारण करने लायक है। धारणा होने से खुशी और नशा रहता है। ... ऐसे नहीं कि सभी धारण कर ज्ञान के उस नशे में रहते हैं। सभी नम्बरवार हैं।''

सा.बाबा 7.6.08 रिवा.

बिन्दु रूप अर्थात् बीजरूप अवस्था भरपूर अवस्था है, सदा सम्पन्न स्थिति हैं। बिन्दुरूप में स्थित आत्मा भरपूर होने के कारण सदा सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव करती है।

''जब बिन्दू रूप में बैठने का अभ्यास करेंगे तब ही व्यक्त से न्यारे होकर अव्यक्त स्थिति में रह सकेंगे। ... ऐसे ही अभ्यास को बढ़ाते जाओगे तो एक सेकेण्ड तो क्या कितने ही घण्टों इसी अवस्था में स्थित होकर इस अवस्था का रस ले सकते हो।''

अ.बापदादा 24.7.69

''बिन्दु होकर बैठना कोई जड़ अवस्था नहीं है। जैसे बीज में सारा पेड़ समाया हुआ होता है, वैसे ही मुझ आत्मा में बाप की याद समाई होगी। ऐसे होकर बैठने से सब रसनायें आयेंगी। ... अपने को आत्मा समझकर फिर शरीर में आकर कर्म भी करना है परन्तु कर्म करते हुए भी न्यारा और प्यारा होकर रहना है।''

अ.बापदादा 24.7.69

यदि हम अपने स्वभाव-संस्कार के वश नहीं हैं तो कब दूसरे का स्वभाव-संस्कार हमारे ऊपर वार नहीं कर सकता है, हमको प्रभावित नहीं कर सकता है। ... अगर पुराना कोई संस्कार होगा तो बाबा की याद रह नहीं सकती।

दादी जानकी 12.06.08 ओम् शान्ति भवन

ज्ञान सम्पन्न होंगे तो ही योग अच्छा लगेगा। यदि थोड़ी भी कमी होगी तो योग अच्छा नहीं लगेगा। ... सुख में भी सम्पन्न हों। यदि थोड़ा भी सुख में सम्पन्न नहीं होंगे तो ही आवेश आता है।

दादी जानकी 12.06.08

अमृत-धारा

इस विश्व-नाटक का यह अटल सत्य है कि जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता, परन्तु जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियाँ, सर्व सुख स्वत: होते हैं, इच्छामात्रम् अविद्या होती है; सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है; ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है; राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता, शुभाशुभ की आशंका जनित व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ चिन्तन का नाम-निशान नहीं होता है; मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, सुख-दुख, प्राप्ति-अप्राप्ति, यश-अपयश, अपने-पराये में समान दृष्टि और स्थिति होती है। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जाग्रत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, इसलिए सदा निर्संकल्प और निर्विकल्प होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व आत्माओं की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना होती है।

यह सृष्टि एक अनादि-अविनाशी स्वचालित नाटक है, जिसमें सभी आत्मायें पार्टधारी हैं, इसमें न कोई अपना है और न कोई पराया है; न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है; पार्ट अनुसार जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा; न कोई हमको कुछ दे सकता है और न हमारा कोई कुछ ले सकता है; न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है; हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं। इस विश्व-नाटक में जो कुछ मिला है, वह केवल पार्ट बजाने के लिए मिला है, उसको अपना समझ लेना एक भ्रान्ति है, जिसका आत्मा को पश्चाताप करना ही होता है।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य - बच्चे, तुम परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति, परम-शक्ति का अनुभव करो; बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और विश्व-नाटक की यथार्थता को जान साक्षी होकर इसे देखो और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए संगमयुगी ईश्वरीय प्राप्तियों और अनुभूतियों में रमण करते हुए परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है। इस विश्व में हर आत्मा देह सहित सर्व साधनो ट्रस्टी मात्र ही है।

जब इस सत्य पर दृढ़ निश्चय होगा और सतत् अभ्यास द्वारा सहज स्थिति होगी तब ही हम अपनी अन्तिम मन्जिल सुखमय जीवन और सुखद मृत्यु को सहज प्राप्त कर सकेंगे अर्थात् राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति से मुक्त होंगे। यही जीवन की परम-प्राप्ति, परमात्मा का परम-वरदान है, इस ब्राह्मण जीवन का परम-पुरुषार्थ और इस जीवन का परम-कर्तव्य है।

''जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है। ... किसी भी कारण से दुख का ज़रा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है।''

अ.बापदादा 14.11.87

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत - 307501
राजस्थान, भारत
मोबाईल: 9414 15 1879, 9414 00 3497,
9414 08 2607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org